जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर

Rashtradoot

फोन:- 2418945 फैक्स:- 0294-2410146 वर्ष: 31 संख्या: 244 प्रभात उदयपुर, रविवार 7 जुलाई, 2024 आर.जे. 7202 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

काफी रोचक रहेगा जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव इस बार

भाजपा अपने घोषणा पत्र में वादा कर रही है कि, पाकिस्तान से पी.ओ.के. (पाक अधिकृत कश्मीर) वापस लेगी

- श्रीनंद झा -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जुलाई। जम्मू व कश्मीर के आगामी विधान सभा चुनावों में भाजपा अपने चुनावी घोषणापत्र में पाकिस्तान के कब्जे वाले भाग "पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर" को "वापस अपने कब्जे" में लेने का वादा शामिल कर सकती है।

केन्द्र सरकार को लगता है सुप्रीम कोर्ट द्वारा निर्धारित 30 सितम्बर की मियाद तक देश के उत्तरी राज्यों में चुनाव कराने के आदेश का सम्मान करने को तैयार है। पिछले साल 11 दिसम्बर को सुप्रीम कोर्ट ने देश के चुनाव को 30 सितम्बर 2024 तक चुनाव कराने का निर्देश दिया था। उम्मीद की जाती है कि चुनाव आयोग वर्तमान में चल रही अमरनाथ यात्रा के 19 अगस्त को समाप्त होने के बाद चुनावों की तारीखों का ऐलान करेगा।

कुछ समय पहले एक साक्षात्कार गृहमंत्री अमित शाह ने 30 सितम्बर तक इस वर्ष वादा किया था और चुनाव कराने का और इसके बाद राज्य का दर्जा बहाल करने का वादा किया था। वर्ष

- लग रहा है कि, भाजपा गंभीर है कि, सुप्रीम कोर्ट के आदेश की अनुपालना में 30 सितम्बर से पहले जे. एण्ड के. में विधानसभा चुनाव संपूर्ण हो जायें।
- ऐसा लग रहा है कि, 19 अगस्त को अमरनाथ यात्रा पूरी हो जाने के बाद, चुनाव का कार्यक्रम घोषित कर दिया जायेगा। इस बार जे. एण्ड के. विधानसभा की सीटें बढ़ाकर 114 कर दी गईं, इनमें 24 सीटें पी.ओ.के. (पाक अधिकृत कश्मीर) में हैं।
- चुनाव की तैयारी में जे. एण्ड के. के भाजपा के प्रभारी किशन रेड्डी और तरूण चुग ने रणनीति तैयार करने के लिये प्रदेशाध्यक्ष से मंत्रणा शुरु कर दी है तथा नड्डा भी श्रीनगर जा रहे हैं, प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक में भाग लेने।
- पी.डी.पी. की महबूबा मुफ्ती की हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव में अनंतनाग-रजौरी में तथा उमर अब्बदुल्लाह की अपनी लोकसभा सीट पर पराजय से भाजपा काफी उत्साहित है।

2019 में, जम्मू व कश्मीर को दो भागों में बांट दिया गया था और इसको केन्द्र शासित प्रदेश बना दिया था। अभी हाल ही में भाजपा की तरफ से जम्मू व कश्मीर में राजनीतिक गतिविधियों को तीव्र गति से बढ़ाया गया है। पार्टी के प्रदेश चुनाव प्रभारी जी. किशन रेड्डी व प्रभारी तरुण चुघ ने हाल ही में जम्मू में राज्य के भाजपा नेताओं के साथ चुनावी रणनीति को लेकर बैठक की थी।

इस बीच, भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा शनिवार को जम्मू के दौरे पर गए, जहां वे प्रदेश भाजपा की कार्यकारिणी समिति की बैठक को सम्बोधित करेंगे।

भाजपा जम्मू व कश्मीर में चुनावों से पूर्व कोई गठबंधन किए बगैर विधानसभा की 90 सीटों पर अपने दम पर अकेले चुनाव लड़ने की योजना बना रही है परन्तु संभावना है कि चुनावों के पश्चात "समान विचारधारा वाली पार्टियों" के साथ गठबंधन अस्तित्व में आ सकता है।

इस सप्ताह के पूर्वार्ध में, भाजपा के वरिष्ठ नेता जे.पी.नड्डा व अमित शाह ने प्रदेश इकाई के नेताओं के साथ पार्टी की चुनावी रणनीति पर चर्चा की थी और इसके साथ ही उन्हें चुनावों के लिए "तैयार रहने" का निर्देश दिया था। संयोगवश, राज्य की विधानसभा में सीटों की संख्या बढ़कर 114 हो गई है इनमें से 24 सीटें पाकिस्तान अधिकृत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

केन्द्रीय बजट 23 जुलाई को पेश होगा

नई दिल्ली, 6 जुलाई। वित्त वर्ष 2024-25 के लिए केंद्रीय बजट 23 जुलाई को लोकसभा में पेश किया जाएगा। वहीं संसद का बजट सत्र 22 जुलाई से शुरू होकर 12 अगस्त के बीच आयोजित किया जाएगा। तारीखों की घोषणा संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने की।

रिजिजू ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, भारत की माननीय राष्ट्रपति ने

- केन्द्रीय मंत्री किरण रिजिजू ने एक्स पर एक पोस्ट के जरिये बताया कि बजट सत्र 22 जुलाई से शुरू होकर 12 अगस्त के बीच आयोजित होगा।

भारत सरकार की सिफारिश पर बजट सत्र, 2024 के लिए संसद के दोनों सदनों को 22 जुलाई, 2024 से 12 अगस्त, 2024 तक बुलाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का पूर्ण बजट पेश करेंगी। उन्होंने 1 फरवरी को संसद में अंतरिम बजट पेश किया गया था। लगातार दूसरे कार्यकाल के लिए केंद्रीय वित्त मंत्री के रूप में नियुक्त की गईं सीतारमण लगातार सात केंद्रीय बजट पेश करने वाली पहली शख्सियत बन जाएंगी। वह मोरारजी देसाई को पीछे छोड़ देंगी जिन्होंने लगातार छह बजट पेश किए थे। बता दें कि आम चुनाव 2024 के बाद 24 जून से संसद का

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राज्यपाल व विधानसभा स्पीकर के बीच अहम् की लड़ाई हास्यास्पद स्थिति तक पहुंची

उपचुनाव जीतकर आए दो नये विधायकों को शपथ कौन दिलायेगा, इसका हल संविधान तथा विधानसभा की परम्पराओं के बीच लटकता रहा

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जुलाई। पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (टी.एम.सी.) और राज्यपाल सी.वी. आनंद बोस के बीच चल रहा विवाद टी.एम.सी. के दो और विधायकों के शपथ ग्रहण के बाद आज और गहरा गया। राज्य विधानसभा के स्पीकर बिमान बनर्जी द्वारा सयंतिका बनर्जी और रेवात हुसैन सरकार को विधायक पद की शपथ दिलाने के बाद राज्यपाल ने सत्तारूढ़ पार्टी की आलोचना की।

सयंतिका बनर्जी और सरकार क्रमशः बड़ानगर और भगवानगोला निर्वाचन निर्वाचन क्षेत्रों से उपचुनाव जीते थे। इन उपचुनावों के नतीजे गत 5 जून को घोषित हुए थे। इनका शपथ ग्रहण तभी से लम्बित था, लेकिन सत्तारूढ़ तृणमूल और राज्यपाल कार्यालय के कारण इस पर सभी का फोकस था। स्पीकर बिमान बनर्जी ने अन्ततः उन्हें शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण समारोह के बाद तृणमूल के

- मतगणना के बाद, रिज़ल्ट घोषित हो गया था, पर, राज्यपाल ने व्यवस्था दी कि दोनों नये विधायक उनके निवास पर आकर शपथ ग्रहण करें तथा शपथ दिलाने की जिम्मेवारी राज्यपाल ने डिप्टी स्पीकर को दी।
- विधानसभाध्यक्ष ने राज्यपाल को नीचा दिखाने की दृष्टि से विधानसभा का विशेष सत्र आहूत कर स्वयं नवनिर्वाचित विधायकों को शपथ दिला दी।
- विधानसभाध्यक्ष ने दलील दी कि, विधानसभा केवल रूल्स से ही नहीं, संविधान के अनुसार चलती है।
- चर्चा है कि, शायद मामला सुप्रीम कोर्ट तक जाये।

विधायकों ने सदन में "जय बांग्ला" के नारे लगाए।

तथापि, उसके बाद राज्यपाल बोस ने कहा कि राज्यपाल के दफ्तर द्वारा उनके अधीनस्थ आशीष बनर्जी की नियुक्ति किए जाने के बावजूद स्पीकर ने शपथ दिलवाकर संवैधानिक प्रक्रिया का उल्लंघन किया है। फिर भी, आशीष बनर्जी ने यह उल्लेख कर ऐसा करने से इंकार किया कि स्पीकर द्वारा शपथ दिलाये जाने के पूर्व उदाहरण मौजूद हैं।

बोस ने कहा है कि "स्पीकर द्वारा दो नवनिर्वाचित विधायकों को शपथ दिलाये जाने से हुई संवैधानिक अनीति को लेकर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को एक रिपोर्ट भेजी जाएगी।' बोस ने सोशल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अल्पसंख्यक विद्यार्थियों को विदेश पढ़ने भेजेगी तेलंगाना सरकार

मुख्यमंत्री रैवन्त रेड्डी ने अल्पसंख्यकों के लिए एक कल्याणकारी योजना घोषित की है

- लक्ष्मण वैंकट कुची -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जुलाई। तेलंगाना में रेवन्त रेड्डी के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार अल्पसंख्यकों के लिये एक रूटीन कल्याणकारी योजना लेकर आई है जिसे लेकर विपक्षी भाजपा इसे "अल्पसंख्यक तुष्टीकरण" बताते हुये, जबरदस्त प्रहार कर सकती है। राज्य सरकार ने मुख्यमंत्री की "ओवरसीज स्कॉलरशिप स्कीम" के तहत, अल्पसंख्यक विद्यार्थियों से विदेश में अध्ययन करने में सहयोग/सहायता के लिये आवेदन पत्र मांगे हैं। यह योजना के चन्द्रशेखर राव के नेतृत्व वाली तेलंगाना राष्ट्र समिति सरकार ने 2015 में आरम्भ की थी।

19 मई, 2015 को राज्य सरकार ने एक विस्तृत गवर्नमैंट ऑर्डर एमएस नं. 24 के तहत यह योजना शुरू की थी। इसका उद्देश्य विदेशों में उच्च अध्ययन के लिये अल्पसंख्यक विद्यार्थियों को सहयोग देना था। यह योजना अमेरिका, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, कैनाडा, सिंगापुर,

- यह योजना मई 2015 में तात्कालीन मुख्यमंत्री के. चन्द्रशेखर राव ने घोषित की थी जिसके तहत अल्पसंख्यकों को विदेशों में पढ़ने के लिए 20 लाख रूपए तक की सहायता दी जाती है।
- राज्य सरकार ने कहा है कि, छात्रवृत्ति के लिए 8 जुलाई से 7 अगस्त तक आवेदन किया जा सकेगा।
- राज्य सरकार के इस फैसले ने भाजपा को कांग्रेस पर "मुस्लिम तुष्टीकरण" का आरोप लगाने का मौका दे दिया है।

जर्मनी, दक्षिण कोरिया, जापान, फ्रांस तथा न्यूजीलैंड के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में पोस्ट ग्रेजुएट तथा पी.एचडी. कोर्स करने में पात्र अल्पसंख्यक विद्यार्थियों की मदद करती है। इस योजना के अन्तर्गत चयनित उम्मीदवारों को 20 लाख रुपए तक की छात्रवृत्ति या वास्तविक ट्यूशन फीस, जो भी कम हो, प्रदान किए जाते हैं।

राज्य सरकार ने अधिसूचना जारी की है कि 'स्प्रिंग ऑफ 2024' के लिये आवेदन पत्र स्वीकार किए जायेंगे। अधिसूचना के अनुसार आवेदन खिड़की 8 जुलाई से 7 अगस्त तक खुली रहेगी तथा जिन पात्र विद्यार्थियों ने 1 जनवरी से 31 जुलाई के बीच प्रवेश सुनिश्चित कर लिया है, उन्हें आवेदन करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है।

वस्तुतः राज्य सरकार केवल अल्पसंख्यक समुदाय के विद्यार्थियों की ही मदद नहीं कर रही है, बल्कि विदेश

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अमेरिका में आज़ादी के जश्न में गोलीबारी, 33 मरे

कैलिफॉर्निया, 6 जुलाई। अमेरिका में हर साल की तरह इस बार भी 4 जुलाई को लोगों ने अपने परिवार और दोस्तों के साथ आजादी का जश्न मनाया। इस दौरान देश के विभिन्न हिस्सों में गोलीबारी और हिंसा की घटनाओं में 33 लोगों की मौत हो गई। सबसे ज्यादा 11 लोग शिकागो में मारे गए।

- अमेरिका में चार जुलाई को आयोजित "इंडिपैंडैंस डे" समारोहों में देश भर में कई जगहों पर नागरिको द्वारा गोलियां चलाने की घटनाएं सामने आईं।

शिकागो सनटाइम्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक, शिकागो में गोलीबारी में 11 लोग मारे गए और 55 अन्य घायल हो गए। इसमें दो महिलाएं और एक 8 वर्षीय लड़का शामिल है। उधर, कैलिफोर्निया के हंटिंगटन बीच में स्वतंत्रता दिवस पर आतिशबाजी शो खत्म होने के दो घंटे बाद एक हमले में दो लोग मारे गए। उधर, क्लीवलैंड में एक 10 वर्षीय लड़की की हत्या कर दी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

तेलंगाना में रैवन्त रेड्डी ने के.सी.आर. को दिखाया "जैसी करनी वैसी भरनी"

तेलंगाना में पूर्व मुख्यमंत्री के.सी.आर. ने कांग्रेस के साथ जो किया अब रैवन्त रेड्डी बी.आर.एस. के साथ वही कर रहे हैं

- लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जुलाई। जानी-मानी कहावत है जैसी करनी वैसी भरनी। आप किसी के साथ जैसा व्यवहार करोगे वैसा ही व्यवहार उससे बदले में पाओगे, और यह बात बिलकुल पक्की है खास तौर से राजनीति में।

तेलंगाना के पूर्व शक्तिशाली मुख्यमंत्री के. चन्द्रशेखर राव ने जो व्यवहार पूर्व में कांग्रेस के साथ किया था आज वही उनको तकलीफ दे रहा है।

पिछले दस वर्षों से भी अधिक समय से उन्होंने कांग्रेस के नेताओं को तोड़ने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी और इस दल को तोड़कर एक छोटे से समूह में बदल दिया था और इस प्रकार विधानसभा में अपने विधायकों की संख्या बढ़ाकर राज किया तथा संसद के चुनावों में भी उनकी संख्या में वृद्धि हुई है। चुनावों में कांग्रेस के जो विधायक निर्वाचित हुए थे उन्हें कांग्रेस से तोड़कर अपनी पार्टी में शामिल कर लिया और एक बार स्थिति ऐसी बन गई मानों

- बी.आर.एस. के राज्यसभा सदस्य केशव राव एवं बी.आर.एस. के विधायकों को रैवन्त रेड्डी पहले ही कांग्रेस में शामिल कर चुके हैं और हाल ही में इसी पार्टी के दस विधान परिषद सदस्यों को भी रेड्डी ने कांग्रेस की सदस्यता दिलवाई है।
- बी.आर.एस. के वर्किंग प्रैसिडैंट के.टी. रामाराव ने इस दलबदल को लेकर कांग्रेस पर कटाक्ष किया कि, कांग्रेस ने अपने मैनिफैस्टो "न्याय पत्र" में दल-बदल रोकने के लिए संविधान की दसवीं अनुसूची में संशोधन की बात कही है। क्या यही है कांग्रेस का न्याय पत्र?
- ज्ञातव्य है कि, जब के.सी.आर. मुख्यमंत्री थे तब उन्होंने कांग्रेस के बहुत सारे नेताओं को तोड़ा, यहां तक कि, प्रदेश में कांग्रेस एक छोटा सा समूह बनकर रह गई थी। राज्य में दो ही पार्टियाँ बची थीं सत्तारूढ़ बी.आर.एस. और विपक्षी भाजपा।
- पर, जैसे ही रैवन्त रेड्डी ने तेलंगाना में कांग्रेस की कमान संभाली तो हालात बदलने लगे। वे एक-एक कर न केवल कांग्रेसियों को वापस लाए बल्कि मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने बी.आर.एस. में भारी तोड़-फोड़ मचा दी है।

तेलंगाना प्रदेश में केवल दो ही पार्टियां रह गई हों।

सत्ताधारी बी.आर.एस. तथा अपने को मुख्य विपक्षी पार्टी के रूप में पेश कर रही भाजपा और कांग्रेस के लोग बी.आर.एस. व भाजपा में चले गए थे।

जब तक रैवन्त रेड्डी ने कांग्रेस की कमान नहीं संभाली थी यही स्थिति थी। रेड्डी ने कांग्रेस के अध्यक्ष बनते ही पार्टी का पुनर्गठन करना शुरू कर दिया और अपनी पार्टी के पुराने साथियों को वापस पार्टी में लाना शुरू कर दिया।

के.सी.आर. को प्रदेश की सत्ता से बाहर करने के बाद, रेवन्त रेड्डी ने चुपचाप पार्टी के पुराने सहयोगियों को मनाकर वापस लाने का कार्यक्रम शुरू किया और अब वे बी.आर.एस. के नेताओं को तोड़ रहे हैं। बी.आर.एस. के एक वरिष्ठ नेता के. केशव राव के पार्टी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कश्मीर में दो अलग-अलग मुठभेड़ों में चार आतंकवादी मारे गये

श्रीनगर, 6 जुलाई (वार्ता) जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले में शनिवार को दो अलग-अलग मुठभेड़ों में चार आतंकवादी मारे गए और एक सैनिक शहीद हो गया।

- यह मुठभेड़ ऐसे समय पर हुई है जब कश्मीर में अमरनाथ यात्रा चल रही है। मुठभेड़ में एक भारतीय सैनिक शहीद हो गया।

अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कुलगाम में दो मुठभेड़ें ऐसे समय में हुई हैं जब अनंतनाग जिले में नुनवान-पहलगाम मार्ग और गंदेरबल जिले में बालटाल मार्ग से पिछले शनिवार को शुरू हुई अमरनाथ यात्रा के कारण पूरे जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। दोनों मार्गों से तीर्थयात्रियों को कुलगाम जिले से होकर गुजरना पड़ता है। अधिकारियों ने बताया कि पहली

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

गहलोत राज में राज्य भंडारण निगम द्वारा अरबों रु. का घोटाला करने का आरोप लगाया डॉ. किरोड़ीलाल ने

डॉ. मीणा ने 21 जनवरी 2024 की सी.ए.जी. रिपोर्ट का हवाला देते हुए मु.मंत्री भजनलाल को गत 16 मई 2024 को लिखित शिकायत करते हुए इस घोटाले की जांच करवाने, टैंडर निरस्त करने और दोषी बड़े अधिकारियों के खिलाफ सख्त एक्शन लेने की मांग की थी

-यादवेन्द्र शर्मा-

जयपुर, 6 जुलाई। कैबिनेट मंत्री व वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ. किरोड़ीलाल मीणा ने पूर्ववर्ती अशोक गहलोत की सरकार में राजस्थान राज्य भंडारण निगम द्वारा कल्पतरू समूह की कंपनी श्री शुभम लॉजिस्टिक लि. को टैंडर देने की आड़ में अरबों रुपये का घोटाला करने का आरोप लगाया है।

डॉ. किरोड़ीलाल ने 21 जनवरी 2024 की सी.ए.जी. की रिपोर्ट का हवाला देते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को गत 16 मई 2024 को शिकायती पत्र लिखते हुए इस घोटाले की जांच करवाने, टैंडर निरस्त करने और दोषी बड़े अधिकारियों के खिलाफ सख्त एक्शन लेने की मांग की।

राजनैतिक गलियारों में डॉ. किरोड़ीलाल मीणा द्वारा अचानक इस्तीफा देने को लेकर अलग-अलग चर्चाएं हैं। चर्चाएं यह भी हैं कि, मंत्री किरोड़ीलाल ने अपना इस्तीफा इसलिए दिया है, कि पूर्ववर्ती अशोक गहलोत की सरकार में हुए अरबों रुपये के घोटाले उजागर करने के बाद भी मौजूदा भाजपा सरकार इस पर कोई सख्त एक्शन नहीं ले रही है।

दूसरी चर्चा यह भी है कि, डॉ. किरोड़ीलाल ने अपना इस्तीफा इसलिए भी दिया है कि, उनके प्रभाव क्षेत्र में भाजपा ने लोकसभा चुनाव-2024 में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया। किरोड़ीलाल स्वयं भी चुनाव के दौरान व बाद में भी कई बार कह चुके थे कि, अगर उनके

- किरोड़ीलाल के आरोप थे कि, जून-2020 में राजस्थान राज्य भंडारण निगम ने गोदाम निर्माण, गोदामों को पी.पी.पी. मोड पर देने और उनका प्रबंधन करने के लिए श्री शुभम लॉजिस्टिक लि. और ऑरिगो कंपनी के साथ एम.ओ.यू. किया था। तथापि, शर्तों की पालना नहीं करने के बावजूद कंपनी से 120 करोड़ रु. की पैनल्टी नहीं वसूली गई।
- सी.ए.जी. की रिपोर्ट में भी भंडारण निगम के अधिकारियों द्वारा इन दोनों कंपनियों पर मेहरबानी दिखाने और उन्हें करोड़ों रु. का फायदा पहुंचाने की बात कही गई है, जिससे किरोड़ीलाल के आरोप सत्यापति होते हैं। लेखाकारों ने बैंक गारंटी, कंपनी से पैनल्टी वसूली व अन्य प्रकरणों को लेकर जब विभाग से जवाब मांगा तो हर बार असंतोषजनक जवाब पाया।
- ऑडिट रिपोर्ट में ऑडिटर्स ने कई गंभीर गलतियां पकड़ीं, जिसमें श्री शुभम लॉजिस्टिक व ऑरिगो कंपनी को नाजायज लाभ पहुंचाने का प्रयास स्पष्ट हुआ है। स्टेट वेयर हाऊसिंग कॉर्पोरेशन इन आपत्तियों में से एक का भी संतोषजनक जवाब नहीं दे पाया।

क्षेत्र से भाजपा ने जीत दर्ज नहीं की तो वह मंत्री पद से इस्तीफा दे देंगे।

परन्तु इस घटनाक्रम के बीच, किरोड़ीलाल ने पिछली सरकार के जो घोटाले उजागर करने का दावा किया था, क्या वह पूर्णतः काल्पनिक थे अथवा उनमें कोई बड़ी सच्चाई थी?

किरोड़ीलाल मीणा ने गत 16 मई 2024 को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को जो पत्र लिखा था, उसमें 21 जनवरी 2024 को वरिष्ठ उपलेखाकार संजीव सुराणा की ओर से राज्य सरकार को भेजी गई सी.ए.जी. रिपोर्ट का हवाला दिया था। किरोड़ीलाल के आरोप थे कि, इस रिपोर्ट के मुताबिक, जून-2020 में राजस्थान राज्य भंडारण निगम ने गोदाम निर्माण, गोदामों को पी.पी.पी. मोड पर देने और उनका प्रबंधन करने के लिए श्री शुभम लॉजिस्टिक लि. और ऑरिगो कंपनी के साथ एम.ओ.यू. किया था।

इस अनुबंध के मुताबिक गोदामों की वार्षिक उपयोगिता 70 प्रतिशत से कम रहने पर नुकसान की भरपाई इन दोनों कंपनियों से की जानी थी। किरोड़ीलाल का कहना है कि, वर्ष 2023-24 में डिफैक्ट की यह रकम करीब 120 करोड़ रु. वसूली जानी है। इसके बावजूद भंडारण निगम ने यह वसूली कंपनी से नहीं की, उल्टा श्री शुभम लॉजिस्टक कंपनी ने राजस्थान सरकार के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में परिवाद दायर कर दिया और अब कुछ अधिकारी अदालत में राज्य सरकार के पक्ष में कमजोर पैरवी कर रहे हैं।

किरोड़ीलाल मीणा का आरोप था कि, एम.ओ.यू. की शर्तों के मुताबिक कंपनी द्वारा किराये पर लिए जाने वाले गोदाम भी भंडारण निगम के माने जाएंगे, इससे निगम को किराये की 70 फीसदी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

जब जिन्दगी को अपने दिल के गीत सुनाने का मौका नहीं मिलता, तब वह अपने मन के विचार सुनाने के लिए दार्शनिक पैदा कर देती है।
–खलील जिब्रान

आयुर्वेद के रसायन मानवता के लिये वरदान हैं

आज की चर्चा एक बार पुनः आयुर्वेद के रसायनों पर है। जैसा कि पहले चर्चा की जा चुकी है, जीवन में एक ऐसा समय आता है जब कितना ही बुद्धिमान डॉक्टर हो या कितनी ही बढ़िया चिकित्सा हो, रोग ठीक करना मुश्किल हो जाता है। यदि व्यक्ति का बल और मांस क्षीण हो जाये तो ऐसा भान होने लगता है जैसे आयु पूरी हो चुकी है। कोई महाव्याधि अचानक निवर्तित हो जाये व भोजन से मिलने वाले लाभ मिलना भी बंद हो जायें तो भी यही स्थिति बनती है (देखें, सु.सू.32.7-8): चिकित्स्यमानः सम्यक च विकारो योऽभिवर्धते। प्रक्षीणबलमांसस्य लक्षणं तद्गतायुषः।। निवर्तते महाव्याधिः सहसा यस्य देहिनः। न चाहारफलं यस्य दृश्यते स विनश्यति।। जानी-मानी व बहुत लोगों पर सफल और बढ़िया तैयार औषधि भी यदि किसी व्यक्ति में वांछित प्रभाव ना दे पा रही हो तो व्यक्ति को गैर-उपचार योग्य श्रेणी में माना जाता है। चिकित्सक की सलाह से तैयार कर दिये गये भोजन का वांछित परिणाम नहीं मिल रहा हो, तो चिंताजनक स्थिति मानी जाती है (देखें, च.इ.12.7-8): विज्ञातं बहुशः सिद्धं विधिवच्चावचारितम्। न सिध्यत्योषधं यस्य नास्ति तस्य चिकित्सितम्।। आहारमुपयुञ्जानो भिषजा सूपकल्पितम्। यः फलं तस्य नाप्नोति दुर्लभं तस्य जीवितम्।। बात यहाँ अति-कठिन परिस्थिति की है।

वस्तुतः आयुर्वेद के दृष्टिकोण से माना जाता है कि जब मृत्यु का समय निकट आता है तो कुछ अरिष्ट प्रकट होते हैं (देखें, च.इ.2.5): न त्वरिष्टस्य जातस्य नाशोऽस्ति मरणादृते। मरणं चापि तन्नास्ति यन्नारिष्टपुरःसरम्।। किन्तु माना यह भी जाता है कि अरिष्ट को निर्विवाद रूप से पहचानने में त्रुटि भी हो सकती है (देखें, च.इ.2.6): मिथ्यादृष्टमरिष्टाभमनरिष्टमजानता। अरिष्टं वाऽप्यसम्बुद्धमेतत् प्रज्ञापराधजम्।। कहने का तात्पर्य यह है कि हो सकता है वास्तव में अरिष्ट प्रकट ना हुआ हो, फिर भी त्रुटिवश प्रकट हुआ मान लिया जाये।

अतः यदि भ्रम की स्थिति हो तो चिकित्सा की जाये या नहीं? यदि हाँ, तो कैसी चिकित्सा उपयुक्त हो सकती है? मेरे विचार से अरिष्ट की सही या गलत पहचान के पचड़े से बाहर निकल कर चिकित्सा करना ही उचित है। ऐसे अनेक लोग हैं जिन्हें अंतिम स्थिति में पहुंचा हुआ मानकर धरती पर लिटाकर तुलसी और गंगाजल खिला-पिला दिया गया। गाय की बछिया की पूँछ पकड़ा कर दान-पुण्य भी करा दिया गया। पर वे फिर उठ खड़े हुये और कई साल चले। इसलिये जब तक प्राण हैं, चिकित्सा करना उपयोगी है।

अब प्रश्न यह है कि ऐसी कौन सी चिकित्सा है जो अरिष्ट निवारण में सक्षम हो सकती है? वैसे तो अरिष्ट-निवारण की सामर्थ्य कम ही व्यक्तियों में होती है, तथापि यह असंभव नहीं है। अरिष्ट प्रकट होने के बाद भी युक्ति-व्यपाश्रय, सत्त्वावजय और दैव-व्यपाश्रय की त्रिवेणी में की गयी चिकित्सा मृत्यु को टाल सकती है। इसका संकेत वैज्ञानिक-महर्षि आचार्य सुश्रुत ने दिया है। रिष्ट उत्पन्न होने पर मृत्यु निश्चित है, तथापि मानस दोषों से मुक्त विद्वान के द्वारा या रसायन, तप, और जप में पारंगत व्यक्ति द्वारा मृत्यु का निवारण किया जा सकता है (देखें, सु.सू.28.5): ध्रुवन्तु मरणं रिष्टे ब्राह्मणैस्तत् किलामलैः। रसायनतपोजप्यतत्परैर्वा निवार्य्यते।। कठिन रोगों की स्थिति में भी बचने की संभावना यहाँ साफ़ दृष्टिगोचर है।

क्या वास्तव में रसायन इतने उपयोगी और प्रभावी हैं? संहिताओं, शोध और अनुभव तीनों में ही इस प्रश्न का उत्तर धनात्मक ही मिलता है। आइये पहले संहिताओं के वे प्रमाण देखते हैं जो केवल कठिन रोगों व परिस्थितियों के सन्दर्भ में हैं। पहला प्रमाण आचार्य सुश्रुत के उस कथन से मिलता है जिसमें रोगों की सूची देते हुये संकेत किया गया है कि ये रोग रसायन के बिना असाध्य हो जाते हैं (देखें, सु.सू.33.3): ये जुष्टा व्याधयो यान्त्यवार्यताम्। रसायनाद्विना वत्स तान् शृण्वेकमना मम।। इस संदर्भ से यह संकेत तो स्पष्ट है ही कि रसायन से रोगों को उन अवस्थाओं में जाने से रोका जा सकता है जहां वे चिकित्सा की दृष्टि से असाध्य हो जाते हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि रसायन असाध्य रोगों को भी साध्य बनाते हुये चिकित्सा में मददगार हो सकते हैं। उदाहरण के लिये, हालाँकि कुष्ठ और प्रमेह असाध्य होते हैं, पर आचार्य सुश्रुत ने स्वयं एक ऐसा योग दिया है जो असाध्य कुष्ठ और प्रमेह को भी ठीक कर देता है (सु.चि. 10.12): एषौषधायस्कृतिरसाध्यं कुष्ठं प्रमेहं वा साधयति। वस्तुतः यह उस सिद्धान्त की विजय है जिसमें आचार्य चरक ने चिकित्सा की सफलता में युक्ति को सर्वोपरि माना है। यहाँ निहितार्थ यह है कि यदि रसायन चिकित्सा की जाये तो ये रोग असाध्य नहीं हो पाते। आधुनिक वैज्ञानिक शोध में रसायन उसी प्रकार उपयोगी पाये गये हैं जैसा कि आचार्य सुश्रुत ने निर्दिष्ट किया है। दूसरा प्रमाण, चरकसंहिता की टीका में चक्रपाणि द्वारा महर्षि अगस्त्य को उद्धृत करते हुए कहा गया है कि रसायन, तप व जप में सिद्ध महान लोग काल मृत्यु को भी जीत लेते हैं, पर आलसी आदमी नहीं (देखें, च.सू.1.62 पर चक्रपाणि.): रसायनतपो जापयोगसिद्धैर्महात्मभिः। कालमृत्युरपि प्राज्ञैर्जीयते नालसैर्नरैः।। तीसरा प्रमाण महर्षि-वैज्ञानिकआचार्य चरक द्वारा सोसायटल कोलैप्स या जनपदोध्वंश की स्थिति-हवा, पानी, मिट्टी और ऋतुओं के प्रदूषित हो जाने से उत्पन्न महामारियाँ-में पंचकर्म व रसायनों के द्वारा समस्या निवारण हेतु सुझाया गया रास्ता है (देखें, च.वि.3.13-14): येषां न मृत्युसामान्यं सामान्यं न च कर्मणाम्। कर्म पञ्चविधं तेषां भेषजं परमुच्यते।। रसायनानां विधिवच्चोपयोगः शस्यते। शस्यते देहवृत्तिश्च भेषजैः पूर्वमुद्धृतैः।। रसायन द्रव्यों के साथ ही अद्रव्य रसायन भी हैं जो सत्त्वावजय और दैव-व्यपाश्रय चिकित्सा में मददगार हैं। उदाहरण के लिये दान, विनम्रता, दया, सत्य, ब्रह्मचर्य, कृतज्ञता, मित्रता, रसायन व अच्छे कार्य सब उम्रवर्धक हैं (अ.हृ.शा.3.120): दानशीलदयासत्य ब्रह्मचर्यकृतज्ञताः। रसायनानि मैत्री च पुण्यायुर्वृद्धिकृद्गणः।।

> **आयुर्वेद के रसायन बढ़ती उम्र के लोगों में डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म की गति को बढ़ा सकते हैं? इस विषय में कई अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि रसायन औषधियाँ डी.एन.ए. रिपेयर की गति को बढ़ाकर बुढ़ापा आने की गति को धीमा कर देती हैं। हाल में हुये एक क्लीनिकल ट्रायल में पाया गया कि आमलकी रसायन के प्रयोग से डी.एन.ए.स्ट्रैंड में तोड़फोड़ की गति कम होती है तथा रिपेयर मैकेनिज्म तेज हो जाती है। यह रसायन सुरक्षित भी पाया गया है।**

संहिताओं के साथ ही आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों से भी रसायनों की क्रियात्मकता के ठोस प्रमाण मिल रहे हैं। मेरे ज्ञान में रसायन योगों पर 2100 शोधपत्र और एकल रसायनों पर कम से कम 5000 शोधपत्रों में से एक भी ऐसा नहीं है जिसमें रसायनों की त्रिदोष-नियामकता पर ठोस प्रश्नचिन्ह लगाया हो। आइये कुछ उदाहरण देखते हैं।

उम्र-आधारित रोगजनन का एक प्रमुख कारण डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म में गड़बड़ी होना माना जाता है। जीवित कोशिकाओं के गुणसूत्रों में पाये जाने वाले तंतुनुमा अणु को डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड या डी.एन.ए.कहा जाता है। इसी में अनुवांशिक कोड निहित रहता है। जैसे जैसे डी.एन.ए. डैमेज का बोझ बढ़ता जाता है, शरीर बुढ़ापे की ओर बढ़ता जाता है। इस कारण अनेक समस्यायें जैसे कैंसर, न्येरोडीजेनरेशन और बढ़ती उम्र के कारण होने वाली अनेक व्याधियां विकसित हो जाती हैं। शरीर की कोशिकाओं द्वारा डी.एन.ए. डैमेज के संकेत प्राप्त करना और टूट-फूट की मरम्मत करने की क्षमता उम्र के साथ घटती जाती है। इसीलिये बढ़ती उम्र में अनेक रोग लग जाते हैं।

तो क्या आयुर्वेद के रसायन बढ़ती उम्र के लोगों में डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म की गति को बढ़ा सकते हैं? इस विषय में कई अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि रसायन औषधियाँ डी.एन.ए. रिपेयर की गति को बढ़ाकर बुढ़ापा आने की गति को धीमा कर देती हैं। हाल में हुये एक क्लीनिकल ट्रायल में पाया गया कि आमलकी रसायन के प्रयोग से डी.एन.ए.स्ट्रैंड में तोड़फोड़ की गति कम होती है तथा रिपेयर मैकेनिज्म तेज हो जाती है। यह रसायन सुरक्षित भी पाया गया है। एक अन्य अध्ययन में, जो 45-60 वर्ष के लोगों के मध्य किया गया, पाया गया है कि आमलकी रसायन का प्रयोग रक्त की परिफेरल ब्लड मोनोन्यूलियर सेल्स में टीलोमीयर की लम्बाई में बदलाव किये बिना टीलोमेरेज क्रियात्मकता को बढ़ा देता है। इससे चूंकि टीलोमियर के क्षरण में कमी आती है, अतः हैल्थस्पान में बेहतरी होती है। एक तीसरा उदाहरण अश्वगंधाा का दिया जा सकता है। कुल 50 स्वस्थ खिलाड़ियों के मध्य किये गये क्लीनिकल ट्रायल में यह पाया गया है कि अश्वगंधा की जड़ों का एक्सट्रैक्टकार्डियोरेस्पायरेटरी सहनशीलता को बढ़ा देता है। इसके अलावा अनेक इनवाइट्रो, इन वाईवो और क्लिनिकल अध्ययन में अश्वगंधा और आमलकी सहित तमाम रसायनों द्वारा कैंसर, मधुमेह, कार्डियोवैस्कुलर बीमारियाँ, मानसिक बीमारियों तथा अपर-रेस्पायरेटरी-ट्रैक्टसंक्रमण से बचाव होता है। एक प्रमाण-आधारित तथ्य यह भी है कि आयुर्वेद के रसायनों से बेहतर एंटी-एंग्जाइटी व वाजीकर से बेहतर एंटी-डिप्रेशेंट औषधि कोई नहीं है। बुढ़ापा आने का एक कारण ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन का बढ़ना भी है। रसायन द्रव्यों के उपयोग करते रहने से शरीर का व्याधिक्षमत्व बढ़ता है तथा ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन में कमी होती है।

उत्तम बात यह है कि कुछ ऐसे द्रव्य हैं जो आहार, रसायन और औषधि, तीनों ही प्रकारों में वर्गीकृत हैं। फल व सूखे मेवे, खजूर, द्राक्षा, मुनक्का, बादाम, तिल, आँवला, लहसुन, सोंठ, कालीमिर्च, पिपली, हल्दी, केसर, जीरा, धनिया, मूंग, जल, दूध, घी, तुलसी, शहद, गुड़, त्रिकटु एवं त्रिफला आदि ऐसे द्रव्य हैं जिनके युक्तिपूर्वक सेवन के लिये किसी क्लिनिकल ट्रायल का इंतज़ार करने की आवश्यकता नहीं है। संहिता, साइंस और अनुभव सब इन द्रव्यों के पक्ष में हैं।

मृत्यु की तिथि तय नहीं है, अपितु प्राणियों की आयु युक्ति की अपेक्षा रखती है (च.वि. 3.29: भूतानामायुर्युक्तिमपेक्षते। युक्ति से उम्र बढ़ सकती है। असल में युक्तिव्यपाश्रय आचार्य चरक द्वारा आयुर्वेदाचार्यों पर किये गये विश्वास की पराकाष्ठा है। चिकित्सा में सफलता युक्ति पर निर्भर है (च.सू. 2.16): सिद्धिर्युक्तौ प्रतिष्ठिता। जब सफलता युक्ति पर आश्रित हो तो साध्य-असाध्य या अरिष्ट की जाँच-परख से ज्यादा महत्त्व युक्ति के प्रयोग पर दिया जाना चाहिये। और इस युक्ति में रसायन महत्वपूर्ण भूमिका रखते हैं। इसलिये मेरा मानना है कि आयुर्वेदाचार्यों की देखरेख में लिये जाने वाले रसायन मौत के मुंह से निकाल लाने की क्षमता रखते हैं। रसायनों की क्षमताओं को पहचानिये। रसायन जरा-व्याधि का नाश तो करते ही हैं, जीवन का नाश भी रोक सकते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंगप्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

मौसम की मार से प्याज-टमाटर सहित कई सब्जियों के भाव बढ़े

प्याज-टमाटर ही नहीं आलू भी कर रहा आम आदमी की जेब ढीली

- हरी सब्जियां आम आदमी की थाली से दूर होती जा रही है
- सब्जियों के दाम में बढ़ोतरी से महिलाओं की रसोई का बजट बिगड़ा

मौसम की मार से सब्जियों के दामों बढ़ोतरी होने लगी है।

अजमेर, (कासं)। प्रदेश में मानसून का आगमन हो चुका है, ऐसे में प्याज-टमाटर समेत कई सब्जियों के भाव आसमान छू रहे हैं। मंडी से लेकर खुदरा बाजार तक के दाम में बड़ा असर देखने को मिल रहा है। इस महंगाई की रेस में आलू भी पीछे नहीं है। आलू का दाम 32 से 35 पहुंच गया है। बारिश के कारण किसानों की फसल प्रभावित हुई है। सब्जियों के दामों में भारी उछाल के चलते आम जनता के लिए बड़ी चिंता का विषय बन गई हैं। प्याज-टमाटर ही नहीं अब आलू भी आम आदमी की जेब ढीली कर रहा है, सब्जियों के भाव बढ़ने से अब वे आम आदमी की थाली से हरी सब्जियां दूर होती जा रही हैं।

टमाटर के साथ आलू की कीमते चर्चा में:-मानसून के साथ ही प्याज-टमाटर सहित सब्जियों के भाव आसमान छू रहे हैं। इस बार टमाटर की कीमतें सबसे ज्यादा चर्चा में हैं। बाजार में टमाटर का भाव 80 रुपए तो वहीं प्याज की 50 रुपए प्रति किलो मिल रही है, इसके साथ ही आलू जो हर परिवार की थाली का मुख्य हिस्सा होता है, आलू के दाम 40 रुपए प्रति किलो पहुंचने के साथ ही सब्जियों के दाम में बढ़ोत्तरी से महिलाओं की रसोई का बजट बिगड़ गया है। आम आदमी के लिए 40 रुपए प्रति किलो कीमत पर आलू खरीदना भी मुश्किल हो गया है। वहीं हरी सब्जियों के दामों में भी भारी बढ़ोतरी देखी जा रही है, गंवार फली 160 रुपए प्रति किलो और भिंडी 50 रुपए प्रति किलो, बैंगन 80 रुपए, फूल गोभी 80 रुपए, टिंडे 100 रुपए, तुरई 80 रुपए पहुंच गई है।

दाम बढते से घरेलू बजट पर असर:-सब्जी की कीमतों में बढ़ोतरी से आम उपभोक्ता के बजट से बाहर होने से घरेलू बजट बिगड़ रहा है। किसानों और व्यापारियों का कहना है कि मानसून के कारण सब्जियों की फसल को नुकसान पहुंचा है जिससे उनकी आपूर्ति में कमी आई है। इसके साथ ही परिवहन और भंडारण की लागत भी बढ़ गई है जो कीमतों में वृद्धि का एक अन्य कारण है। इस महंगाई के चलते आम आदमी की परेशानी बढ़ गई है। महिलाओं को घर के बजट में संतुलन बनाना मुश्किल हो रहा है।

मौसम की मार:-पानी लगने की वजह से प्याज अब दागी हो रहा है, जिससे किसानों को ट्रालियां तक यूं ही फैंकनी पड़ रही है। दूसरी ओर आलू की बात करें तो अब की बार पैदावार कम हुई है जिसके चलते दाम बढ़ रहे हैं। दूसरी ओर मंडी में की जाने वाली खरीद और खुदरा बाजार के दाम में भी अंतर होने के कारण आमजन काफी प्रभावित है। दरअसल, बदले हुए मौसम की वजह से सिर्फ टमाटर, आलू प्याज ही महंगा नहीं बिक रहा है, अन्य सब्जियों की कीमत भी आसमान छूने लगी है। ऐसे में मंडी में खरीद के लिए पहुंचने वाले लोग दाम पूछने के बाद खरीद से पीछे हट रहे हैं, क्योंकि व्यवस्था के स्तर पर खरीद बजट से बाहर हो रही है।

शिक्षा का मानवता, देश और समाज के कल्याण के लिए अधिकाधिक उपयोग हो : राज्यपाल

- राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा का 13वां दीक्षांत समारोह आयोजित

कोटा में राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में राज्यपाल ने उपाधियां प्रदान की।

कोटा, (निसं)। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा का 13वां दीक्षांत समारोह आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने की तथा सम्मानित अतिथि के रूप में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के सभापति प्रोफेसर टीजी सीताराम उपस्थित थे।

इस अवसर पर राज्यपाल मिश्र ने संविधान के मूल कर्तव्यों का वाचन कर समारोह की शुरुआत की एवं उन्होंने 127 विद्यार्थियों को डिग्रीयां एवं 44 स्वर्ण पदक प्रदान किए एवं दीक्षांत समारोह के सफल आयोजन के लिए विश्वविद्यालय और सभी पदक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रदान की। कुलसचिव धीरज सोनी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा कि दीक्षांत शिक्षा का अंत नहीं बल्कि नए जीवन का आरम्भ है। यह वह समय है जब आप विश्वविद्यालय में अर्जित ज्ञान का उपयोग राष्ट्र और समाज के उत्थान में करने के लिए सक्षम होते हैं। विद्यार्थियों नें जो शिक्षा विश्वविद्यालय में प्राप्त की है, उसका मानवता के कल्याण के लिए, देश और समाज के लिए अधिकाधिक उपयोग किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालयों में संविधान उद्यान निर्मित कराने की मंशा यही है कि हम संविधान की उदात्त परम्पराओं से सदा जुड़े रहें। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा अपनी स्थापना के बाद से ही देश में शिक्षा के प्रसार में महती भूमिका निभा रहा है। तकनीकी शिक्षा मानव संसाधन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इसके लिए हमें विश्वविद्यालयों को इस तरह से तैयार करने की जरूरत है कि वहां नित्य नवीन ज्ञान का प्रसार हो ताकि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोग से भारत को फिर से विश्वगुरु बन सके। विगत वर्षों में विश्वविद्यालय द्वारा युवाओं को देश-विदेश में गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान किए हैं।

राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा कि देश की जो नई शिक्षा नीति बनी है, उसका मूल भी यही है कि भारत आत्मनिर्भर हो। इसीलिए शिक्षा नीति में युवाओं को कौशल विकास से जोड़े जाने पर विशेष जोर दिया गया है। विश्वविद्यालयों गुणवत्ता और नवाचार पर लगातार ध्यान केंद्रित करना होगा। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य 21वीं सदी की जरूरतों एवं चुनौतियों को ध्यान में रखकर स्कूल और कॉलेज की शिक्षा को अधिक समग्र बनाते हुए भारत को एक ज्ञान आधारित जीवंत समाज और ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति म ें बदलना है।

समारोह में राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा के विभिन्न सम्बद्ध महाविद्यालयों के निदेशक, प्राचार्य, विश्वविद्यालय प्रबन्ध मण्डल एवं विद्या परिषद के सदस्य, अन्य विश्वविद्यालयों के कुलपति, राजभवन से अधिकारी, विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, कार्यालयाध्यक्ष, कुलसचिव, समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी, संकाय सदस्य, शिक्षक, शिक्षाविद्, विद्यार्थी व उनके अभिभावक, प्रशासनिक अधिकारी, गणमान्य नागरिक एवं आमंत्रित विशिष्ठ अतिथिगणों ने शिरकत की।

सरकारी स्कूलों में लगे प्रबोधक का होगा प्रमोशन

बीकानेर, (निसं)। प्रारंभिक शिक्षा के अधीन कार्यरत 2449 प्रबोधकों को जल्दी ही वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर पदोन्नत करने की तैयारी शिक्षा विभाग ने कर ली है। प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय ने सभी जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक शिक्षा, मुख्यालय) को उनके जिले में पदोन्नति के पात्र प्रबोधकों की संख्या भेजते हुए उनकी अस्थाई वरिष्ठता सूची 10 जुलाई तक अद्यतन करने के निर्देश दिए हैं।

इस अस्थाई सूची पर 3 दिवस में संबंधित प्रबोधकों से आपत्तियां मांगने के बाद 15 जुलाई तक स्थाई वरीयता सूची जारी कर दी जाएगी। 20 जुलाई तक चयन संबंधी कार्यवाही पूरी कर चयन आदेश की हार्ड और सॉफ्ट कॉपी 22 जुलाई तक प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय को वाहक स्तर पर भेजने के निर्देश दिए गए हैं।

पूरे राज्य में कुल 10392 प्रबोधक वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर पदोन्नति के पात्र हैं, जिसमे से वर्ष 2021 में पदोन्नत करने के लिए 5 हजार पद स्वीकृत किए गए थे। शेष रहे 5392 में से अब 2449 पदों पर पदोन्नति की स्वीकृति सरकार ने दी है। जिन नवगठित जिलों में जिला स्थापना समिति का गठन नहीं हुआ है, उन जिलों में पूर्व 33 जिलों के अनुसार ही वरिष्ठता निर्धारित की जाएगी। जिले में कुल 254 प्रबोधक पदोन्नति के पात्र थे, जिसमें से 122 को वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर पदोन्नत किया जा चुका है। शेष 132 प्रबोधकों में से 60 प्रबोधकों को वरिष्ठता के आधार इस बार पदोन्नत किया जाएगा।

राशिफल रविवार 7 जुलाई, 2024

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुकल पक्ष, द्वितीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, पुष्य नक्षत्र सोमवार प्रातः 6:03 तक, हर्षण योग रात्रि 2:12 तक, बालव करण सांय 4:43 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मेष, बुध-कर्क, गुरू-वृष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज राजयोग और रविपुष्य योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज शुक्र उदय पश्चिम रात्रि 9:05 पर होगा। आज चन्द्र दर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति, मनोरथ द्वितीया व्रत, आषाढ़ी दशहरा और रथयात्रा उत्सव है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 7:24 से 9:07 तक, लाभ-अमृत 9:07 से 12:21 तक, शुभ 2:13 से 3:56 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:42, सूर्यास्त 7:20

मेष

घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृष
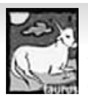
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मिथुन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

कर्क

मनःस्थिति ठीक रहेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह

अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में प्रगति होगी। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला

आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

वृश्चिक

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

धनु

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मकर

परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। घर-परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

मीन

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

सार-समाचार

गीतांजली को अचीवमेंट अवार्ड

उदयपुर, (कासं)। अहमदाबाद में हेल्थकेयर ओनर्स कॉन्क्लेव का आयोजन किया गया। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल को समाज के प्रति उत्कृष्ट योगदान के लिए अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया। जिसे डॉ राजीव पंड्या, प्रबंधक मानव संसाधन ने ग्रहण किया।कांफ्रेंस के अन्दर देशभर से लगभग 1हजार से भी अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया व इस कॉन्क्लेव 500 से अधिक कंपनियां इसका हिस्सा बनी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुजरात के स्वास्थ्य मंत्री ऋषिकेश पटेल रहे।कार्यक्रम में अहमदाबाद व देशभर से जुडे फर्मास्यूटिकल कंपनियां व स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में अग्रसर कंपनियों के प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया व पैनल पर चर्चाएँ की गयी। कार्यक्रम में पैनल पर चर्चा के दौरान इकिसवी सदी के विकसित भारत के परिपेक्ष्य में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र किस तरह अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है पर देशभर से आये विशेषज्ञों ने विस्तृत चर्चा कर अपने विचार व्यक्त किये। साथ ही इस विषय पर भी चर्चा की गयी कि आने वाले समय में सरकार द्वारा प्रस्तावित योजनाएं किस तरह से भारतीय युवाओं के स्वास्थ्य अहम परिवर्तन ला सकती है और स्वास्थ्य सेवाएं किस तरह की चुनौतियों का सामना कर रही हैं।

नकदी व बाइक लूटी

उदयपुर, (कासं)। बैकरिया थाना क्षेत्र में बदमाश बाइक को रोक चालक को धमका कर नकदी, मोबाईल व बाइक लूट ले गए। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसर पीडित भादुराम पुत्र चतराराम निवासी घाटा पाटीया बैकरिया ने पुलिस थाने में प्रकरण दर्ज करवाया। जिसमें पीडित ने बताया कि 4 जुलाई रात में बाइक पर पिण्डवाड़ा से गांव लौट रहा था। जहां बीच रास्ते में मिले चार पांच बदमाशों ने बीच रास्ते खड़े होकर मुझे रोक कर एकांत में ले गए। जहां धमकाते हुए जेब से10 हजार रूपये नकदी,मोबाईल तथा बाइक लूट ले गए। इस मामले में पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर लिया है। जिसकी जांच थानाधिकारी धनपतसिंह कर रहे है।

चिकित्सक पर हमला

उदयपुर, (कासं)। शहर के हाथीपोल थानाक्षैत्र में स्कूटी सवार बदमाश चिकित्सक पर चाकू से हमला कर फरार हो गए। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीडित डॉ. सुरेन्द्रगुर्जर पुत्र किरोड़ीलाल गुर्जर निवासी नादौती गंगापुर हॉल चिकित्सक एमबी चिकित्सालय ने स्कूटी सवार दो बदमाशों के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया जिसमें पीडित ने बताया कि 3 जुलाई रात में मै। अपने साथी चिकित्सक अनुंप के साथ चेतक से वापस चिकित्सालय लौट रहा था।

डेयरी व खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में पुस्तकालय का उद्घाटन

उदयपुर, (कासं)। एमपीयूएटी के संघटक डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में नवनिर्मित पुस्तकालय का उद्घाटन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उप-निदेशक (शिक्षा) डॉ. आर.सी. अग्रवाल द्वारा एमपीयूएटी के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक एवं विवि के वरिष्ठ पदाधिकारियों और एमबीएम विवि के कुलपति डॉ. अजय कुमार शर्मा की गरिमामय उपस्थिति में किया गया।

महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ लोकेश गुप्ता ने बताया की महाविद्यालय डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उच्चतम मापदंडों के अनुकूल विगत 41 वर्षो से शिक्षण, प्रशिक्षण एवं परामर्श प्रदान कर रहा है। पुस्तकालय में तकरीबन 100 विद्यार्थीयों के बैठने की व्यवस्था है । इस पुस्तकालय में पूर्णतया वातानुकूलन के साथ वाई-फाई इन्टरनेट की सुविधा उपलब्ध कराई गई है ताकि विद्यार्थी अपने लैपटॉप, टेबलेट या मोबाइल इत्यादि पर ई-बुक्स, जर्नल, शोध-पत्र इत्यादि पढ सकें। पुस्तकालय के एक भाग में पुस्तक पढने के लिए आरामदायक टेबल कुर्सी की व्यवस्था है तो एक भाग में समाचार-पत्र, पत्रिकाओं के पढनें की सुविधा है। डिजिटल पुस्तकालय को बढावा देने के लिए एक भाग में ई-बुक्स, जर्नल, शोध-पत्र इत्यादि पढने के लिए हाई स्पीड इन्टरनेट की सुविधा के साथ आधुनिक कंप्यूटर भी उपलब्ध कराए गए हैं। इस पुस्तकालय में पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विश्व स्तरीय पुस्तको के साथ ई-बुक्स, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन एवं सर्वांगीण विकास हेतू गणमान्य लेखको की अन्य उच्च स्तरीय लगभग 2 हजार॰ पुस्तकों की उपलब्धता कराई गई है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उप-निदेशक (शिक्षा) डॉ. आर.सी. अग्रवाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा की एक सुखद एवं सम्मानपूर्ण जीवन के लिए सभी को अनवरत ज्ञान-उन्नयन करते रहना चाहिए और इसके लिए पुस्तक सबसे उत्तम और सर्वश्रेष्ठ साधन है। उन्होंने अद्यतन गुणवत्ता आश्वासन प्रयोगशाला में विभिन्न आधुनिक उपकरणों का भी अवलोकन किया और विद्यार्थियों से सीधा संवाद कर विभिन्न प्रक्रमों के बारे में जानकारी प्राप्त की। साथ ही उन्होंने महाविद्यालय की विभिन्न इकाईयों का निरीक्षण भी किया और विद्यार्थियों के तकनीकी कौशल का क्रियान्वयन देख कर हर्ष व्यक्त किया। इस अवसर पर उन्होंने रागी से पास्ता प्रसंस्करण, बिलौना विधि से घी प्रसंस्करण एवं मिलेट उत्पादों के प्रसंस्करण का विस्तृत समीक्षात्मक निरीक्षण किया और विद्यार्थियों के साथ प्रसंस्करण की तकनीकी बारीकियों के बारे में जाना। इस अवसर पर उन्होंने लैब मैन्युअल का विमोचन भी किया। साथ ही उन्होंने महाविद्यालय प्रांगण में वृक्षारोपण भी किया।

■ कुलपति डॉ अजीत कुमार कर्नाटक ने कहा की ज्ञान परिष्करण के लिए पुस्तकों से बड़ा कोई साधन नहीं है

डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में नव-निर्मित पुस्तकालय का उद्घाटन किया।

सार-समाचार

फर्जी परीक्षार्थी के खिलाफ मामला दर्ज

उदयपुर, (निसं)। शहर के बडगांव एवं अम्बामाता थाना पुलिस ने दो आरोपियों के खिलाफ रीट परीक्षा में फर्जी परीक्षार्थी के रूप में परीक्षा देने का मामला दर्ज किया। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीड़ित सुमन जैन प्रधानाचार्य महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय बड़ी पंचायत समिति बडगांव ने अध्यापक सुरेशचनद्र कटारा पुत्र रामजी कटारा के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया। पीड़ित ने बताया कि कोटड़ा स्थित राजकीय उ. प्रा. वि.खुणा में हिन्दी विषयाध्यापक के पद पर आठ माह से सुरेश चन्द्र कटारा काम कर रहा था। गत दिनों विद्यालय के अन्य कर्मचारियों ने आरोपी के खिलाफ शिकायत की थी। इसके बाद से वह 24 जून से विद्यालय नहीं आ रहा था। इस पर पड़ताल की तो आरोपी द्वारा 26 फरवरी 2023 को रीट की परीक्षा हुई थी, इस दौरान परीक्षाकेन्द्र महात्मागांधी राजकीय वि. बडी में सुरेश के स्थान पर अन्य व्यक्ति ने परीक्षा दी थी। इस मामले का खुलासा होने पर पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर लिया हैं। जिसकी जांच अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामेश्वर परिहार कर रहे है। इसी तरह राजदेव शिक्षक प्रशिक्षण विालय राताता रामपुरा के व्यवस्थापक गिरीश भारती पुत्र मगनभारती ने दुर्गेश नामक आरोपी के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया। जिसमें पीडित ने बताया कि बांसवाडत्रा निवासी दुर्गेश पुत्र मगन लाल के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया। जिसमें पीडित ने बताया कि 26 फरवरी 2022 को परीक्षा केन्द्र राजदेव शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय पर आयोजित रिट की परीक्षा में दुर्गेश के स्थान पर अन्य व्यक्ति ने परीक्षा दी थी। चयन होने के बाद दुर्गेश कीर खेड़ा राजकीय प्रा. वित्र चित्तोडगढ में पोस्टेड था। इसका पता चलने पर पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया। जिसकी जांच अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामेश्वर परिहार कर रहे है।

तीन हमलावर गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)।भाई व भाभी पर प्रणधातक हमला करने वाले तीन भाईयों को पुलिस ने गिरफ्तार किया। प्रकरण के अनुसार 3 अप्रेल 2024 को पीडित बाबुलाल पुत्र मंशाराम निवासी कालीडुगरी बैकरिया ने पुलिस थाने में रिपोर्ट दी। जिसमें उसने बताया कि मैं व मेरी पत्नी घर पर थे। रात में मोतीराम, दशरथ ने घर में घुस कर मेरे व पत्नी पर कुल्हाडी से हमला कर फरार हो गए। घालय होने पर परिजनों ने हमें चिकित्सालय पहुंचाया।इधर इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गोपाल स्वरूप मेवाड़ा, पुलिस उप अधीक्षक राजेन्द्रसिंह परिहार के सुपरविजन में बैकरिया थानाधिकारी धनपतसिंह के नेतृत्व में गठित दल ने अनुसंधान में मिले साक्ष्यों के आधार पर गोमाराम पुत्र मंशाराम गरासिया, मोतीराम पुत्र मंशाराम तथा दशरथ पुत्र मंशाराम निवासी काली डुगरी बैकरिया को गिरफ्तार किया।

दुकान पर की पत्थरबाजी

उदयपुर, (कासं)।ओगणा थाना पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ किराणा व्यापारी पर पत्थरबाजी करने का मामला दर्ज किया।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीडित मोतीसिंह पुत्र भूरसिंह सोलंकी निवासरी झांक गोगुन्दा ने झांक हदतलाई निवासी जगा पुत्र. हिरा, रामा पुत्र हकरा, थावरा पुत्र हिरा के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया। जिसमें पीडित ने बतायाकि 4 जुलाई सांय मैं अपनी किराणा दुकान पर था। इस दौरान आए आरोपियों ने पत्थरबाजी शुरू कर दी तथा दुकान को डाईनामईट से उड़ाने की धमकी दी। इस पर दुकान बंद कर स्वयं को बचाया।

विद्यार्थियों ने सीखी स्केचिंग की बारीकियां

उदयपुर, (कासं)। जिला मुख्यालय के समीपस्थ वरड़ा और धार गांव के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को स्कूल प्रशासन और कश्ती फाउंडेशन के तत्वावधान में शनिवारिय सभा का आयोजन किया गया। कश्ती फाउंडेशन प्रमुख श्रद्धा मुर्डिया ने बताया कि स्कूली विद्यार्थियों को शैक्षिक के साथ-साथ सह शैक्षिक गतिविधियों की और उन्मुख करने के उद्देश्य से आयोजित इस पहली शनिवारिय सभा का विद्यार्थियों ने जमकर लुत्फ उठाया और अतिथि कलाकारों के साथ अपने कला कौशल और अभिरुचि पर संवाद किया।बतौर अतिथि ख्यातनाम स्केच आर्टिस्ट व आर्किटेक्ट सुनील लड्ढा ने आज विद्यार्थियों को स्केचिंग की बारीकियों से रूबरू करवाया। उन्होंने विद्यार्थियों को अपने भीतर छिपे कलाकार को बाहर निकालने और लगातार सृजनात्मक गतिविधियों में लगे रहने का आह्वान किया। जनसंपर्क विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. कमलेश शर्मा ने विद्यार्थियों को शिक्षार्जन के साथ-साथ सहशैक्षिक गतिविधियों पर भी फोकस करने तथा अपनी हॉबी को समय देने का आह्वान कर प्रोत्साहित किया।प्रभारी हेमंत जोशी ने शनिवार को इस सभा के नियमित आयोजन की मंशा उजागर की वहीं वरड़ा प्रधानाचार्य मनोहरलाल सुथार और धार प्रधानाचार्य सत्यनारायण सुथार ने अतिथियों को विद्यालयी गतिविधियों की जानकारी दी। शनिवारिय सभा दौरान स्केच आर्टिस्ट सुनील लड्ढा ने विद्यार्थियों को उनके द्वारा देश-विदेश में तैयार किए गए स्केच तथा स्केचिंग के गैजेट्स को दिखाया तो विद्यार्थियों ने रुचिपूर्वक देखा और सराहा।

पंजाब नैशनल बैंक punjab national bank

मंडल शस्त्रा विभाग, तृतीय तल, एलआईसी भवन
सब सिटी सेन्टर, रेती स्टैंड, उदयपुर, राजस्थान
फोन नं.: 0294-2688030, ई-मेल: cs8328@pnb.co.in

सेवामें, दिनांक: 06.07.2024

श्री सुरेश चन्द्र लोहार पुत्र श्री राम लाल लौहार 6-बी, शिव नगर, दक्षिण सुन्दरवास, सोफिया स्कूल के पास, उदयपुर, राजस्थान मोबाईल नं. 9413811962	श्री सुरेश चन्द्र लोहार पुत्र श्री राम लाल लौहार न्यू लक्ष्मी डेयरी, शिव चौक, शिव मंदिर के पास उत्तरी सुन्दरवास, उदयपुर, राजस्थान मोबाईल नं. 9413811962

संदर्भः चल घरेलू सामानों को स्थानांतरित करने/हटाने के संबंध में।

प्रिय महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय के संदर्भ में, जैसा कि आप जानते हैं कि एनपीए खाता मैसर्स कुशल फर्टिलाइजर्स प्राइवेट लिमिटेड में बंधक आवासीय भूमि और भवन जो श्री सुरेश चंद्र लोहार पुत्र श्री राम लाल लोहार के नाम पर प्लॉट नंबर 5-बी, खसरा नंबर 254-262, राजस्व गांव सुंदरवास, जिला उदयपुर, राजस्थान के दक्षिण भाग में स्थित है, का भौतिक कब्जा बैंक द्वारा पूर्व में दिनांक 23.06.2023 को ले लिया गया हैं।

इसके अलावा बैंक ने दिनांक 27.05.2024 को उक्त संपत्ति की ई-नीलामी आयोजित की है जो सफल रही और अब बैंक को नीलामी क्रेता को संपत्ति का भौतिक कब्जा देना होगा। इसलिए हमने आपको दिनांक 18.06.2024 के पत्र के माध्यम से सलाह दी कि आप दिनांक 24.06.2024 को या उससे पहले उक्त परिसर में रखे इन्वेंट्री के अनुसार चल सामान को हटा दे एवं यह भी सूचित किया गया था कि ऐसा न करने पर बैंक सरफेसी अधिनियम, 2002 के प्रावधानों के अनुसार उसे आपकी लागत पर उपयुक्त वैकल्पिक किराए के स्थान पर स्थानांतरित कर देगा।

इसके अलावा जैसा कि आपने डाक द्वारा भेजे गए दिनांक 18.06.2024 के पत्र को स्वीकार करने से इनकार कर दिया है और साथ ही हमारी सहायक टीम से हाथ से इसे प्राप्त करने से इनकार कर दिया है, इसलिए हम आपको यह सूचित करने के लिए यह नोटिस प्रकाशित कर रहे हैं कि अब हम चल सामान को किराए के स्थान पर स्थानांतरित कर रहे हैं क्योंकि हमें क्रेता को संपत्ति का भौतिक कब्जा सौंपना है और इस प्रक्रिया के दौरान यदि कोई नुकसान/क्षति होती है, तो यह पूरी तरह से आपके जोखिम और जिम्मेदारी पर होगा।

इस मामले को अत्यधिक महत्व दिया जाना चाहिए।

प्राधिकृत अधिकारी
पंजाब नैशनल बैंक

शहीद मेजर मुस्तफा के परिजन शौर्य चक्र से सम्मानित

शहीद मेजर मुस्तफा की माता फातेमा बोहरा और पिता जकीउद्दिन बोहरा को शौर्य चक्र से सम्मानित किया।

उदयपुर, (कासं)। खेरोदा (उदयपुर) के लाल, अमर शहीद मेजर मुस्तफा बोहरा द्वारा अपना कर्तव्य पालन करते हुए देश के लिए सर्वोच्च बलिदान दिए जाने के उपरांत, शुक्रवार को भारत की सर्वोच्च सेनाध्यक्ष राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने, नई दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन में, एक भव्य गरिमामय समारोह में शहीद मेजर मुस्तफा की माता फातेमा बोहरा और पिता जकीउद्दिन बोहरा को शांतिकाल में अप्रतिम वीरता के लिए सर्वोच्च सम्मानए शौर्य चक्र से सम्मानित किया।

इस अवसर पर उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी भी उपस्थिति थे। शहीद मेजर मुस्तफा ट्रस्ट के उपसचिव वीरेंद्र सिंह सोलंकी ने बताया कि अमर शहीद मेजर मुस्तफा बोहरा के परिजन शौर्य चक्र सम्मान प्राप्त करने के बाद 7 मई को एयर इंडिया की उडान संख्या एआई .469 द्वारा नई दिल्ली से रवाना होकर दिन में 2.15 बजे डबोक एयरपोर्ट, उदयपुर पहुंचेंगे।जहां वल्लभनगर विधायक उदयलाल डांगी, समस्त प्रमुख राजनैतिक दलों के पदाधिकारियों, बोहरा समाज सहित अनेक सामाजिक,धार्मिक संस्थाओं द्वारा शहीद मेजर मुस्तफा के परिजनों का भव्य स्वागत किया जाएगा।

मांजी का मंदिर में गंदगी का ढेर

उदयपुर, (कासं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा कार्यकाल संभालते ही प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत मिशन को लेकर व्यापक स्तर पर मॉनिटरिंग की जा रही है वहीं स्वच्छ भारत मिशन शहरी और ग्रामीण के संबंधित दोनों विभागों के उच्च अधिकारियों को भी सख्त निर्देश दिए गए हैं कि इस अभियान में किसी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण भारत सरकार एनएससी के गैर सरकारी सदस्य और स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के तहत राजस्थान सरकार द्वारा नियुक्त प्रदेश समन्वयक केके गुप्ता द्वारा शनिवार प्रातः श्री सरदार स्वरुप श्याम जी (मांजी का मंदिर) उदयपुर में भगवान के दर्शन लाभ प्राप्त कर मंदिर परिसर का निरीक्षण किया गया, तो यह पाया गया कि यहां पर गंदगी के ढेर लगे हुए हैं एवं राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग के तहत आने वाले इस मंदिर में उचित साफ-सफाई की व्यवस्था के प्रति विभाग के अधिकारी गंभीर नहीं है।

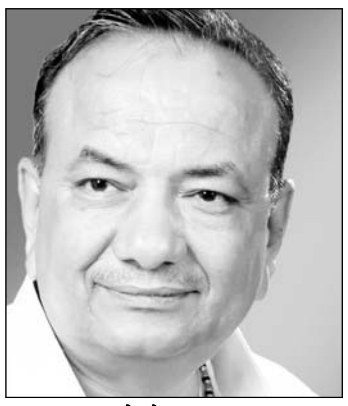

के.के. गुप्ता

गुप्ता ने बताया कि मंदिर प्रांगण में चारों तरफ कचरा, खाली बोतले, दीवारों पर पोस्टर, बगीचे में भारी कचरा, मंदिर जाने वाली गली में गन्दगी, जंगली पेड, दीवारों में वृक्ष आदि देखने मिले। मंदिर जाने वाली गली में पास की बिल्डिंग वालो ने छज्जे निकाल रखे है, ए.सी. का कम्प्रेशर, प्रांगण में चिमनी का आउट लेट निकाल रखा है। महिला एवं पुरुष के बने शौचालय की स्थिति दयनीय थी दरवाजे टूटे हुए थे अन्दर गन्दगी थी। मंदिर प्रांगण में दो बगीचे करीब दो बने हुए है दोनों में जंगली घास एवं कचरे का ढेर लगा हुआ है। पिछोला झील में बनी सीढियों में काई मंदिर प्रांगण में झील में बनी सीढियों पर काई जमी हुई है तथा मंदिर प्रांगण से गन्दगी झील में डाली जा रही है जिससे कभी भी दुर्घटना की सम्भावनाये है। पुरातत्व को समाप्त मंदिर के चारों तरफ झाली बाउण्ड्री वाल बनी हुई है जो जगह-जगह से क्षतिग्रस्त हो चुकी है तथा जगह-जगह लोहे के एंगल लगा रखे है जो पुरातत्व को समाप्त कर रही है। दीवारों पर चारो तरफ तार लटक रहे है तथा जगह-जगह से दिवारों में क्रेक आ गए है। जो सीसी टीवी कैमरे लगे हुए है उनके तार टूट है।

कार्यालय ग्राम पंचायत बेदलाखुर्द
पंचायत समिति-बड़गांव, जिला-उदयपुर (राज.)

क्रमांकः-ग्रा.पं.बेखु/2024-25/ दिनांक-

-:खुली निविदा सूचना:-

ग्राम पंचायत बेदलाखुर्द में साफ-सफाई हेतु निविदा दिनांक 09.07.2024 सायं 6.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है।

विस्तृत विवरण/ जानकारी sppp.rajasthan.gov.in व eproc. rajasthan. gov.in पर देखी जा सकती है।

UBN No - ZUD2425WSRCOOO61

सरपंच
ग्राम पंचायत बेदलाखुर्द
प.स.-बड़गांव जिला-उदयपुर

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत बेदलाखुर्द
प.स.-बड़गांव जिला-उदयपुर

असम के राज्यपाल को गार्ड ऑफ ऑनर

उदयपुर , (कासं)। असम राज्य के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया 15 जुलाई तक के प्रवास हेतु शनिवार को अपने गृह नगर उदयपुर पहुंचे जहां एयरपोर्ट पर प्रशासन ने गार्ड ऑफ ऑनर देखकर उन्हें सम्मान दिया तत्पश्चात भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारी कार्यकर्ताओं एवं विशिष्ट जनों ने उनका स्वागत अभिनंदन किया।

भाजपा मीडिया संभाग प्रभारी चंचल कुमार अग्रवाल ने बताया कि डबोक एयरपोर्ट पर टर्मिनल से बाहर आते ही जिला प्रशासन ने उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया तत्पश्चात भारतीय जनता पार्टी के लोकसभा सांसद मन्नालाल रावत,शहर विधायक ताराचंद जैन,वल्लभनगर विधायक उदयलाल डांगी,भारतीय जनता पार्टी देहात जिला अध्यक्ष चंद्रगुप्त सिंह चौहान, शहर जिला उपाध्यक्ष तख्तसिंह शक्तावत, अतुल चंडालिया, पूर्व जिला प्रमुख शांतिलाल मेघवाल,ओबीसी मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष जगदीश शर्मा, अनुसूचित जाति मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष शैलेंद्र चौहान, भाजपा आपदा राहत एवं सहयोग विभाग प्रदेश संयोजक डॉ जिनेंद्र शास्त्री शहर जिला कोषाध्यक्ष रवि नाहर शहर जिला मंत्री दीपक बोलिया गजेंद्र भंडारी करण सिंह शक्तावतएअमृत मेनारिया बडगांव उप प्रधान प्रताप सिंह राठौड आदि बडी संख्या में शहर एवं देहात के कार्यकर्ता पदाधिकारी उपस्थित थे।

विद्यापीठ में डॉ. डी. एस. कोठारी की जयंती मनाई

डॉ. डी.एस. कोठारी की जयंती पर किया नमन करते कुलपति कर्नल प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ।

उदयपुर , (कासं)। वैज्ञानिक एवं स्वप्न दृष्टा डॉ. डी.एस. कोठारी की 118वीं जयंती पर जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि के सभागार में पुष्पांजली एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अध्यक्षता करते हुए कुलपति कर्नल प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि देश में जो भी शिक्षा नीतियां बनी उसकी बुनियाद में डॉ. कोठारी का मूल तत्व निहित है , अगर उनकी बनाई नीति का क्रियान्वयन ससमय किया जाता तो आज देश कई ज्यादा ऊंचाइयों पर होता। वे असल में युग दृष्टा थे, जो योजना उन्होंने दी वर्तमान में उसे ही महत्व मिला। उन्होंने मातृभाषा व त्रिभाषा फॉर्मूला देकर सामाजिक दक्षता, एकता व समता का बीज मंत्र दिया, जिससे विद्यार्थी अन्तःकरण में छिपी क्षमताओं को बाहर विकसित कर सके। देश की शिक्षा और रक्षा के क्षेत्र में डॉ. डी. एस. कोठारी का योगदान विकसित भारत के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। उन्होंने कहा कि शान्ति , अहिंसा, सामाजिक समरसता और वैश्विक एकता के स्वप्न दृष्टा के सम्मुख जब राष्ट्र रक्षा की चुनौती आन पड़ी, तब तारा भौतिकी में अपने विशेष ज्ञान का प्रयोग कर डॉ. कोठारी ने ऐसे आयुध का आविष्कार किया, जिससे भारत-पाक युद्ध के दौरान भारत की सेना ने इसी आयुध से पाक सेना के पेटन टैंकों को नष्ट कर दिया।इस अवसर पर कुल प्रमुख भंवर लाल गुर्जर, पीठ स्थविर डॉ. कौशल नागदा, परीक्षा नियंत्रक डॉ. पारस जैन, डॉ. भवानी पाल सिंह राठौड, डॉ. चन्द्रेश छतलानी, निजी सचिव केके कुमावत, जितेन्द्र सिंह, डॉ. हेमंत साहू, लहरनाथ, डॉ. यज्ञ आमेटा, भगवती लाल श्रीमाली, विजयलक्ष्मी सोनी, विकास, डॉ. ललित, सहित कार्यकर्ताओं ने डॉ. कोठारी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया।

संपूर्णता अभियान कार्यक्रम शुरू

भीम, (निसं)। संपूर्णता अभियान कार्यक्रम आकांक्षी ब्लॉक भीम का शुभारंभ पंचायत समिति सभागार में प्रधान बीरमसिंह सिंह चौहान की अध्यक्षता में हुआ। कार्यक्रम के दौरान नीति आयोग प्रतिनिधि रेणुका अठावाल एसीईओ अनिल सनाढ्य, उपखंड अधिकारी हंसमुख कुमार ,विकास अधिकारी विजय बहादुर पाल, बीसीएमओ प्रवीण सैनी, मुख्य योजना अधिकारी राजकुमार त्रिवेदी, सांख्यिकी अधिकारी माया मीणा ,दीपक शर्मा ,ब्लॉक हेल्थ सुपरवाइजर भेरूलाल सावली, स्वयं सहायता समूह राजीविका प्रतिनिधियों , जनसहभागियों को उपखंड अधिकारी हंसमुख कुमार ने सरकारी विभिन्न योजनाओं का लाभ आम जनता तक पहुंचाने में सत प्रतिशत लक्ष्य अर्जित करने के निर्देश दिए। नीति आयोग के रेणुका अग्रवाल ने बताया कि नीति आयोग के सहयोग से 30 सितंबर तक चलने वाले संपूर्णता अभियान के तहत स्वास्थ्य, पोषण ,कृषि एवं राजिविका से संबंधित विभिन्न गतिविधियों का आयोजन होगा। राजकीय बालिका विद्यालय की छात्राओं एएनएम आंगनबाड़ी कार्यकर्ता स्वयं सदस्यों की महिलाओं प्रगतिशील किसानों आदि जागरूकता रैली प्रधान बीरमसिंह चौहान विकास अधिकारी विजय बहादुर पाल एवं खंड मुख्य चिकित्सा अधिकारी प्रवीण कुमार सैनी के सानिध्य में पंचायत समिति से प्रारंभ होकर मुख्य बाजार डाक बंगला चौराहे होते पंचायत समिति सभागार पहुंची जहां कार्यशाला का आयोजन किया गया।

राजस्थान सरकार-कालेज शिक्षा

कार्यालय प्राचार्य सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय, भीम

Email:prin.gcbhim@ gmail.com फोन नं.-02951-251024
क्रमांक-एफ(1) स्था/रामभी/2024/199 दिनांक-7.7.2024

प्रेस विज्ञप्ति

आयुक्तालय कालेज शिक्षा, राजस्थान जयपुर के पत्र क्रमांक -एफ 1(02) विद्या सम्बल/ आकाशि /गे.फे./ दिशा निर्देश/ 21-00638/पार्ट 1 राजकाज रैफरेन्स नं 8029676 दिनांक 21.06.2024 की अनुपालना में राज्य सरकार द्वारा घोषित विद्या सम्बल योजना के अन्तर्गत राजस्थान लोक सेवा आयोग से चयनित अभ्यर्थी अथवा स्थानान्तरण अथवा कार्य व्यवस्था के तहत शिक्षक उपलब्ध होने तक या सत्र 2024-25 में गेस्ट फेकल्टी से पाठ्यक्रम पुर्ण कराये जाने हेतु 24 सप्ताह अथवा 28.02.2025 तक अथवा प्रथम या तृतीय सेमेस्टर का पाठ्यक्रम पुर्ण कराये जाने तक जो भी पहले हो (अधिकतम 24 साप्ताहिक घण्टे अनुसार) 800/-रूपये प्रति कालांश मानदेय के आधार पर गेस्ट फेकल्टी (पूर्णतया अस्थाई) के रूप में इस महाविद्यालय में लगाये जाने हेतु दिनांक-13 /7/2024 सांय 5 बजे तक निम्नलिखित पदों पर आवेदन पत्र आमंत्रित बिये जाते है। आवेदन पत्र महाविद्यालय के कार्यालय में जमा करवाए।

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	विषय (प्रत्येक विषय में एक पद)
1.	सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, भीम	हिन्दी,इतिहास,अर्थशास्त्र और राजनिति विज्ञान

नोट-1-सभी पद आयुक्तालय कालेज शिक्षा राजस्थान, जयपुर द्वारा अनुशासित किये जाने पर प्रभावी होगी।

2- आवेदन पत्र महाविद्यालय की वैबसाइट https:\\hte.rajasthan.gov.in\college\gc bhim पर circular से डाउनलोड की जा सकती है।

3- आवेदन हेतु न्यूनतम योग्यता, दिशा निदेश, शर्त एव शपथ पत्र आदि आयुक्तालय कालेज शिक्षा राजस्थान, जयपुर की वेबसाइट https:\\hte.rajasthan.gov.in\college पर उपलब्ध है उपर्युक्त सभी पदो पर की जाने वाली प्रकिया आयुक्तालय कालेज शिक्षा राजस्थान जयपुर के आदेशों के अधीन रहेगी।

4- किसी भी विषय में न्यूनतम आवश्यक प्रवेशित विद्यार्थी नहीं होने पर उस विषय की भर्ती प्रक्रिया निरस्त समझी जावे।

प्रेम सिंह चौहान, प्राचार्य/नोडल अधिकारी
सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय
भीम (राजसमन्द)

रतनपुर बॉर्डर पर 70 लाख का सोना, 26 लाख की नगदी पकड़ी, तीन गिरफ्तार

तीनों आरोपी बैग लेकर पैदल जा रहे थे, संदिग्ध होने पर पुलिस ने रोककर तलाशी ली

डूंगरपुर, (निसं)। बिछीवाड़ा थाना पुलिस ने राजस्थान-गुजरात के रतनपुर बॉर्डर पर पैदल जा रहे तीन लोगों से लाखों का सोना और कैश पकड़ा है। तीन थैलों में 70 लाख का सोना और 26 लाख रुपए का कैश मिला है। पुलिस तीनों ही आरोपियों से नकदी और सोने के बारे में पूछताछ कर रही है।

बिछीवाड़ा थानाधिकारी ने बताया कि अवैध कारोबार करने वालों के खिलाफ अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत राजस्थान-गुजरात के रतनपुर बॉर्डर पर नाकाबंदी कर गाड़ियों की तलाशी ली जा रही थी। उदयपुर से अहमदाबाद नेशनल हाईवे-48 पर रतनपुर बॉर्डर पर तीन व्यक्ति गाड़ी से उतरे। तीनों पैदल-पैदल जा रहे थे। उनके पास पीठ पर थैले लटके हुए थे। संदिग्ध होने पर तीनों को रोका और पूछताछ की। इस पर तीनों ही घबरा गए। पुलिस ने उनके थैलों की तलाशी ली। थैलों में पैकेट बनकर सोने के जेवरात और कैश भरा हुआ था। तीनों ही लोग जेवरात और

- **पुलिस तीनों ही आरोपियों से नकदी और सोने के बारे में पूछताछ कर रही है**

कैश को लेकर कोई जवाब नहीं दे सके। इस पर पुलिस ने जेवरात और कैश पकड़ लिया।

पुलिस ने उनके पास से 962.05 ग्राम सोने के जेवरात और टुकडे बरामद किए हैं, जिसकी बाजार कीमत करीब 70 लाख रुपए बताई जा रही है। वहीं, 26 लाख 9 हजार 740 रुपए की नकदी पकड़ी है। पुलिस ने जेवरात और कैश ले जा रहे नरेंद्र कुमार जोगसन पुत्र गोंगाराम मेघवाल निवासी भेव, थाना पालडी जिला सिरोही, मुकेश कुमार पुत्र गणेशाराम मेघवाल निवासी उथमान थाना पालडी सिरोही और चंदूलाल पुत्र जैसाजी सेन निवासी कुम्हारों का वास गोल, थाना बारलूट सिरोही को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस तीनों से पूछताछ कर रही है।

रतनपुर बॉर्डर पर पैदल जा रहे तीन लोगों को लाखों का सोना और नकदी के साथ गिरफ्तार किया।

चौरासी विधानसभा सीट उपचुनाव में बीएपी का कांग्रेस से गठबंधन से इंकार

चौरासी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) अकेले चुनाव लड़ेगी

उदयपुर, (कासं)। बांसवाड़ा डूंगरपुर संसदीय क्षेत्र के सांसद राजकुमार रोत ने चौरासी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में कांग्रेस से किसी भी प्रकार के गठबंधन से इंकार किया है। रोत के इस ऐलान के बाद इस सीट पर होने वाले उप चुनाव में त्रिकोणीय संघर्ष होने की संभावना है।

उल्लेखनीय है कि राजकुमार रोत के सांसद बनने के बाद चौरासी विधानसभा सीट खाली हो गई है। राजकुमार रोत चौरासी विधानसभा सीट से विधायक थे। भारतीय आदिवासी पार्टी (बीएपी) और कांग्रेस का गठबंधन हुआ था। राजकुमार रोत इंडिया गठबंधन से चुनाव लड़ा और बांसवाड़ा लोकसभा सीट से सांसद निवार्चित हुए। इसके पहले वे चौरासी विधानसभा क्षेत्र से भारत आदिवासी पार्टी के विधायक थे, सांसद बनने के बाद उन्होंने से इस्तीफा दे दिया। चौरासी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) अकेले चुनाव लड़ेगी। भारत आदिवासी पार्टी, भाजपा और कांग्रेस ने अपने-अपने प्रभारी नियुक्त कर दिए हैं।

जानकारी के अनुसार डूंगरपुर जिले की चौरासी विधानसभा सीट पर पिछले दो चुनावों से भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) का कब्जा है, बीएपी के राजकुमार रोत यहां से लगातार दूसरी बार विधायक बने थे। पिछले चुनाव में राजकुमार रोत ने भाजपा के सुशील कटारा को 70 हजार मतों से हराया था। चौरासी विधानसभा सीट पर कांग्रेस की

- **सांसद राजकुमार रोत ने चौरासी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में कांग्रेस से किसी भी प्रकार के गठबंधन से इंकार किया**
- **सांसद राजकुमार रोत के इस ऐलान के बाद इस सीट पर होने वाले उप चुनाव में त्रिकोणीय संघर्ष होने की संभावना है**

जमानत जब्त हो गई थी। चौरासी विधानसभा क्षेत्र में बीएपी की स्थिति मजबूत मानी जा रही है। विधायक के उप चुनाव में बीएपी इस सीट पर कब्जा बनाए रखने के लिए पूरा प्रयास करेगी। वहीं सत्तारूढ पार्टी भाजपा भी इस बार बीएपी का गढ़ ढहाने का इरादा लेकर मजबूती से चुनावी मैदान में उतरने के मूड में है। पिछले चुनाव में कांग्रेस पार्टी यहां तीसरे स्थान पर थी, कांग्रेस के उम्मीदवार ताराचंद भगोरा की जमानत जब्त हो गई थी।

चौरासी सीट पर उप चुनाव के लिए संभावित उम्मीदवारों की बात करें तो भाजपा से पूनावाडा सरपंच मनोहरलाल डामोर, बडगामा सरपंच कांतिलाल अहारी, भचडयिा सरपंच गट्टूसिंह डामोर, गंधवा सरपंच ईश्वर विहात, पूर्व प्रधान महेंद्र बरजोड में से कोई एक हो सकता है। जबकि कांग्रेस के संभावित उम्मीदवारों में कांग्रेस से पूर्व प्रधान निमिषा भगोरा, सीमलवाडा सरपंच रूपचंद भगोरा, भादर सरपंच विनोद कटारा, कारीलाल बुझ और महेंद्र भगोरा के नाम शामिल है। बीएपी में पोपट खोकरिया और अनिल चिखली के नाम चर्चा में है, लेकिन पार्टी में उम्मीदवार चयन को लेकर बनी हुई सलेक्शन प्रणाली में कोई ओर नाम भी आ सकता है। चुनावी समीकरण की बात करें तो लोकसभा चुनाव में बीएपी और कांग्रेस का गठबंधन हुआ था, जिसकी वजह से कांग्रेस ने बीएपी के राजकुमार रोत को अपना समर्थन देते हुए उम्मीदवार नहीं उतारा था।

गठबंधन की बात आती है तो उम्मीदवार किस पार्टी का होगा यह आने वाले समय में ही तय होगा, लेकिन यहां गठबंधन के आसार कम ही है, क्योंकि लोकसभा चुनाव परिणाम आने के बाद नवनिर्वाचित सांसद राजकुमार रोत ने कांग्रेस से गठबंधन की बात को नकारते हुए कहा था कि कांग्रेस ने उन्हें समर्थन दिया था, गठबंधन नहीं हुआ था।

बीएपी अपनी परंपरागत और मजबूत सीट पर किसी भी पार्टी से समझौता नहीं करना चाहेगी, इसलिए चौरासी सीट पर उप चुनाव में त्रिकोणीय मुकाबला होने के आसार हैं। उपचुनाव में भाजपा भी सरकार होने का फायदा उठाते हुए चौरासी सीट पर पूरी ताकत लगाने के मूड में है।

ट्रक ने 66 भेड़ों सहित चरवाहे को कुचला

जैसलमेर, (नि.सं.)। जैसलमेर-बाड़मेर सड़क मार्ग पर कई दुर्घटनाएं होने के उपरांत भी प्रशासन कोई उपाय कर नहीं पा रहा है। बीती रात्रि को जैसलमेर जिले के देवीकोट कस्बे में सड़क हादसे में एक चरवाहे और 66 भेड़ों की मौत हो गई। हादसे की जानकारी मिलने पर देवीकोट पुलिस मौके पर पहुंची और चरवाहे का शव जवाहर हॉस्पिटल की मोर्चरी में रखवाया। पुलिस अब सीसीटीवी आदि की मदद से हादसे में शामिल गाड़ी की तलाश कर रही है।

देवीकोट पुलिस चौकी के एएसआई दीपसिंह ने बताया कि कि बीती रात करीब एक बजे चरवाहे हनीफ खान (30) पुत्र सुमेर खान, मालकों की ढाणी, रामदेवरा निवासी को ट्रक ने टक्कर मारकर

- **मृतक के परिजनों ने गाड़ी की तलाश कर ड्राइवर पर हत्या का मामला दर्ज करवाने व मुआवजे की मांग की**
- **जैसलमेर-बाड़मेर सड़क मार्ग पर हुआ हादसा, सीसीटीवी से गाड़ी की तलाश कर रही है पुलिस**

चरवाहे सहित 66 भेड़ों को मौत के घाट उतार दिया। जैसलमेर के राजकीय जवाहर हॉस्पिटल में मृतक के परिजन मॉर्च्यूरी के आगे इकट्ठा हो गये और गाड़ी की तलाश कर ड्राइवर पर हत्या का मामला दर्ज करवाने और मुआवजे की मांग की। ग्रामीण सफियत ने बताया कि प्रशासन की तरफ से कोई भी नुमाइंदा धरना स्थल पर नहीं आया है। इसको लेकर ग्रामीणों में काफी रोष है। जब तक ट्रक ड्राइवर नहीं पकड़ा जाएगा तब तक धरना नहीं उठाया जाएगा।

एएसआई दीपसिंह ने बताया कि देवीकोट कस्बे से लगते एनएच 68 पर छोड़ गांव के पास तीन चरवाहे अपनी भेड़ें लेकर आ रहे थे। 200 के लगभग भेड़ें सड़क पर चल रही थीं। इसी दौरान एक ट्रक तेज गति से आया और भेड़ों समेत चरवाहे हनीफ खान को कुचलता हुआ आगे निकल गया। साथ में चल रहे दो अन्य चरवाहों ने हादसे की जानकारी देवीकोट चौकी को दी। हनीफ भोपा गांव के किसी किसान की भेड़ों को चराने का काम करता था। बीती रात हनीफ दो अन्य चरवाहों देरावरसिंह व अमृतसिंह के साथ रामगढ़ से भोपा गांव जा रहा था। तीनों के पास लगभग 200 भेड़ें थी। हनीफ खान सबसे आगे चल रहा था। उसी दौरान जैसलमेर की तरफ से एक ट्रक तेज गति से आया और हनीफ खान और भेड़ों को रौंदते हुए चला गया। एएसआई दीपसिंह ने बताया कि हादसे में लगभग 66 भेड़ों कि मौत हो गई जिनमें 30 भेड़ें हनीफ खान की भी शामिल है। इसके अलावा 10 भेड़ें घायल हो गई। पुलिस ने हनीफ खान के शव को जवाहिर हॉस्पिटल की मोर्चरी में रखवाया और सीसीटीवी आदि के आधार पर ट्रक की खोज शुरू की। एएसआई दीपसिंह ने बताया कि ट्रक बाड़मेर की तरफ गया है। हम ट्रक की तलाश कर रहे हैं।

छत से गिरकर युवक की मौत

भीलवाड़ा, (निसं)। लघुशंका के लिए रात में नींद से उठा युवक छत से नीचे गिर गया। हादसे में युवक की मौत हो गई। घटना, गंगापुर थाने के करणजी की खेड़ी गांव में हुई। पुलिस ने पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। गंगापुर थाना पुलिस ने बताया कि करणजी की खेड़ी निवासी अंबालाल (43) पुत्र चुन्नीलाल बैरवा बीती रात छत पर सो रहा था। शुक्रवार रात 11.50 बजे वह लघुशंका के लिए नींद से उठा। छत पर दीवार नहीं होने से वह असंतुलित होकर नीचे जा गिरा। गंभीर रूप से घायल अंबालाल को परिजन पहले गंगापुर और बाद में जिला अस्पताल ले गये, जहां डॉक्टर्स ने उसे मृत घोषित कर दिया। शव को पोस्टमार्टम के बाद शनिवार को परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया।

आंधी-बारिश से फैक्ट्री की दीवार ढही, तीन की मौत

बीकानेर, (निसं)। मानसून की दूसरी ही बारिश ने बीकानेर में कहर बरपा दिया। बीछवाला थाना इलाके के शोभासर गांव में निर्माणाधीन फैक्ट्री की दीवार ढहने से मां-बेटी समेत तीन जनों की मौत हो गई। हादसे का पता चलने पर बीछवाल पुलिस मौके पर पहुंची। घायलों को मलबे से निकाल कर पीबीएम अस्पताल के ट्रोमा सेंटर पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया। हादसे का पता चलने पर जिला प्रशासन के अधिकारी भी मौके पर पहुंचे।

बीछवाल एसएचओ नरेश निर्वाण ने बताया कि शोभासर के पास फैक्ट्री का निर्माण कार्य चल रहा है। तेज तूफान में फैक्ट्री की दीवार ढह गई। दीवार के मलबे में श्रमिक भोपाल निवासी टीना (26) पत्नी दीवान सिंह, उसकी ढाई वर्षीय बेटी मनीषा एवं क्रेन चालक औरंगाबाद निवासी संजय पुत्र रामयज्ञ दब गए। हादसे की सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने वहां पहुंच कर अन्य श्रमिकों की मदद से तीनों को मलबे से निकाल कर 108 एम्बुलेंस से पीबीएम अस्पताल के ट्रोमा सेंटर पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया।

जहाजपुर प्रधान के निलंबन के विरोध में कोटड़ी बंद रहा

प्रधान सीता देवी के निलंबन के विरोध में कोटड़ी के बाजार बंद रहे।

भीलवाड़ा, (निसं)। राज्य सरकार ने जहाजपुर प्रधान सीता देवी गुर्जर को नियमित बैठकें आयोजित नहीं करने सहित अन्य मामलों को लेकर शुक्रवार को पद से निलंबित करने के मामले को लेकर शनिवार को कांग्रेस के आव्हान पर कोटड़ी कस्बे को बंद करवाया। वहीं श्रीचारभुजानाथ मन्दिर से उपखण्ड कार्यालय पहुंच कर ज्ञापन सौंपा।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव धीरज गुर्जर की माता जहाजपुर पंचायत समिति की प्रधान सीता देवी गुर्जर को ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग के अतिरिक्त आयुक्त एवं शासन उपसचिव ने आदेश जारी कर निलंबित कर दिया। इस आदेश को लेकर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के आव्हान पर शरनिवार को सुबह से ही कांग्रेस के कार्यकर्ता एवं गुर्जर समाज के लोग मुख्यालय स्थित चारभुजानाथ मन्दिर पर पहुंचना शुरू हुए, सामूहिक रणनीति तैयार कर मन्दिर से आदेश के विरोध में भाजपा सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए सदर बाजार, पुराना

- **कांग्रेस के कार्यकर्ता एवं गुर्जर समाज के लोगों ने विरोध यात्रा निकाली**

बस स्टैण्ड, नेहरू नगर होते हुए उपखण्ड कार्यालय पहुंच नारेबाजी कर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का पुतला जलाकर विरोध प्रदर्शन किया तथा राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौंपा।

इस दौरान लोगों में आदेश को लेकर भारी विरोध नजर आ रहा था। वहीं कांग्रेस के पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं नेइसे राजनैतिक द्वेशता के की गई कार्रवाई बताया। अमावस्या के बाद एकम पर बाजार बन्द होने से कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को बाजार बन्द कराने के लिए किसी प्रकार की मशक्कत नहीं करनी पड़ी। उधर, भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ता जहाजपुर में प्रधान पद से निलंबित करने का विरोध प्रदर्शन जहाजपुर की बजाय कोटड़ी में करने को औचित्यहीन बताया।

एएसआई की ड्यूटी के दौरान मौत

जैसलमेर, (निसं)। सीमा सुरक्षा बल के एएसआई की अमरनाथ यात्रा में ड्यूटी के दौरान कठुआ गांव में मौत हो गई। शनिवार को 154 बटालियन बीएसएफ जैसलमेर के जवान एएसआई पुरुषोत्तमसिंह की कार नहर में गिरने से डूबने से मौत हो गई। एएसआई पुरुषोत्तम सिंह (56) बटालियन समेत अमरनाथ यात्रा में ड्यूटी के लिए जैसलमेर से गए थे। ड्यूटी के दौरान कठुआ (जम्मू-कश्मीर) में गाड़ी से जाते समय गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया और गाड़ी नहर में गिर गई जिससे उनकी मौत हो गई। पुरुषोत्तमसिंह हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिले के रहने वाले थे। उनकी पोस्टिंग जैसलमेर में थी।

यूडी टैक्स बना 14.56 लाख, वसूला सिर्फ 27 हजार

बीकानेर, (निसं)। भले ही राज्य सरकार ने सभी निकायों को अपनी निजी आय में वृद्धि करने के निर्देश जारी किए हुए हों, लेकिन नगर निगम बीकानेर अपने ही राजस्व कोष को हानि पहुंचाने में जुटा हुआ है। नगर निगम की वित्तीय वर्ष 2023-24 की ऑडिट में एक होटल को नगरीय विकास कर के रूप में 14.30 लाख रुपए का अनुचित लाभ दिए जाने की बात कही है। ऑडिट के मेमो नंबर 09 एक जुलाई 2024 में बताया गया है कि निगम की ओर से गंगानगर रोड स्थित एक होटल का वर्ष 2022 में हेरिटेज होटल के रूप में पंजीकरण होने के बावजूद अप्रेल 2016 से मार्च 2022 तक नगरीय विकास कर की गणना औद्योगिक डीएलसी दरों से की गई। इससे होटल को अनुचित लाभ पहुंचाया गया।

ऑडिट मेमो के अनुसार नगर निगम बीकानेर की ओर से 9 मार्च 2024 को आवेदक से बिना आवेदन पत्र, हेरिटेज होटल के रूप में राजस्थान, भारत सरकार

- **नगर निगम बीकानेर अपने ही राजस्व कोष को हानि पहुंचाने में जुटा हुआ है**

की ओर से जारी पंजीकरण प्रमाण पत्र प्राप्त किए बिना एवं तत्कालीन आयुक्त के मौखिक आदेशों के आधार पर ही अवधि अप्रेल 2016 से मार्च 2024 की बकाया राशि 14 लाख 56 हजार 772 रुपए को औद्योगिक डीएलसी दरों से संशोधित गणना करते हुए केवल 27155 रुपए का बिल जारी किया गया। इससे निगम कोष को 14 लाख 29 हजार 617 रुपए की हानि हुई। लेखा परीक्षा के दौरान यह भी पाया गया कि इस होटल की ओर से अपने होटल के निर्माण क्षेत्र में विस्तार करने के लिए निगम में आवेदन किया गया था। इसके अनुसार भूमि का कुल क्षेत्रफल 12212.64 वर्ग मीटर था, जिसमें से पंजीकृत आर्किटेक्ट की रिपोर्ट के अनुसार कुल निर्मित क्षेत्रफल 2685.90 वर्ग मीटर अथवा 3169.36 वर्ग गज निर्मित क्षेत्र था, लेकिन निगम की ओर से होटल से 1665.44 वर्ग गज क्षेत्रफल के अनुसार ही नगरीय विकास कर की गणना की गई है, जिससे निगम को राजस्व हानि हुई है।

ऑडिट मेमो के अनुसार श्रीगंगानगर रोड स्थित इस होटल का हेरिटेज श्रेणी में पंजीकरण प्रमाण मार्च 2022 का है। जबकि निगम की ओर से होटल को इस श्रेणी का लाभ वर्ष 2016 से ही दे दिया गया। ऑडिट मेमो के अनुसार होटल की ओर से पर्यटन विभाग राजस्थान सरकार से हेरिटेज श्रेणी के अंतर्गत पंजीयन करवाया गया था। इसके लिए पर्यटन विभाग की ओर से होटल को प्रमाण पत्र 25 मार्च 2022 न्यू एप्लीकेशन के जरिये जारी किया गया था। उक्त पंजीकरण से पूर्व होटल एक पांच सितारा होटल था, जिसके लिए निगम की ओर से वाणिज्यिक डीएलसी दरों के अनुसार मांग पत्र नगर निगम की ओर से भी भेजा जा रहा था।

सहोदरा नदी के पानी में फंसे लोगों को एसडीआरएफ टीम ने बचाया

ग्राम कुरेडी में सहोदरा नदी के बाढ़ के पानी में फंसे लोगों को एसडीआरएफ टीम ने रेस्क्यू किया।

टोंक, (निसं)। पीपलू उपखंड क्षेत्र के ग्राम कुरेडी में सहोदरा नदी के बाढ़ के पानी में फंसे लोगों को एसडीआरएफ टीम ने पहुंचकर रेस्क्यू किया। तहसीलदार इंद्रजीत सिंह चौहान ने बताया कि ग्राम कुरेडी में सहोदरा नदी के पास बने मकान पर एक परिवार फंसा हुआ था, जिसकी सूचना मिलने पर मौके पर पहुंच एसडीआरएफ टीम को बुलाकर रेस्क्यू करवाया। तहसीलदार ने बताया कि ग्राम कुरेड़ी निवासी रामबाबू, शंकरलाल, रामा पत्नी दामोदर, हनुमान मीणा नदी के पास स्थित मकान पर शुक्रवार शाम से ही मकान की छत पर थे। जिनको शनिवार को एसडीआरएफ टीम ने सुरक्षित रेस्क्यू किया।

टोंक जिला कलेक्टर ने शनिवार को ग्राम बोरखंडी कला में तालाब टूटने

- **ग्राम कुरेडी में सहोदरा नदी के पास बने मकान पर एक परिवार फंसा हुआ था**
- **विधायक व जिला कलेक्टर ने बारिश से उपजे हालातों का जायजा लिया**

से बाढ़ से प्रभावित क्षेत्र का दौरा कर जायजा लिया है। जिला कलेक्टर ने ग्रामीणों से रूबरू होते हुए उनकी समस्याओं को सुना। उपस्थित अधिकारियों को तुरंत ग्रामीणों को राहत पहुंचाने के निर्देश दिए।

इसी प्रकार पीपलू उपखंड क्षेत्र के संदेडा, संदेडा फार्म, हरिपुरा, भूरावली, पीपलू में बारिश से उपजे हालातों का क्षेत्रीय विधायक रामसहाय वर्मा ने पहुंचकर जायजा लिया। विधायक ने प्रशासनिक अधिकारियों को आमजन को राहत पहुंचाने के निर्देश दिए। ग्रामीणों ने हरिपुरा से सौंधीफल तक पक्की सड़क बनाए जाने की मांग की। इस पर विधायक ने कहा कि सड़क बनाए जाने को लेकर प्रस्ताव बजट में दिया हुआ है। जल्द ही इस मार्ग पर पक्की सड़क का निर्माण होगा, जिससे भविष्य में परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी तरह भूरावली में पानी निकासी को लेकर ग्रामीणों की शिकायत पर पंचायत समिति विकास अधिकारी को निदान के निर्देश दिए।

बनास नदी पर बनाया ईसरदा कॉपर डेम ओवरफ्लो हुआ

शनिवार सुबह बनास नदी में पानी की आवक बढ़ने से लबालब भरकर कॉपर डेम ओवरफ्लो हो गया।

चौरु/उनियारा, (निसं)। बनेठा कस्बे के समीप बनास नदी पर ईसरदा मुख्य बांध निर्माण कार्य के लिए बनाया गया दस फट भराव क्षमता का कॉपर डेम शनिवार सुबह लगभग सात बजे बनास नदी में पानी की आवक बढ़ने से लबालब भरकर ओवरफ्लो हो गया। ईसरदा कॉपर डेम पर चादर शुरू हो गई। बनास नदी में पानी की आवक बढ़ने से चैनल गेटों में से पानी लबालब तरबतर होकर बांध निर्माण क्षेत्र में होकर बनास नदी में बहता हुआ नजर आया।

पिछले 24 घंटे से ईसरदा डेम डूब क्षेत्र केचमेंट एरिया में झमाइझम बारिश से शुक्रवार शाम से ही बनास नदी में जल स्तर बढ़ गया था, जिसके बाद तीन चैनल गेट खोल कर पानी की निकासी की गई थी। शनिवार सुबह अचानक बनास नदी में पानी की आवक बढ़ने से डेम लबालब हो कर ओवरफ्लो हो गया। बनास नदी में व्यर्थ बहने वाले पानी को उपयोगी बनाने के लिए तथा जयपुर, सवाई माधोपुर व दौसा जिलों को पेयजल उपलब्ध करवाने के लिए बनेठा ग्राम पंचायत से तीन किलोमीटर दूर बनास नदी पेटे पट राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2004 में ईसरदा बांध का निर्माण करवाने का निर्णय लिया गया था। वर्ष 2008 में लगभग 40 करोड़ रुपए की लागत से ईसरदा कॉपर डेम का निर्माण कराया गया था।

मुख्य बांध का निर्माण कार्य तीव्र गति से जारी था। इस दौरान बनास नदीं में पानी आ जाने से संवेदक को परेशानी का सामना करना पड़ा। आनन-फानन में शुक्रवार रातभर ईसरदा डेम परियोजना के अधिकारी एवं कर्मचारी सभी मशीनों को बनास नदी के किनारे पर लाने के लिए मशक्कत करते नजर आए फिर भी कई सामान पानी में डूब गया। गौरतलब है कि बनास नदीं पर ईसरदा मुख्य बांध का निर्माण कराया जा रहा है, जिसमें 28 ब्लॉक तैयार किए गए हैं और मशीनों के द्वारा निर्माण कार्य जोरों पर चल रहा था।

शनिवार सुबह ईसरदा काफर डेम के ओवरफ्लो होने के बाद सभी मशीनों को नदी में से बाहर निकाल लिया गया है। अब लगभग निर्माण कार्य बारिश के मौसम में बंद ही रहने की संभावना जताई जा रही है। बारिश के बाद ही दुबारा से ईसरदा मुख्य बांध परियोजना का निर्माण कार्य शुरू होने की उम्मीद लगाई जा रही है।

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड कोटपूतली

क्रमांक-535 दिनांक-28.06.2024

ई-निविदा सूचना संख्या 03/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से पथ निर्माण कार्यो हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं केन्द्रीय/राज्य सरकार व उनके अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के विभिन्न श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑन लाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

कार्य का नाम	सा.नि.वि. खण्ड कोटपूतली के अन्तर्गत विभिन्न कार्यो की दर संविदा
निविदा की कुल लागत	रूपये 160.32 लाख
धरोहर राशि (2प्रतिशत)	रूपये 3,20,640/-
निविदा फार्म डाउनलोड एवं अपलोड करने की दिनांक	मंगलवार दिनांक 03.07.2024 प्रात 9.30 बजे से सोमवार 15.07.2024 सायं 06.00 बजे तक
निविदा खोलने की दिनांक	मंगलवार 16.07.2024 सायं 5.00 बजे।
निविदा खोलने वाले कार्यालय में ई-ग्रास चालान जमा कराने की दिनांक	मंगलवार 16.07.2024 सायं 2.00 बजे तक।
प्रोसेसिंग शुल्क, निविदा शुल्क एवं धरोहर राशि जमा कराने की प्रक्रिया	वित्त विभाग द्वारा जारी परिपत्र प.6(5)/वित्त/साविलेनि/2018 दिनांक 27.04.2020 के अनुसार ई ग्रास पर आनलाईन के माध्यम से चालान द्वारा (परिपत्र संलग्न) 1. प्रोसेसिंग शुल्क-8685-00-102-16-02 निर्माण विभाग 2. निविदा शुल्क-0075-00-800-52-01 3. धरोहर राशि-8443-00-108-00-00 ऑफिस आई डी. 32827
यू.बी.एन. नंबर	1. PWD2425WSOB01912 2. PWD2425WSOB01913 3. PWD2425WSOB01914 4. PWD2425WSOB01915

निविदा से सम्बन्धित समस्त विवरण वेबसाईट "www.dipronline.org" व विभाग की वेबसाईट "www.eproc.rajasthan.gov.in" एव "www.sppp.raj.nic.in" पर देखा जा सकता है।

(गौतम मीणा)
अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड कोटपूतली

DIPR/C/5437/2024

'अभ्यर्थियों की महत्वहीन त्रुटियों के निस्तारण के लिए क्या है व्यवस्था'

- हाईकोर्ट ने माध्यमिक शिक्षा विभाग के सचिव और आर.पी.एस.सी. सचिव को शपथ पत्र पेश करने को कहा
- अदालत ने कहा कि किसी बेरोजगार लेकिन योग्य व पात्र उम्मीदवार के जीवन में सरकारी नौकरी के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता और ना ही उसे नियुक्ति के अधिकार से वंचित किया जा सकता है

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने माध्यमिक शिक्षा विभाग के सचिव और आरपीएससी सचिव को व्यक्तिशः या वीसी से पेश होकर शपथ पत्र के जरिए बताने को कहा है कि भर्ती में अभ्यर्थियों की ओर से की गई छोटी-मोटी और महत्वहीन त्रुटियों के प्रभावी निस्तारण के लिए क्या व्यवस्था की गई है। जिससे सरकारी नौकरी के योग्य अभ्यर्थियों को अनुचित मुकदमेबाजी से बचाया जा सके। वहीं अदालत ने दोनों अधिकारियों से याचिकाकर्ता के पद पर बने रहने के संबंध में हुए जानकारी पेश करने को कहा है। जस्टिस सुदेश बंसल ने यह आदेश राजेश की याचिका पर दिए।

अदालत ने अपने आदेश में कहा कि किसी बेरोजगार लेकिन योग्य व पात्र उम्मीदवार के जीवन में सरकारी नौकरी के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता और ना ही उसे नियुक्ति के अधिकार से वंचित किया जा सकता है। मामले में राज्य सरकार की ओर से अपनाए तकनीकी दृष्टिकोण की अदालत सराहना नहीं करता है, खासकर तब जबकि भर्ती का उद्देश्य सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा का चयन करना हो। इस तरह की कार्रवाई से पहले से मुकदमों के बोझ तले दबे न्यायालय में अनावश्यक मुकदमेबाजी की नौबत आती है।

याचिका में अधिवक्ता तनवीर अहमद ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता का हिंदी वरिष्ठ अध्यापक भर्ती-2018 में चयन हुआ था। उसकी नियुक्ति को यह कहते हुए निरस्त कर दिया कि उसने आवेदन पत्र में अंग्रेजी में राकेश और हिंदी में राजेश नाम लिखा था। अदालत के दिसंबर, 2020 के अंतरिम आदेश की पालना में याचिकाकर्ता को 23 जून, 2021 को नियुक्ति दी गई। वहीं बाद में उसका आरपीएससी की ओर से आयोजित स्कूल व्याख्याता भर्ती में चयन हो गया। ऐसे में उसके नाम के विवाद को अंतिम रूप से तय किया जाए, ताकि उसे प्रोटेक्शन का लाभ मिल सके। अदालत के सामने आया कि राज्य सरकार और आरपीएससी को याचिकाकर्ता के सही नाम पर संदेह नहीं है। इसके बावजूद भी याचिकाकर्ता की नियुक्ति को अंग्रेजी में गलत नाम होने के आधार पर विवादित किया जा रहा है।

अदालत के पूछने पर बताया गया कि विज्ञापन में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है कि हिंदी और अंग्रेजी में नाम को लेकर भिन्नता हो तो अंग्रेजी में लिखे नाम को प्राथमिकता दी जाएगी। इसके अलावा राज्य सरकार की ओर से अदालत को इस बात पर भी संतुष्ट नहीं किया जा सका कि नाम की छोटी सी विसंगति को दूर करने के लिए याचिकाकर्ता को मौका क्यों नहीं दिया गया। अदालत ने कहा कि जब याचिकाकर्ता के नाम पर विवाद ही नहीं है तो उसकी नियुक्ति को लेकर विवाद क्यों किया जा रहा है।

माँग दिवस के रूप में मनाया सहकारिता दिवस

जयपुर, (का.सं.)। ऑल इंडिया कोऑपरेटिव बैंक एम्पलाईज फेडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व ऑल राजस्थान कोऑपरेटिव बैंक एम्पलाईज यूनियन के प्रान्तीय महासचिव सहकार नेता सूरज भान सिंह आमेरा ने बताया कि 6 जुलाई अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस को फ़ेडरेशन के राष्ट्रीय आव्हान पर देश भर के सहकारी बैंक कर्मियों ने माँग दिवस के रूप में मनाया। देश भर में सहकारी बैंक कर्मियों ने माँग के लिए बेज धारण कर माँग दिवस मनाया। माँगो के लिए सचिव सहकारिता व रजिस्ट्रार सहकारिता को ज्ञापन प्रेषित किए गये। प्रदेश के सहकारी बैंक कर्मियों के वेतनमान सुधार के लिए मुख्यमंत्री, वित्त विभाग सरकार व सहकारी विभाग स्तर से अक्टूबर 2023 में ही सम्पन्न/स्वीकृत अवधिपार लंबित 16वें वेतन समझौते को सभी सहकारी बैंकों में एकरूपता लागू करना, सहकारी बैंकों में कर्मचारी व अधिकारी के तीन साल से रिक्त पड़े पदो पर भर्ती करना आदि को लेकर माँग दिवस मनाया गया।

हजरत सैयद महबूब उर रहमान नियाजी के उर्स का समापन

मीर जी दरगाह में हजरत सैयद महबूब उर रहमान नियाजी के आठवें उर्स के पहले दिन देशभर से हजारों मुरीदों ने अपनी दुआएं और मन्नतें मांगी।

जयपुर। संसार चंद रोड स्थित मीर जी दरगाह में हजरत सैयद महबूब उर रहमान नियाजी के आठवें उर्स के पहले दिन रात में क्लासिकल म्यूजिकल नाइट में फनकारों ने जबरदस्त अपने फन की प्रस्तुति दी। दूसरे दिन सुबह कुरानखानी हुई और दरगाह को गुसल दिया गया। शाम को कव्वाली की महफिल सजी जिसमें देश भर से कव्वाल पहुंचे बॉलीवुड फेम साबरी बंधुओं ने शानदार कलाम पेश किया, महफिल देर रात तक चली। इस मौके पर दरगाह के सज्जादा नशीन डॉक्टर सैयद हबीब उर रहमान नियाजी ने कहा कि तीन दिन के उर्स मुबारक में अलग-अलग दिन अलग-अलग कार्यक्रमों हुए। पहले दिन देश भर के मशहूर क्लासिकल फनकारो ने अपने फन पेश किया। दूसरे दिन शाम को मगरिब के बाद चादरों का सिलसिला शुरू हुआ। देशभर से अकीदतमंदो ने अपनी मुरादों की चादर पेश की। रात में कव्वाली की महफिल सजी जो देर रात तक चली। तीसरे दिन कुल की रस्म के साथुरा का समापन हुआ और देश में ओ अमन रहे, आपसी भाईचारा हमेशा बना रहे की अर्जी लगाई गई। उन्होंने कहा कि सभी मुरिदो से वादा लिया की एक पेड़ जरूर लगाएंगे। दरगाह के नायाब सज्जादानशीन सैयद फैज उर रहमान नियाजी ने कहा देशभर से हजारों की तादाद में मुरीद जयपुर पहुंचे हैं और अपने हकीकत के फूल पेश किए हैं और अपनी दुआएं और मन्नतें मांगी सभी आए। तीनो दिन लंगर का प्रोग्राम रहा हजारों लोगों ने लंगर खाया। कुल की रस्म के साथ उर्स मुकम्मल हुआ।

रत्न आभूषणों के बूथ पर उमड़े देश विदेश के खरीदार

जयपुर, (का.सं.)। शो के दूसरे दिन उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा और विधायक गोपाल शर्मा ने जस -2024 का अवलोकन किया ज्वेलर्स एसोसिएशन जयपुर के अध्यक्ष आलोक सोंखिया, महासचिव नीरज लुणावत ,उपाध्यक्ष राजू मंगोडी वाला और शो के कन्वीनर अशोक माहेश्वरी ने उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा और विधायक गोपाल शर्मा को शो का विजिट का स्वागत किया और शो का विजिट कराया।

जयपुर ज्वैलर्स एसोसिएशन के उपाध्यक्ष और जस 2024 के सहसंयोजक राजू मंगोडी वाला ने बताया कि उन्होंने प्रदर्शनी का दौरा किया और जयपुर के एक्जीबिटर्स की ओर से प्रदर्शित किए गए रत्न आभूषणों के एक से बढ़कर एक डिजाइन और कारीगरों की कला की सराहना की। इस मौके पर उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा ने कहा की जयपुर की ज्वेलरी पूरी दुनिया में मशहूर है और इस तरह के शो यहां के ज्वैलरी व्यवसाय को अंतरराष्ट्रीय मंच पर और मजबूती के साथ प्रस्तुत करती है। बीजेपी सरकार इस शो का पूरा समर्थन और सहयोग करने के लिए हमेशा तैयार है। विधायक गोपाल शर्मा ने जस -2024 में सजे रंगीन रत्नों के अनोखे संसार और खूबसूरत गहनों से बेहद प्रभावित नजर आए। उन्होंने कहा कि ज्वैलरी शो, ज्वेलर्स एसोसिएशन जयपुर की ओर से किया गया शानदार प्रयास है।

सहकारी संस्थाएं नवीन तकनीक अपनाएं : अर्चना सिंह

रजिस्ट्रार सहकारिता अर्चना सिंह ने शनिवार को झालाना संस्थानिक क्षेत्र स्थित राइसेम परिसर में 102वें अन्तरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर आयोजित सेमीनार को संबोधित किया।

जयपुर, (कासं)। रजिस्ट्रार सहकारिता अर्चना सिंह ने कहा कि प्रदेश में सहकारी संस्थाओं के पल्लवन के लिये आवश्यक है कि वे अधिकाधिक नवीन तकनीक को अपनायें ताकि उनकी कार्यशैली में पारदर्शिता का समावेश हो और सदस्यों का सहकारिता में विश्वास कायम रहे। उन्होंने कहा कि सहकारी संस्थाओं के विकास और प्रसार के लिये उनके संरक्षण, संवर्धन और नियंत्रण में संतुलन रखकर कार्य करने की आवश्यकता है।

सिंह ने शनिवार को झालाना संस्थानिक क्षेत्र स्थित राइसेम परिसर में 102वें अन्तरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर आयोजित सेमीनार को संबोधित करते हुये कहा कि आज से लगभग 120 वर्ष पूर्व प्रदेश में कृषि क्षेत्र में वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये सहकारिता का संस्थागत स्वरूप सामने आया था। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिवेश में समाज और व्यक्ति की आवश्यकता और पसंद में परिवर्तन आया है। इसलिये अब सहकारी संस्थाओं को स्थानीय आवश्यकताओं और पसंद को ध्यान में रखते हुये अपने कार्यक्षेत्र में बदलाव लाने की जरूरत है।

रजिस्ट्रार ने कहा कि सहकारी संस्थाओं को अपनी सेवा प्रदायगी को बेहतर करते हुये नये नये क्षेत्रों में कार्य करना चाहिये, जिससे स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन के साथ-साथ लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा। उन्होंने कहा कि सहकारिता में समर्पण और ईमानदारी के साथ कार्य करें और सभी को साथ लेकर चलेंगे तो किसी भी समस्या का समाधान स्थानीय स्तर पर प्राप्त कर सकते है।

जयपुर डेयरी के अध्यक्ष ओम प्रकाश पूनिया ने कहा कि सहकारिता लोकतंत्र का प्राणतत्व है। जिस लोकतंत्र में सहकारिता नहीं है वह मृतप्राय है। उन्होंने कहा कि स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता, पारस्परिक सहयोग की भावना समाज को एकजुट करती है और इसी से व्यक्ति में सहकारिता का जन्म होता है। समाज में नैतिकता होने पर ही सहकारिता का प्रसार संभव है।

अन्तराष्ट्रीय सहकारिता दिवस के मौके पर राइसेम परिसर में रजिस्ट्रार सहकारिता, जयपुर डेयरी अध्यक्ष, निदेशक राइसेम सहित सभी सहकारजनों ने पौधारोपण किया। सेमीनार में करणपुर क्रय-विक्रय सहकारी समिति के अध्यक्ष लखविन्दर सिंह, फागी जीएसएस के अध्यक्ष ओ. पी. शर्मा, बीलवा जीएसएस के अध्यक्ष प्रहलाद सहाय, नाबार्ड के पूर्व महाप्रबंधक आर. एस. जोधा, भूतपूर्व संयुक्त रजिस्ट्रार (नियम) लीला पुरूषोत्तम तथा राइसेम निदेशक जितेन्द्र शर्मा ने संबोधन दिया। कार्यक्रम में संयुक्त सचिव सहकारिता दिनेश कुमार जांगिड, अतिरिक्त रजिस्ट्रार (प्रथम) राजीव लोचन शर्मा, अतिरिक्त रजिस्ट्रार (द्वितीय) शोभिता शर्मा, प्रबंध निदेशक एसएलडीबी विजय कुमार शर्मा सहित जयपुर सीसीबी के प्रबंध निदेशक तथा राइसेम एवं सहकारिता विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

बिल्डर रवि सूर्या अफोर्डेबल होम्स पर 55 हजार रुपए हर्जाना

जयपुर, (का.सं.)। जिला उपभोक्ता आयोग, जयपुर-द्वितीय ने फ्लैट की बुकिंग की राशि लेने के बाद भी तय अवधि में फ्लैट का कब्जा नहीं देने को सेवा दोष माना है। इसके साथ ही आयोग ने बिल्डर रवि सूर्या अफोर्डेबल होम्स पर 55 हजार रुपए का हर्जाना लगाया है। आयोग ने बिल्डर को निर्देश दिया है कि वह परिवादी को बुकिंग के तौर पर वसूल की गई 1.38 लाख रुपए की राशि 9 प्रतिशत ब्याज सहित लौटाए। आयोग के अध्यक्ष ग्यारसी लाल मीना व सदस्य हेमलता अग्रवाल ने यह आदेश लाखन सिंह के परिवाद पर दिए।

परिवाद में कहा गया कि उसने बिल्डर के प्रोजेक्ट सूर्या रेजीडेंसी में बुकिंग राशि देकर 2 बीएचके का फ्लैट बुक करवाया था। बिल्डर के प्रतिनिधि ने कहा कि वह प्रोजेक्ट 2019 तक पूरा हो जाएगा और वह उसे 20 दिन में ही बकाया राशि का लोन करवा देगा। इसके बावजूद भी प्रोजेक्ट समय पर पूरा नहीं हुआ। उसने जब विपक्षी के कर्मचारियों से अपनी जमा राशि वापस मांगी तो वे पहले तो टालमटोल करते रहे, लेकिन बाद में उसे डराया कि दुबारा संपर्क किया तो हाथ-पैर तोड देंगे।

दुष्कर्म करने के आदतन अभियुक्त जीवाणु को एक बार फिर उम्रकैद

जयपुर, (का.सं.)। पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत क्रम-3 महानगर द्वितीय ने नाबालिगों से दुष्कर्म करने के आदतन अभियुक्त सिकंदर उर्फ जीवाणु को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने अभियुक्त पर एक लाख तीन हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। यह प्रकरण चार साल की बच्ची से दुष्कर्म कर जीभ काटने से जुडा है। अभियुक्त सात साल की नाबालिग से दुष्कर्म करने के मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहा है।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक महावीर सिंह किशनावत ने अदालत को बताया कि 23 जून, 2019 को पीडिता के चाचा ने शास्त्री नगर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा गया कि उसकी चार साल की भतीजी रात करीब दस बजे खेलती-खेलती घर से बाहर निकल गई थी। पुलिस और परिजनों के काफी तलाश करने के बाद भी उसका पता नहीं लगा।

वहीं रात करीब दो बजे कोई उसे घर के थोडी दूर पर छोडकर चला गया। अस्पताल जाने पर पता चला कि उसके साथ दुष्कर्म हुआ है और जीभ काटी गई है। रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने अभियुक्त को कोटा से गिरफ्तार किया। सुनवाई के दौरान पीडिता ने अदालत को बताया कि अभियुक्त उसे मोटर साइकिल पर बैठाकर नाले में ले गया था और उसके साथ गलत काम किया। जब वह चिल्लाई को अभियुक्त ने चाकू से उसकी जीभ काट दी। जिस पर सुनवाई करते अदालत ने अभियुक्त को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है।

डॉ. मुखर्जी ने राष्ट्र को समर्पित किया अपना जीवन : मंजू शर्मा

- 'उनके नारे ''एक देश में दो निशान, दो विधान और दो प्रधान नहीं चलेंगे'' को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया साकार'

जयपुर। जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 123वीं जयंती के अवसर पर भाजपा प्रदेश कार्यालय में आज उनके चित्र पर पुष्पांजली अर्पित की गई। इस दौरान जयपुर सांसद मंजू शर्मा ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन मूल्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि डॉ. मुखर्जी ने अपने जीवन को राष्ट्र के प्रति समर्पित कर दिया था। कश्मीर को लेकर डॉ मुखर्जी ने नारा दिया था कि एक देश में दो निशान, दो विधान और दो प्रधान नहीं चलेंगे। इस नारे को 70 साल बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने 70 मिनट में पूरा करते हुए कश्मीर से धारा 370 और 35 ए हटाने का ऐतिहासिक काम किया। वहीं दूसरी ओर कुछ राष्ट्र विरोधी लोग और राजनैतिक पार्टियां कश्मीर के मामले को यूएन में ले जाने का काम कर रहे थे, धारा 370 के बिल को संसद में फाड़ने का काम कर रहे थे, ऐसी राष्ट्र विरोधी शक्तियों को कमजोर करने के लिए भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता को एकजुट होकर डॉ मुखर्जी के पदचिन्हों पर कार्य करने की आवश्यकता है।

जयपुर सांसद मंजू शर्मा ने कहा कि जनसंघ के संस्थापक डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने देश में पंडित नेहरू की परमिट व्यवस्था का भी विरोध किया था। इसी विरोध के स्वरूप उन्होंने राष्ट्र के लिए अपना बलिदान दे दिया, लेकिन उनके बलिदान को जनसंघ के बाद भारतीय जनता पार्टी ने समझा और आज कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। डॉ. मुखर्जी सच्चे अर्थों में मानवता के उपासक और सिद्धान्तवादी नेता थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी और शिक्षाविद् डॉ मुखर्जी के जीवन चरित्र को हमें अपने जीवन में उतारना चाहिए। डॉ मुखर्जी उस दौर में जो विचार लेकर चले थे, उनके विचारों को देश में समझने वाला कोई नहीं था। इसके बावजूद उन्होंने अपने विचारों को आगे बढ़ाया। हमें डॉ. मुखर्जी की विचारधारा को साथ लेकर आगे बढ़ना चाहिए। डॉ. मुखर्जी के सपने को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरा करने का काम किया। कश्मीर में जिन हाथों में पत्थर हुआ करते थे, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन हाथों को रोजगार देकर उनके परिवारों को आगे बढ़ाने की दिशा में काम किया है। पुष्पांजली कार्यक्रम के दौरान भाजपा के संगठक प्रद्युम्न कुमार, प्रदेश मीडिया संयोजक प्रमोद वशिष्ठ, प्रदेश कार्यालय प्रभारी मुकेश पारीक, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष अनुराधा माहेश्वरी और भाजपा मीडिया कार्यालय प्रभारी चंपालाल रामावत सहित अन्य पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पूर्व में की गई सेवा का वेतन संरक्षित करने के आदेश

जयपुर। हाईकोर्ट ने तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती-2018 में चयनित अभ्यर्थी का समान पद पर पूर्व में की गई सेवा व वेतन संरक्षित करने के आदेश दिए है। जस्टिस अनुप कुमार ढंड ने यह आदेश बनवारी लाल चौधरी व अन्य की याचिका पर दिए। याचिका में अधिवक्ता रामप्रताप सैनी ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता का तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती-2013 में चयन हुआ था। इस भर्ती में उसे बाडमेर जिला आवंटित हुआ था। वहां सेवा देने के बाद वर्ष 2018 में निकली तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती में उसका चयन हो गया और उसे जयपुर जिला आवंटित हो गया। याचिका में कहा गया कि उसकी समान पद पर ही दूसरी नियुक्ति हुई है। ऐसे में राजस्थान सेवा नियम के नियम 24 के तहत उसके वर्तमान वेतन को संरक्षित किया जाए और पूर्व में की गई सेवाकाल की गणना भी की जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने याचिकाकर्ता की पूर्व की सेवाकाल की गणना करते हुए वेतन को संरक्षित करने के आदेश दिए हैं।

कोर्ट ने 12.75 लाख रुपए का क्लेम खारिज किया

- बीमा कंपनी को वाहन चोरी की सूचना 317 दिन की देरी से देने का मामला

जयपुर, (का.सं.)। जिले की स्थाई लोक अदालत ने वाहन चोरी की सूचना बीमा कंपनी को 317 दिन की देरी से देने और चोरी की एफआईआर 20 दिन बाद दर्ज कराने को संदिग्ध मानकर 12.75 लाख रुपए का क्लेम खारिज कर दिया। स्थाई लोक अदालत ने कहा कि वाहन चालक को ऐसा कौनसा जरूरी काम था, जो वाहन में ही चाबी लगाकर चला गया और दूसरे दिन मौके पर आया। वहीं वाहन के मालिक ने चोरी की एफआईआर भी बीस दिन बाद दर्ज क्यों नहीं कराई। वहीं बीमा कंपनी को चोरी की सूचना 317 दिन की देरी से देना भी बीमा शर्तो का उल्लंघन है। ऐसे में परिवादी बीमा क्लेम लेने का अधिकारी नहीं है। लोक अदालत ने यह आदेश किरण सिंह का परिवाद खारिज करते हुए दिए। बीमा कंपनी के अधिवक्ता ने बताया कि परिवादी ने अपने ट्रेलर का बीमा 12 लाख रुपए में बीमा कंपनी से करवाया था। इसकी अवधि 28 नवंबर 2020 से 27 नवंबर 2021 थी। इस दौरान बीमित वाहन 15 दिसंबर 2020 को ही कोटपुतली थाना क्षेत्र से चोरी हो गया, लेकिन वाहन चालक ने बीमा कंपनी को चोरी की सूचना नहीं दी और एफआईआर भी 20 दिन की देरी से दर्ज कराई। वहीं जांच में आया कि चालक खुद ही वाहन की चाबी उसमें लगाकर चला गया था और सुबह वापस आया तो वाहन उसे नहीं मिला। वाहन चालक ने बीमा कंपनी में क्लेम किया, लेकिन कंपनी ने उसे गलत मानते हुए 29 नवंबर 2021 को खारिज कर दिया। इसे परिवादी ने स्थाई लोक अदालत में चुनौती दी थी।

सार-समाचार

किशनपोल सरकारी कॉलेज में वृक्षारोपण

जयपुर, (का.सं.)। राजकीय कन्या महाविद्यालय, किशनपोल ,जयपुर में आज प्राचार्य डॉ. खामोश मीणा की अध्यक्षता में अभिभावक-शिक्षक संवाद और वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन एन.एस.एस. के तत्वाधान में किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य ने छात्राओं को अनुशासित रहते हुए नियमित अध्ययन कर उज्जवल भविष्य निर्माण के लिए प्रेरित किया।प्राचार्य डॉ. खामोश मीणा ने अभिभावकों को आश्वस्वस्त किया कि महाविद्यालय छात्राओं के लिए पूर्णतया सुरक्षित परिसर प्रदान करता है। कार्यक्रम में आये अभिभावकों ने अपने-अपने सुझाव दिए और यह बताया कि महाविद्यालय में छात्राओं को हर गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए , जिससे कि सभी छात्राओं का समग्र विकास संभव हो सके। एन.एस.एस. के स्वयंसेवक और छात्राओं सभी ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये। इस अवसर पर डॉ. ममता रोकणा, डॉ. पवन असवाल , एन.एस.एस. प्रभारी डॉ. अर्चना वर्मा ने छात्राओं को महाविद्यालय गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया और आगंतुक अभिभावकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।इस कार्यक्रम के पश्चात प्राचार्य ने वृक्षारोपण समिति, समस्त स्टाफ, छात्राओं और अभिभावकों के साथ महाविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया।

सी.आई.आई. सदस्यों ने देखी खदान

जयपुर। सीआईआई-इंडियन वूमन नेटवर्क (आईडब्लूएन), राजस्थान चैप्टर के 22 सदस्यीय दल ने आगूचा, भीलवाड़ा स्थित हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड-रामपुरा आगूचा माइंस (आरएएम) का दौरा किया। शिक्षण मिशन का उद्देश्य दुनिया की सबसे बड़ी जस्ता खदान में से एक रामपुरा अगुचा खदान को देखना और भूमिगत खनन उत्कृष्टता में आने वाली चुनौतियों को जानना था। शिक्षण मिशन के बाद सीआईआई-इंडियन वूमन नेटवर्क (आईडब्लूएन), राजस्थान चैप्टर की अध्यक्ष, निवेदिता आर. सारड़ा, अध्यक्ष ने बताया कि हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड-रामपुरा अगुचा माइंस भूमिगत खनन उत्कृष्टता का एक बेंचमार्क है, अगुचा खदान अपने उत्कृष्ट बुनियादी ढांचे, संचालन, कम्युनिटी एनेजेमेन्ट, पर्यावरण प्रतिबद्धता, सुरक्षा मानकों तकनीकी कौशल और नेतृत्व के लिए जानी जाती है।

माथुर ने लगाया एक पेड़ माँ ने नाम

जयपुर। भाजपा के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय चुनाव समिति के सदस्य ओमप्रकाश माथुर ने प्रधानमंत्री के आह्वान पर एक पेड़ माँ के नाम कार्यक्रम के तहत मानसरोवर स्थित अपने आवास के बाहर पेड़ लगाए। इस अवसर पर पूर्व विधायक मानसिंह किन्सरिया स्थानीय पार्षद व निगम में चेयरमैन हरीश शर्मा के साथ कॉलोनी के निवासी उपस्थित रहे।

25 फीट गहरे नाले में गिरा युवक

जयपुर। मानसरोवर इलाके में 25 फीट गहरे नाले में शुक्रवार रात एक युवक गिर गया। नाले में गिरने से उसके हाथ-पैर टूटने के साथ सिर में गहरी चोट लगी है। शिप्रापथ थाना पुलिस ने शनिवार सुबह पता चलने पर रेस्क्यू कर उसे नाले से बाहर निकाला। पुलिस ने घायल युवक को जयपुरिया हॉस्पिटल में एडमिट करवाया है। पुलिस ने बताया कि सुबह करीब 9 बजे रीको एरिया में स्टोन पार्क के पास नाले में एक युवक बचाने के लिए आवाज लगा रहा था। राहगीरों के आवाज सुनकर नाले में देखने पर लहूलुहान हालत में एक युवक पड़ा दिखाई दिया। शिप्रापथ थाने में लोगों ने 25 फीट गहरे नाले में युवक के गिरने की सूचना दी। सूचना पर बनवारीलाल चेतक के साथ मौके पर पहुंचे। नाले से बाहर निकालने के लिए बत्रा लाल रेस्क्यू करने के लिए पेड़ के जरिए नाले में नीचे उतरे। उनके साथ किशना नाम का लड़का भी नाले में उतरा।

मेरे जैसे सामान्य कार्यकर्ता को हरियाणा का प्रभारी बनाकर किसानों का मान बढ़ाया : डॉ. सतीश पूनिया

हरियाणा भाजपा का प्रभारी बनाए जाने पर डॉ. सतीश पूनिया को कार्यकर्ताओं ने बधाई दी।

जयपुर। भाजपा केंद्रीय नेतृत्व द्वारा डॉ. सतीश पूनिया को हरियाणा भाजपा प्रदेश प्रभारी बनाये जाने पर प्रदेशभर से जयपुर पधारे कार्यकर्ताओं एवं आमजन ने डॉ. सतीश पूनियां को बधाई एवं शुभकामनाएं दी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा सहित समस्त केंद्रीय नेतृत्व का हार्दिक आभार-अभिनंदन व्यक्त किया।

इस दौरान सतीश पूनिया ने जयपुर में राणी सती नगर स्थित अपने जनसंवाद केंद्र पर जनसुनवाई की, जो वह जयपुर रहने के दौरान पिछले कई वर्षों से सुबह 8 से 11 बजे तक प्रदेशभर से पधारे कार्यकर्ताओं एवं आमजन से मुलाकात कर जनसुनवाई करते हैं।

सतीश पूनिया ने कहा कि हरियाणा राज्य के प्रभारी के रूप में जिम्मेदारी प्रदान करने हेतु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के हार्दिक आभार एवं अभिनंदन व्यक्त करता हूं कि राजस्थान प्रदेश के सामान्य किसान परिवार में जन्मे मेरे जैसे सामान्य कार्यकर्ता को हरियाणा का प्रभारी बनाकर राजस्थान, हरियाणा सहित समस्त देश के किसानों का मान बढ़ाया है, इससे पहले राजस्थान जैसे बड़े प्रदेश का अध्यक्ष बनाकर भी भाजपा केंद्रीय नेतृत्व ने किसानों का सम्मान बढ़ाया था। उन्होंने कहा कि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में किसानों एवं खिलाड़ियों की धरती हरियाणा में जनता के आशीर्वाद एवं कार्यकर्ताओं के परिश्रम से फिर से प्रचंड बहुमत की भाजपा सरकार बनाएंगे। उन्होंने कहा कि, हरियाणा की नायब सिंह सैनी सरकार हरियाणा प्रदेश के विकास के लिए समर्पित होकर कार्य कर रही है, वहीं नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की एनडीए सरकार और हरियाणा की नायब सैनी सरकार की जनहितकारी नीतियों पर हरियाणा की सभी 36 कौम की किसान सरदारी, युवा एवं मातृ बहनें अपने आशीर्वाद से विश्वास की मुहर लगाएंगे और तीसरी बार भाजपा हरियाणा में जीत की हैट्रिक लगाकर प्रचंड बहुमत की सरकार बनाएगी।

सार-समाचार

गौ-माता को हलवे का गौ-ग्रास खिलाया

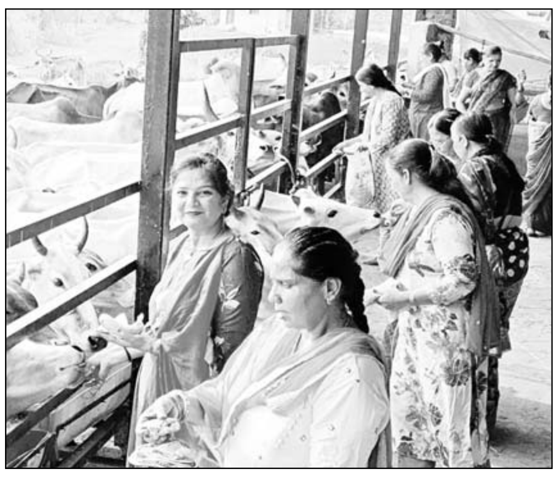

डूंगरपुर। गंगेश्वर महिला भजन ग्रुप द्वारा भंडारिया स्थित गौ-शाला निर्माण से लेकर अब तक नियमित प्रत्येक अमावस्या को गौ-शाला में गौ-सेवा के अपने संकल्प के तहत आषाढी अमावस्या के उपलक्ष में भजन ग्रुप की मातृ शक्ति द्वारा गौ-माता की आरती पूजा परिक्रमा के बाद संकल्प विधि के साथ गौ माता को रोटी,गुड, केले और हलवे का गौ ग्रास खिलाया गया। गौ-माता का आशीर्वाद लिया।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी को किया याद

बांसवाड़ा, (निसं)।भारतीय जनता पार्टी मंडल कुशलगढ की ओर से श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर फतहेश्वर महादेव मंदिर परिसर में श्रद्धांजलि अर्पित कर पौधारोपण किया गया। पूर्व संसदीय सचिव भीमा भाई डामोर ने कहा कि श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपना जीवन मां भारती की सेवा में समर्पित कर दिया उनका गतिशील व्यक्तित्व देश के लिए हर पीढी के लिए प्रेरित करता रहेगा। नगर पालिका उपाध्यक्ष नितेश बैरागी ने देश की एकता और स्वाभिमान के लिए जीवनभर संघर्ष करने वाले जनसंघ संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी के आदर्शों को आत्मसात् करने की जरुरत बताते हुए कहा कि मुखर्जी ने एक निशान एक विधान एक प्रधान का नारा देकर जम्मू कश्मीर को देश का अभिन्न अंग बनाने के लिए संघर्ष में अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष बबलू भाई मईडा, भाजपा महामंत्री दिलीप टेलर, मंडल उपाध्यक्ष कल सिंह डामोर, उद्योगपति मुकेश अग्रवाल, पूर्व पालिका अध्यक्ष राधवेश चरपोटा, वरिष्ठ जयंतीलाल कव्वालिया, पंडित हेमेंद्र पंड्या, पूर्व महामंत्री कमलेश टेलर, पार्षद महेंद्र शाह, जितेंद्र आहारी, संजय चौहान, राखी, निर्मला बाग, पूर्व पार्षद महेंद्र प्रताप सिंह झाला, आशीष चोपडा, हितेश पडियार, भूपेंद्र टेलर, रमन टेलर, अनुज प्रताप सिंह तंवर, संजय बसेर, राजेश भाटिया, कमलेश मोदी, अशोक पंड्या, बका जयेश पंड्या आदि ने पुष्पांजलि अर्पित की। आभार महामंत्री दिलीप टेलर ने माना।

जगन्नाथ रथ यात्रा आज

बांसवाड़ा, (निसं)। पिछले लगभग 100 वर्षो की परंपरानुसार नेमा समाज की ओर से भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा शहर के विभिन्न मार्गो से निकाली जाती है। जिसे श्रद्धालु स्वयं हाथो से खींच कर नगर भ्रमण करवायेंगे। रथयात्रा गणपति चौक से रविवार सायं 4 बजे आरम्भ होकर रथ यात्रा आजाद चौक, सदर बाजार, पिपली चौक, पैलेस रोड, महालक्ष्मी चौक होती हुई पुनरू जगदीश मंदिर पहुंचेगी जहां भव्य आरती के पश्चात प्रसाद वितरण होगा। जगदीश मंदिर से भव्य शोभायात्रा भगवान जगन्नाथ, भाई बलभद्र और देवी सुभद्रा रथ पर सवार होकर निकाली जाएगी जिसमें भजन मंडलिया व बडी संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित होंगे। इससे पूर्व रामचरित मानस मंडल के तत्वावधान में अखंड रामायण पाठ का शुभारंभ किया गया। जिसकी पूजा अर्चना कुसुम कांत एवं विभा चंचावत ने की। प्रवक्ता जिम्मी सराफ ने बताया कि इस अवसर पर समाज अध्यक्ष निमेष मेहता, उपाध्यक्ष चंकी शाह, सचिव सुबोध मालोत, कोषाध्यक्ष शैलेंद्र मेहता, जगदीश मंडल के अध्यक्ष महेंद्र सराफ, सचिव संदीप शाह, राजेश वसानिया, भगवती लाल शाह, निश्चल मालोत, मनोज चंचावत, तंरग मेहता, विपुल दोसी, दीपक मेहता, सुमित तलवाडिया आदि मौजूद रहे।
बांसवाडा फोटो-1-रामचरित मानस मंडल के तत्वावधान में अखंड रामायण पाठ का शुभारंभ श्रद्धालु। - चिराग श्रीमाल

वाहनों पर पथराव के दो आरोपी धरे

डूंगरपुर, (निसं)। दोवड़ा थाना पुलिस ने वाहनों पर पथराव करने के दो आरोपियों को गिरफ्तार कर दो बाल अपचारियों को डिटेन किया है। आरोपियों ने चितरेटी घाटी में लूट के इरादे से वाहनों पर पथराव किया था, जिसमें एक बच्ची गंभीर रूप से घायल हो गई थी। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर रही है। दोवड़ा थानाधिकारी ने बताया कि 3 जुलाई को लीलवासा निवासी घनश्याम पुत्र नारायण पंचाल ने रिपोर्ट दी थी। रिपोर्ट में बताया कि 3 जुलाई को उसकी भतीजी माही पंचाल के बीमार होने पर उसे कार में लेकर घर से निकले थे। इस दौरान रात करीब 11.20 पर चितरेटी घाटी पहुंचे। उस समय बाइक पर चार युवक खड़े थे और उनके हाथों में पत्थर थे। बदमाशो ने कार को रोकने का प्रयास किया, लेकिन कार नहीं रोकने पर बदमाशों ने पथराव शुरू कर दिया। पथराव में माही के मुंह पर पत्थर लगे जिससे वह गंभीर घायल हो गई। इसके बाद जैसे-तैसे वहां से निकले। वहीं, बदमाशों ने इसके बाद पीछे आ रहे अन्य वाहनों पर भी पथराव किया। पुलिस ने मामला दर्ज करते हुए आरोपियों की तलाश की। पुलिस ने मामले में चितरेटी निवासी मुकेश पुत्र देवीलाल अहारी और भंडारिया निवासी साहिल पुत्र बबला बरंडा को हिरासत में लिया। वहीं, उनके साथ दो बाल अपचारियों को डिटेन किया।

प्रवेशोत्सव कार्यक्रम के तहत निकाली जागरूकता रैली

बांसवाड़ा, (निसं)। वागधारा संस्था की ओर से गठित ग्राम स्वराज, सक्षम महीला समुह, बाल स्वराज समूह, कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन के लोगों ने समुदाय और अध्यापक के सहयोग से प्रवेशोत्सव कार्यक्रम सज्जनगढ ब्लॉक के ग्राम सिमेला एवं माचा के राउप्रावि में जागरूकता रैली के साथ शुरू हुआ। इस दौरान ग्राम स्वराज संगठन सदस्य ने बच्चो का तिलक लगा माला पहनाकर व पहली बार विद्यालय में नामांकन होने वाले बच्चों का अभिनंदन किया।

ग्राम स्वराज संगठन एवं सक्षम समूह के सदस्य रुपचंद डोडियार ने

- नामांकन अभियान में ड्रॉप आउट और अनियमित बालक-बालिकाओं के अभिभावकों से समझाइश कर पुनः स्कूल से जोड़ा जा रहा है

बताया कि हर वर्ष अपने कार्यक्षेत्र में नामांकन उत्सव पर शिक्षा में असमानता, बचपन में श्रमिकता, बाल विवाह और बाल श्रम जैसी समस्याओं से निपटने और बाल अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक गांव से नामांकन अभियान की शुरूआत के माध्यम से समुदाय को जागरुक किया जा रहा है।

इस वर्ष भी 2024-25 नामांकन अभियान के दौरान संगठन सदस्य, ग्राम स्वराज समूह, सक्षम समूह, शिक्षकों व छात्रों ने गांव-गांव में रैलियां निकालीं एवं अभियान के माध्यम से स्कूलों में मिल रही सुविधाओं के बारे में ग्रामीणों को जानकारी दी। विभिन्न शिक्षक संगठनों व सामाजिक संगठनों ने भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नामांकन अभियान में ड्रॉपआउट और अनियमित बालक-बालिकाओ के अभिभावकों से समझाईश कर पुनः स्कूल से जोडा जा रहा है ताकि बच्चों को शिक्षा प्राप्त हो सके। संस्था विकास मेश्राम ने बताया कि बच्चों का नामांकन विद्यालय में सही उम्र में कराते हैं तो बच्चे के विकास और शिक्षा ग्रहण करने में बेहतर मदद मिलती है हमें सत्र 2024-25 में अपने समुदाय के उन सभी बच्चों का जिनकी उम्र 6 साल हो गई है या होने वाली है का स्थानीय विद्यालय में नामांकन कराना है जिससे बच्चे के जीवन में शिक्षा का उजियारा आये और बचपन खुशहाल बने। वागधारा संस्था के मांगीलाल प्रजापत ने बच्चों के जीवन में शिक्षा की महत्ता बताई। वागधारा के क्षेत्रीय सहजकर्ता सुनील मालविया ने ग्राम स्वराज, बाल स्वराज, सक्षम समूह एवं समुदाय का आभार व्यक्त करते हुए बताया कि अभियान से गांव में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढेगी और समुदाय शिक्षा का महत्व समझ पायेगा। साथ ही गांव में शिक्षा के प्रति जागरूकता की नई किरण के रूप में कार्यक्रम से जानकारी का उदय होगा एवं समुदाय का प्रत्येक बच्चा शिक्षा से जुडकर अपने भविष्य की नई राह पर चल पडेंगे।

बांसवाड़ा में राप्रावि नई आबादी सिमेला द्वितीय में प्रवेशोत्सव कार्यक्रम की जानकारी देते वागधारा संस्था के मांगीलाल प्रजापत।

सीमलवाड़ा की मांडली ग्राम पंचायत दुग्ध उत्पादन में मॉडल बनी

डूंगरपुर। जिला कलक्टर अंकित कुमार सिंह ने शुक्रवार को पंचायत समिति सीमलवाड़ा की ग्राम पंचायत मांडली में रात्रि चौपाल में ग्रामीणों की समस्याओं को सुना। राउमावि मांडली में आयोजित रात्रि चौपाल में बडी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे। इनमें महिलाओं और स्कूली बच्चियों ने भी अपनी बात खुलकर रखी।

गुजरात सीमा से सटे सीमलवाड़ा ब्लॉक के मांडली गांव में शाम ढ लते ही अधिकारियों के पहुंचने का सिलसिला शुरू हो गया। जिला कलक्टर रात्रि चौपाल में पहुंचे तो ग्रामीणों और स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने क्षेत्र के विकास के लिए खुले मन से चर्चा करते हुए पानी, बिजली, सडक, चिकित्सा आदि बुनियादी व्यवस्थाओं पर संतोष व्यक्त किया। वहीं, कुछ ग्रामीणों ने लैम्प्स, मांडली में 12 वीं कक्षा में विज्ञान संकाय शुरू करवाने, भैंसला बस स्टैंड पर स्पीड ब्रेकर बनवाने, ट्रांसफॉर्मर लगवाने और पेयजल जैसी समस्याओं से अवगत करवाया। जिला कलक्टर अंकित कुमार सिंह ने हर परिवादी की समस्या को संवेदनशीलता पूर्वक सुना और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए। लैम्प्स की शिकायत पर जिला कलक्टर ने संबंधित विभागीय अधिकारी को जांच कर नियमानुसार कार्रवाई करने के निर्देश दिए। एडीएम कुलराज मीणा, उपखंड अधिकारी राकेश कुमार न्योल सहित सभी विभागों के जिला और ब्लॉक स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

जन्मदिवस पर खांट ने किया पौधरोपण

बांसवाडा, भारत आदिवासी पार्टी बागीदौरा के ब्लॉक प्रवक्ता गोविंद खांट ने अपने जन्मदिवस पर राजकीय डॉ. भीमराव अम्बेडकर छात्रावास में पौधरोपण किया। जिला प्रवक्ता राहुल भूरिया ने बताया कि नीम, अमरूद, अशोक और बादाम के पौधे रोपते हुए उनकी देखभाल की जिम्मेदारी लेते हुए युवाओं एवं आमजन को पर्यावरण संरक्षण की ओर अग्रसर होने का संदेश दिया गया। वक्ताओं ने कहा कि किसी भी मांगलिक अवसर पर फिजूल खर्च न कर मानव एवं सामाजिक सेवा के हित में कार्य करना चाहिए।

मंत्री गहलोत व विधायक माहेश्वरी विशेष योग्यजन बच्चों से हुए रूबरू

राजसमंद, ०(निसं)। सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग मंत्री अविनाश गहलोत और राजसमन्द विधायक दीप्ति माहेश्वरी ने शनिवार को द्वारकेश अक्षम सेवा संस्थान की ओर से संचालित जागृति उच्च माध्यमिक विशिष्ट विद्यालय गारियावास का निरीक्षण किया और यहां अध्ययनरत विशेष विद्यार्थियों जैसे श्रवण बाधित, दृष्टि बाधित एवं मानसिक विमंदित आदि विद्यार्थियों से मिले। इस दौरान संस्था द्वारा नव निर्मित कक्षों का उद्घाटन मंत्री गहलोत और विधायक माहेश्वरी ने किया। मंत्री एवं विधायक ने नव निर्माणाधीन भवन में संचालित प्रत्येक कक्ष का निरीक्षण किया और संस्था द्वारा संचालित विशिष्ट बालक-बालिकाओं की गतिविधियों का अवलोकन किया। विशिष्ट बच्चों द्वारा स्क्रेप सामग्री से बनाई गई विभिन्न चीजों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने फिजियोथैरेपी कक्ष का निरीक्षण कर सराहना की और कहा कि संस्था इन विशिष्ट बच्चों के लिए जो कार्य कर रही है वह सराहनीय है। मंत्री गहलोत ने अपने उद्बोधन में कहा कि संस्था के बारे में मुझे ज्ञात हुआ कि यह काफी लम्बे समय से संघर्ष कर इस मुकाम तक पहुँची है। हम सदैव संस्था के उन्नति में जो भी सहयोग होगा समय-समय पर करते रहेंगे।

उन्होंने संस्था से जुडे भामाशाओं एवं दानदाताओं का भी आभार व्यक्त

- विशेष योग्यजन बच्चों के विद्यालय का निरीक्षण किया

करते हुए उनकी सराहना की। राजसमन्द विधायक माहेश्वरी ने कहा कि वें संस्था द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में सम्मिलित हुई हैं और हर बार उन्हें संस्था में नया विकास दिखाई देता है। आज संस्था इन विशेष बच्चों के लिए जो व्यावसायिक स्तर पर प्रशिक्षण जैसे सिलाई, चित्रकला, कंप्यूटर, स्पेशल बीएड के माध्यम से रोजगार के अवसर प्रदान करने का प्रयास कर रही है वह काफी सराहनीय है। हम सभी का सहयोग संस्था को मिला है और मिलता रहेगा। उन्होंने संस्था सचिव राकेश परियानी, संचालिका अनिता परियानी व सम्पूर्ण स्टाफ की प्रशंसा की।

द्वारकेश अक्षम सेवा संस्थान में नव निर्मित कक्षों का उद्घाटन करते मंत्री गहलोत और विधायक माहेश्वरी।

सार-समाचार

क्वाट्र्ज पत्थरों का अवैध खनन पकड़ा

डूंगरपुर, (निसं)। सलूंबर से खनन विभाग की टीम आधी रात को अवैध खनन वाली जगह पर पहुंची। मौके पर खनन विभाग ने एक हिटाची मशीन पकड़ी। वहीं एक पहाड़ी को अवैध रूप से खनन कर क्वाट्र्ज पत्थरों को निकाला हुआ बरामद किया।साबला थाना क्षेत्र के बोडीगामा बड़ा में बोडीगामा डेम के पास क्वाट्र्ज पत्थरों के अवैध खनन के खिलाफ पांच दिन में दूसरी बार कार्रवाई की गई। सलूंबर से खनन विभाग की टीम आधी रात को अवैध खनन वाली जगह पर पहुंची। मौके पर खनन विभाग ने एक हिटाची मशीन पकड़ी। वहीं एक पहाड़ी को अवैध रूप से खनन कर क्वाट्र्ज पत्थरों को निकाला हुआ बरामद किया। आधी रात को कार्रवाई को लेकर खनन विभाग ने साबला थाना पुलिस से मदद मांगी, लेकिन न तो पुलिस मौके पर पहुंची और न ही कोई मदद की है। ऐसे में रातभर खनन विभाग की टीम मौके पर ही तैनात रही। खनन विभाग ने जुर्माना भी लगाया है। साबला थाना क्षेत्र के बोडीगामा बड़ा गांव में बोडीगामा डेम के पास ही एक पहाडी को खोदकर अवैध रूप से क्वाट्र्ज पत्थरों का खनन किया जा रहा है। इसे लेकर खनन विभाग के पास लगातार शिकायत पर 1 जुलाई को खनन विभाग ने मौके से एक जेसीबी पकड़ी थी। खनन विभाग ने ढाई लाख का जुर्माना वसूला था, लेकिन कार्रवाई के पांच दिन बाद ही खनन माफिया फिर से उसी जगह पर अवैध खनन करने लगे। माइनिंग विभाग को दोबारा मिली शिकायत पर सलूंबर से माइनिंग विभाग के फोरमैन गोपाल डांगी हथियारबंद जवान के साथ बोडीगामा डेम के पास पहुंचे। रात के अंधेरे में डेम के पास पहाड़ी पर हिटाची मशीन लगाकर क्वाट्र्ज पत्थरों का खनन किया जा रहा था। वहीं खनन विभाग की टीम के आते ही खनन माफिया हिटाची मशीन को पास के ही झाड़ियों में छिपाकर भाग गए। कीचड़ और गड्ढों के बीच खनन विभाग की टीम मुश्किल से मौके पर पहुंची। अंधेरे में मोबाइल टॉर्च की रोशनी में खनन विभाग ने पूरी कार्रवाई को अंजाम दिया। वहीं अंधेरा होने के साथ ही खनन माफियाओं के डर से माइनिंग अधिकारियों ने साबला थाना पुलिस ने मदद मांगी।

छात्रावास का उद्घाटन आज

बांसवाड़ा, (निसं)। विद्या भारती संस्थान से सम्बद्ध विद्या निकेतन उमावि मंदारेश्वर परिसर के जिले के प्रथम नवीन और पूर्ण सुविधा से युक्त छात्रावास श्री सांदीपनि छात्रावास का शुभारंभ आज रविवार सुबह 10.30० बजे किया जाएगा। कार्यक्रम में बेणेश्वर धाम के मुख्य पीठाधीश्वर अच्युतानंद महाराज का सानिध्य प्राप्त होगा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में संभागीय आयुक्त नीरज के पवन, मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग प्रचारक विकासराज और विद्या भारती संस्थान के अध्यक्ष रमेश चंद्र बृजवासी का पाथेय मार्गदर्शन प्राप्त होगा। ध्यान रहे कि विद्या भारती संस्थान शिक्षा और संस्कार के क्षेत्र में अपने कार्य के लिए जाना जाता है। जिले में संस्थान के पहले छात्रावास का निर्माण किया गया है जिसमें प्रारंभ में 40 भैया विद्यालय में अध्ययन के साथ आवासीय छात्रावास में रहेंगे। विद्या भारती संस्थान के जिला सचिव ललित दवे ने बताया कि इस सत्र छात्रावास में 40० सीटों के लिए प्रवेश परीक्षा करवाई गई थी। छात्रावास में 8 कक्ष है जिसमें प्रत्येक कक्ष में 5 भैयाओ के लिए आवश्यकतानुसार सुविधा उपलब्ध है। प्रचार प्रमुख दिव्यराज ने बताया कि भैयाओ की व्यवस्था के लिए छात्रावास अधीक्षक की नियुक्ति की गई है जो 24 घंटे भैयाओ के साथ रहेंगे।

जनसंवाद कार्यक्रम में सुनी समस्याएं

राजसमंद, (निसं)। जिले की कुरज ग्राम पंचायत के सभागार में आयोजित जन संवाद कार्यक्रम में विधायक दीप्ति माहेश्वरी ने जनसमस्याएं सुनी एवं क्षेत्रीय जनता को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की झूठ और अफवाह फैलाने की राजनीति अब नहीं चलेगी। राजस्थान की भाजपा सरकार संकल्प पत्र की घोषणाओं को पूरा करने के लिए तेजी से कार्य कर रही है। प्रदेश के आगामी बजट में सुशासन, सुरक्षा और समृद्धि की झलक दिखेगी। जन संवाद में कुरज मण्डल के ग्रामीण बडी संख्या में पहुंचे और विधायक दीप्ति माहेश्वरी को अभाव अभियोगों से अवगत करवाया। मुख्य रूप से अवैध बजरी एवं रेती खनन, परिवहन निगम की बस सेवाओं, सामुदायिक भवन निर्माण एवं विस्तार, पीपली एवं कुरज में एनिकट निर्माण, अतिक्रमण हटाने, सडक निर्माण और विद्युत लाइन का स्थानान्तरण आदि विषय उठे। विभिन्न समस्याओं को निराकरण तत्काल उसी समय किया गया। माहेश्वरी ने कहा कि वें राज्य सरकार के स्तर के विषयों पर संबंधित मंत्रियों एवं विभागीय सचिवों से भेंट कर समाधान का प्रयास करेंगी। इस दौरान मण्डल अध्यक्ष उदयलाल अहीर, महामंत्री छीतरमल जाट, सांवरमल भील, राजेन्द्र व्यास, सरपंच अनिल जाट, अभिषेक चौधरी, पूरणमल जाट, जगदीश भील, जवाहर जाट, मंगलसिंह चौधरी, अम्बालाल गाडरी, मनीष सुखवाल, चन्द्रप्रकाश सामर सहित भाजपा कार्यकर्ता एवं ग्रामीण मौजूद थे।

जिला कार्यकारिणी का सम्मान समारोह

राजसमंद, ०। जिला के केलवा स्थित नवल श्याम कृष्ण गौशाला परिसर में राजस्थान गो सेवा समिति जयपुर जिला शाखा राजसमंद के जिलाध्यक्ष जेठू सिंह राजपुरोहित के सानिध्य में सम्मान समारोह का आयोजन शनिवार को किया गया। कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष जेठू सिंह राजपुरोहित ने बताया कि बताया कि अभी हाल ही नवल श्याम कृष्ण गौशाला में संतों के सानिध्य में 3० जून को दिव्य सत्संग एवं शपथ ग्रहण समारोह का ऐतिहासिक कार्यक्रम किया गया । प्रदेश अध्यक्ष दिनेश गिरी महाराज ने इस कार्यक्रम की प्रदेश स्तर तक सराहना की है। गौशाला के अध्यक्ष रामनारायण पालीवाल व पूर्व अध्यक्ष नरेंद्र एवम समिति के सभी सदस्यों को मेवाडी पगडी व इकलाई पहनाकर भव्य स्वागत-सम्मान किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ उपाध्यक्ष हरि भगवान बंग, उपाध्यक्ष लक्ष्मी लाल ईनाणी, महामंत्री पोपट माली, प्रचार प्रसार मंत्री सुरेश आगरिया, संगठन मंत्री भैरुलाल कुमावत, मीडिया प्रभारी भरत कुमार रजक, राजू पालीवाल, भंवरलाल पालीवाल,मदन पालीवाल समेत कई गौ भक्त मौजूद रहे।

जेके टायर एम्पलाइज यूनियन इंटक का धरना तीसरे दिन भी जारी

राजसमंद, (निसं)। जिला मुख्यालय स्थित जेके टायर एम्पलाइज यूनियन इंटक के अध्यक्ष चुन्नीलाल पंचोली ने कहा कि यूनियन का संघर्ष मजदूरों को न्याय और फैक्ट्री में प्रबंधन एवं जिला प्रशासन की ओर से पर्याप्त सुरक्षा के इंतजाम होने तक जारी रहेगा। जेके टायर फैक्ट्री प्रबंधन की ओर से श्रमिक यूनियन की एरियर एवं वेतन की राशि का भुगतान कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि यूनियन की अन्य मांगों पर भी प्रबंधन के साथ वार्ता चल रही है। वें शनिवार को यहां रेलवे स्टेशन के बाहर

- इंटक के अध्यक्ष चुन्नीलाल पंचोली ने कहा कि यूनियन का संघर्ष मजदूरों को न्याय और फैक्ट्री में प्रबंधन एवं जिला प्रशासन की ओर से पर्याप्त सुरक्षा के इंतजाम होने तक जारी रहेगा

स्थित इंटक कार्यालय पर जेके टायर एम्पलाइज यूनियन के धरने के तीसरे दिन शनिवार को आयोजित सभा में श्रमिकों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जेके टायर फैक्ट्री से मजदूरों के परिवार पलते हैं, जिसे हम किसी भी हालत में बंद नहीं होने देंगे और पेट पालने वाली फैक्ट्री का मैन गेट गुण्डागर्दी से बंद करने वालों के खिलाफ कार्यवाही होने और मजदूरों को फैक्ट्री परिसर में पर्याप्त सुरक्षा के इंतजाम होने तक जारी रखेंगे। उन्होंने कहा कि भामस के लोग राज्य में सत्ता होने के दम पर मनमानी पर उतर आए हैं और फैक्ट्री में बहुमत नहीं होने के बाद भी मान्यता प्राप्त करना चाहते हैं। इसको लेकर ही उनके द्वारा बिना किसी कारण के फैक्ट्री के मैन गेट को बंद कर मजदूरों को काम पर जाने से रोक दिया गया। उन्होंने कहा कि फैक्ट्री प्रबंधन और जिला प्रशासन को ऐसे लोगों के खिलाफ कार्यवाही करनी चाहिए। जिससे कि भविष्य में इस तरह की स्थिति फिर से उत्पन्न नहीं हो। उन्होंने कहा कि इसको लेकर ही इंटक के श्रमिकों ने फैक्ट्री में काम के लिए प्रवेश नहीं करते हुए शांति पूर्ण आंदोलन जारी रखा है। जबकि विपक्षी यूनियन के लोग श्रमिकों को डरा-धमका रहे हैं। ऐसे में प्रशासन को मामल में दखल देते हुए तत्काल ऐसे तत्वों की पहचान कर उनके खिलाफ कार्यवाही करते हुए श्रमिकों को सुरक्षा का विश्वास दिलाना चाहिए। सभा को इंटक के जिला महामंत्री शंकरलाल चौधरी, पूनाराम चौधरी, रतन गाडरी, कुलदीपसिंह, गोवर्धनलाल कुमावत, देवीसिंह राठौड, नाहरसिंह राव, लक्ष्मीलाल पालीवाल, लालसिंह चौहान, नारायणसिंह झाला, महेश उपाध्याय, गणेश गुर्जर, रामेश्वर पुरी, दिनेश छापरवाल व रमेश कुमावत ने भी संबोधित किया। इस दौरान हंसराज कुमावत, देवीलाल कुमावत, लक्ष्मीलाल, देवीसिंह, युगराज पालीवाल, हिम्मतसिंह, देवीलाल पालीवाल, किशनसिंह सहित सैकडों श्रमिक मौजूद थे।

इंटक कार्यालय पर आयोजित सभा में श्रमिकों को संबोधित करते यूनियन के अध्यक्ष चुन्नीलाल पंचोली।

सड़क हादसे में डूंगरपुर के युवक की मौत

डूंगरपुर, (निसं)। बिछीवाड़ा थाना क्षेत्र के नवलश्याम गांव के एक युवक की भीलवाड़ा के पास सड़क हादसे में मौत हो गई। परिजन भीलवाड़ा से शव लेकर शनिवार सुबह गांव नवलश्याम पहुंचे, जहां कार मालिक के घर के आगे सड़क पर ही एंबुलेंस को खड़ा कर दिया। परिजनों ने हादसे के लिए कार मालिक को जिम्मेदार मानते हुए आर्थिक सहायता की मांग पर बैठ गए। करीब आधे घंटे तक हंगामे के बाद समझाइश पर मामला शांत हुआ और शव लेकर रवाना हो गए।

बिछीवाड़ा थाना क्षेत्र के नवलश्याम गांव निवासी योगेशचन्द्र कलाल का बेटा कोटा कोचिंग में पढ़ाई करता है। योगेशचंद्र कलाल शुक्रवार सुबह अपने बेटे को मिलने के लिए कोटा जा रहा था। कार चलाने के लिए गांव के ही ड्राइवर युवक सुरेंद्र दरोगा को साथ ले गया। भीलवाड़ा के पास जाते ही उनकी कार का एक्सीडेंट हो गया। जिसमें योगेशचन्द्र कलाल और ड्राइवर सुरेंद्र दरोगा दोनों गंभीर घायल हो गए। दोनों को भीलवाड़ा अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टर ने जांच के बाद सुरेंद्र दरोगा को मृत घोषित कर दिया। वहीं घटना की सूचना पर दोनों के परिवार के लोग भीलवाड़ा अस्पताल पहुंच गए। शव को लेकर सुरेंद्र दरोगा के परिवार के लोग शनिवार सुबह नवलश्याम पहुंचे। सके बाद परिजनों ने एंबुलेंस को योगेशचन्द्र कलाल के घर के सामने ही चौराहे पर खड़ा कर दिया।

पौधारोपण कर सुरक्षा का लिया संकल्प

भारत माता मंदिर मैदान में पौधरोपण करते भारत विकास परिषद् माही के पदाधिकारी।

बांसवाड़ा, (निसं)। वृक्ष हमारे जीवन का आधार होते हैं पेड हमें जीवन प्रदान करने वाली ऑक्सीजन गैस प्रदान करते हैं जिसके बिना हमारा अस्तित्व असंभव है। इसलिए हर व्यक्ति अपने जीवन में अधिक से अधिक पौधे लगाकर उनका लालन-पालन के साथ संरक्षण भी करें। उक्त उद्गार सेवानिवृत्ति वन अधिकारी एवं पार्षद सज्जन सिंह राठौड ने भारत विकास परिषद शाखा माही की ओर से आयोजित भारत माता मंदिर मैदान्ग में वृक्षारोपण के दौरान व्यक्त किये। इस अवसर पर ख्यात चिकित्सक एवं रेड क्रोस सोसायटी के सचिव डॉ. आरके मालोत ने कहा कि स्कूली बच्चों को भी एक-एक पौधा वितरित किया जाये। इसके अलावा हर घर हरियाली के अंर्तगत प्रत्येक घर में पौधरोपण करने के लिए लोगों को जागरूक किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि वृक्ष और जल मानव जीवन का आधार होने के साथ-साथ उसका सुरक्षा कवच भी हैं। पत्रकार दीपक श्रीमाल ने कहा कि प्राकृतिक आपदाओं से बचने और पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए हर व्यक्ति को अपने जीवन में एक पेड अवश्य लगाना चाहिए। इस अवसर पर संरक्षक विनोद शाह ने भी वृक्षारोपण की महत्ता बताई। सचिव भुवनेश्वरी मालोत ने कहा कि आने वाले दिनों में अधिक से अधिक वृक्षारोपण के आयोजन किए जाएंगे। सदस्यों ने एक-एक पौधा रोपते हुए उनकी सुरक्षा भी सुनिश्चित करने का संकल्प लिया। आभार कोषाध्यक्ष रमेशचंद्र जैन ने माना। इस अवसर पर भरत शाह, सुबोध मालोत, सरोज शाह, जलराज गुप्ता, सुशील गुप्ता, जगन्नाथ तेली, शेलेश सेठ, सुनील मेहता, वैभव चंचावत, व्योम प्रकाश मालोत, रमेश चंद्र जैन, दीनबंधु कंसारा, योजना शाह, रीना शाह, शरद शाह, हितेंद्र गुप्ता, विरेंद्र सोनी, दीपक श्रीमाल, बृजेन्द्र पांडे, अवधेश मालोत, गौरव शाह आदि मौजूद रहे।

मैं मानद कप्तान जीतू राय, एसएम, वीएसएम, ओलंपियन निशानेबाज, पद्मश्री प्राप्त, ध्यानचंद खेल रत्न और अर्जुन पुरस्कार प्राप्त। मैं आपको बताना चाहता हूं कि भारतीय सेना के साथ मेरा 17 साल छह महीने का साथ एक जुलाई 2024 को खत्म हो गया। - जीतू राय

एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता, अपने रिटायर की घोषणा करते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

रियान पराग

शुभमन गिल की कप्तानी भारत की युवा क्रिकेट टीम जिम्बाब्वे के दौरे पर है। जहां दोनों टीमों के बीच 5 मैचों की टी20 सीरीज का आगाज हो चुका है। वहीं जिम्बाब्वे के खिलाफ पहले मैच में भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया है। इस दौरान तीन खिलाड़ियों ने भारत के लिए डेब्यू किया है। इसमें रियान पराग, ध्रुव जुरेल और अभिषेक शर्मा का नाम शामिल है। बता दें कि, ये तीनों खिलाड़ी घरेलू क्रिकेट के साथ-साथ आईपीएल में भी शानदार प्रदर्शन कर चुके हैं। रियान पराग और अभिषेक शर्मा ने आईपीएल 2024 में धमाकेदार प्रदर्शन किया था।

क्या आप जानते हैं ?... जिम्बाब्वे के तातेन्द्रा तेबु ने मई 2004 में श्रीलंका के विरुद्ध अपनी टीम की कप्तानी करके सबसे कम उम्र का टैस्ट कप्तान बनने का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया।

इंडिया-पाकिस्तान मैच का क्रेज बढ़ा, 23 हजार टिकट बिके

एजबेस्टन, 6 जुलाई। भारत और पाकिस्तान मैच को लेकर फैंस की दीवानगी हर तरफ देखने को मिलती है। किसी भी खेल में इन देशों की टीमें जब आमने-सामने होती हैं तो मुकाबला काफी दिलचस्प हो जाता है। एक बार फिर फैंस को अपने चहेते खिलाड़ियों को खेलते हुए देखना का मौका मिलने वाला है। दरअसल, इंग्लैंड में वर्ल्ड चैंपियंस ऑफ लीजेंड्स 2024 खेली जा रही है। जिसमें कुल 6 टीमें हिस्सी ले रही हैं। शनिवार को भारतीय चैंपियन और पाकिस्तान चैंपियन के बीच हाईवोल्टेज मुकाबला होने जा रहा है। इस मैच में भारत के पूर्व क्रिकेटर युवराज सिंह, सुरेश रैना, हरभजन सिंह, आरपी सिंह, इरफान पठान जैसे खिलाड़ी मौजूद रहेंगे। वहीं पाकिस्तान की ओर से शाहिद अफरीदी, यूनिस खान, शोएब मलिक, मिस्बाह उल हक मैच का हिस्सा होंगे। एजबेस्टन क्रिकेट ग्राउंड पर भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले बहुप्रतीक्षित वर्ल्ड चैंपियनिप ऑफ लीजेंड्स मैच के लिए सभी 23000 सीटें बिक चुकी हैं। डब्ल्यूसीएल की आधिकारिक विज्ञप्ति के अनुसार 3 जुलाई को एजबेस्टन में शुरू हुई वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स 18 जुलाई तक चलेगी। इंडिया चैंपियंस के खिलाड़ी सुरेश रैना ने कहा कि, पाकिस्तान के साथ खेलना हमेशा सम्मान की बात होती है और अब आज का मैच कोई अपवाद नहीं है। मैदान पर हमारी टीम जोश से भरी हुई है और अपना बेस्ट देने के लिए तैयार है। हमें उम्मीद है कि हमारे प्रदर्शन से फैंस को गर्व महसूस होगा।

भारत - युवराज सिंह (कप्तान), हरभजन सिंह, सुरेश रैना, इरफान पठान, यूसुफ पठान, रॉबिन उथप्पा, अंबाती रायुडू, गुरकीरत मान, राहुल शर्मा, नमन ओझा, राहुल शुक्ला, आरपी सिंह, विनय कुमार, धवल कुलकर्णी, सौरभ तिवारी, अनुरीत सिंह, पवन नेगी।

पुर्तगाल को हराकर फ्रांस सेमीफाइनल में पहुंचा

नई दिल्ली, 6 जुलाई। फ्रांस ने पुर्तगाल को पेनल्टी शूटआउट में 5-3 से हराकर यूरोपीय फुटबाल चैंपियनशिप (यूरो 2024) के सेमीफाइनल में जगह बनाई और क्रिस्टियानो रोनाल्डो का खिताब के साथ टूर्नामेंट से विदाई लेने का सपना तोड़ दिया। इस मुकाबले को रोनाल्डो बनाम काइलियन एमबापे के बीच जंग के रूप में देखा जा रहा था लेकिन आखिर में फ्रांसीसी खिलाड़ी अपने आदर्श फुटबॉलर पर भारी पड़ा। दोनों टीम ने एक दूसरे को कड़ी चुनौती दी लेकिन अतिरिक्त समय तक भी कोई टीम गोल नहीं कर पाई। इसके बाद पेनल्टी शूटआउट का सहारा लिया गया जिसमें पुर्तगाल के जोआओ फेलिक्स का शॉट गोल पोस्ट से टकरा गया। इसके बाद थियो हर्नांडेज़ ने निर्णायक किक को गोल में बदलकर फ्रांस को सेमीफाइनल में पहुंचा दिया। फ्रांस को यूरो 2021 के अंतिम 16 में और विश्व कप 2022 के फाइनल में पेनल्टी शूटआउट में हार का सामना करना पड़ा था, लेकिन यहां किस्मत उसके साथ थी। पुर्तगाल की इस हार से 39 वर्षीय रोनाल्डो ने यूरोपीय चैंपियनशिप से भी विदा ली। वह पहले ही घोषणा कर चुके थे कि वह आखिरी बार इस टूर्नामेंट में भाग ले रहे हैं। रोनाल्डो ने रिकॉर्ड छह बार यूरोपीय चैंपियनशिप में हिस्सा लिया। फ्रांस सेमीफाइनल में स्पेन से भिड़ेगा जिसने एक अन्य क्वार्टर फाइनल मैच में मेजबान जर्मनी को हराया।

चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए पाक नहीं जाएंगी टीम इंडिया

नई दिल्ली, 6 जुलाई। भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम के आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के 2025 संस्करण में हिस्सा लेने के लिए अगले साल पाकिस्तान जाने की संभावना नहीं है। एक रिपोर्ट के अनुसार, मेन इन ब्लू आठ-टीम आईसीसी इवेंट के लिए पाकिस्तान की यात्रा नहीं करेगा, जो 19 फरवरी से 9 मार्च तक खेला जाएगा। उपलब्ध जानकारी के मुताबिक, भारत की पाकिस्तान यात्रा के बारे में कोई भी फैसला भारत सरकार द्वारा लिया जाएगा। सूत्र ने बताया कि हालांकि टूर्नामेंट के विवरण पर अभी तक चर्चा नहीं की गई है, लेकिन इसकी बहुत कम संभावना है कि भारतीय टीम पाकिस्तान की यात्रा करेगी। अंततः निर्णय भारत सरकार पर निर्भर है। हालाँकि, पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) इस मुद्दे को इस महीने श्रीलंका में होने वाली आईसीसी बैठक में उठाने की योजना बना रहा है। आगे कहा गया है कि इस मामले पर सरकार का निर्णय अंतिम होगा, क्योंकि हमने अभी तक आंतरिक रूप से इसकी पुष्टि नहीं की है। चूंकि यह एक आईसीसी इवेंट है, इसलिए हमारे पास कोई भी एकतरफा निर्णय लेने का अधिकार नहीं है। हालाँकि, अगली बैठक के दौरान अधिक विवरण सामने आ सकते हैं। भारत ने 2008 के बाद से पाकिस्तान की यात्रा नहीं की है। पिछले 16 वर्षों में, केवल एक बार इन दोनों टीमों ने एक-दूसरे के खिलाफ द्विपक्षीय श्रृंखला खेली है, और वह 2012-13 में हुई थी। भारत को पिछले साल एशिया कप में हिस्सा लेने के लिए पाकिस्तान जाना था, लेकिन दोनों देशों के बीच तनाव के कारण टूर्नामेंट को पाकिस्तान से बाहर स्थानांतरित कर दिया गया और फाइनल सहित भारत के मैच श्रीलंका में खेले गए। हालाँकि, भारत के पाकिस्तान दौरे को छोड़ने के फैसले के बावजूद, पाकिस्तान ने पुरुष एकदिवसीय विश्व कप 2023 में भाग लेने के लिए भारत की यात्रा की और हैदराबाद, अहमदाबाद, चेन्नई, बेंगलुरु और कोलकाता में मैच खेले।

जिम्बाब्वे के खिलाफ 116 रन नहीं बना सके वर्ल्ड चैम्पियन

भारत पहले टी-20 मैच में 13 रन से हारा, रजा और चतारा को 3-3 विकेट

हरारे, 6 जुलाई। टी-20 वर्ल्ड कप जीतने के एक हफ्ते बाद भारत को जिम्बाब्वे से हार का सामना करना पड़ गया। टीम इंडिया को जिम्बाब्वे ने 5 मैचों की टी-20 सीरीज के पहले मुकाबले में 13 रन से हराया।

हरारे में भारतीय टीम 116 रन का टारगेट चेज नहीं कर सकी। टीम इंडिया के खिलाफ टी-20 इतिहास का सबसे छोटा स्कोर डिफेंड हुआ है। टीम के कप्तान सिकंदर रजा और तेंदाई चतारा ने 3-3 विकेट लिए। शनिवार को भारत ने टॉस जीतकर फील्डिंग चुनी। जिम्बाब्वे ने 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 115 रन बनाए। विकेटकीपर क्लाइव मदांदे ने नाबाद 29 रन बनाए, उन्होंने 10वें विकेट के लिए तेंदाई चतारा के साथ 25 रन की अहम पार्टनरशिप की थी। टीम इंडिया 19.5 ओवर में 102 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। कप्तान शुभमन गिल ने सबसे ज्यादा 31 रन बनाए। वॉशिंगटन सुंदर आखिर में 27 रन बनाकर आउट हुए। आवेश खान ने 16 रन का योगदान दिया। बाकी 8 कोई भी बैटर 7 से ज्यादा रन नहीं बना सका, हालांकि इस टीम में वर्ल्ड कप जीतने वाली टीम का कोई खिलाड़ी शामिल नहीं रहा।

भांवरी-ओलिवेटी की जोड़ी विम्बलडन से हुई बाहर

नई दिल्ली, 6 जुलाई। भारत के युकी भांबरी और फ्रांस के उनके जोड़ीदार अल्बानो ओलिवेटी जर्मनी के केविन क्राविएट्ज़ और टिम पुएट्ज़ से तीन सेटों में हारने के बाद विंबलडन टेनिस चैंपियनशिप के पुरुष युगल के दूसरे दौर से बाहर हो गए। भांबरी और ओलिवेटी की जोड़ी ने अच्छी शुरुआत की और पहला सेट जीतकर बढ़त बनाई लेकिन इसके बाद वह अपनी लय बरकरार नहीं रख पाए और आठवीं वरीयता प्राप्त जर्मन जोड़ी से 2 घंटे 5 मिनट तक चले मैच में6-4 4-6 3-6 से हार गए। भांबरी और ओलिवेटी ने पहले दौर में कजाखस्तान के अलेक्जेंडर बुब्लिक और अलेक्जेंडर शेवचेंको को हराया था। भारत की निगाहें अब रोहन बोपन्ना पर टिकी हैं जिन्होंने ऑस्ट्रेलिया के मैथ्यू एबडेन के साथ जोड़ी बनाई है। ऑस्ट्रेलियाई ओपन चैंपियन और यहां दूसरी वरीयता प्राप्त यह जोड़ी दूसरे दौर में जर्मनी के हेंड्रिक जेबेंस और कॉन्स्टेंटिन फ्रैंटजेन से भिड़ेगी। ओलंपिक में जगह बना चुके सुमित नागल और एन श्रीराम पहले ही टूर्नामेंट से बाहर हो गए थे।

पहले मैच में हार के बाद राधा यादव का बयान, कहा-

हमने गेंदबाजी में कुछ गलतियां की

नई दिल्ली, 6 जुलाई। भारतीय स्पिनर राधा यादव ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में 12 रन की हार के बाद स्वीकार किया कि उनके गेंदबाजों ने कुछ गलतियां की जिसका टीम को खामियाजा भुगतना पड़ा।। तजमिन ब्रिट्स (81) और मारिजान कैप (57) ने भारतीय गेंदबाजों की एक नहीं चलने दी जिससे दक्षिण अफ्रीका चार विकेट पर 189 रन बनाने में सफल रहा।

इसके जवाब में भारतीय टीम चार विकेट पर 177 रन ही बना पाई। राधा ने मैच के बाद संवाददाताओं से कहा,''यह जानना महत्वपूर्ण था कि इस विकेट पर किस लेंथ और किस गति से गेंदबाजी करनी है। हमने गेंदबाजी इकाई के रूप में कुछ गलतियां की। हमने उन्हें 10 से 15 रन अधिक बनाने दिए। हमें उन्हें यॉर्कर लेंथ पर गेंद करनी चाहिए थी।'' उन्होंने रविवार को होने वाले दूसरे मैच के बारे में कहा,''हमें अपनी रणनीति पर अमल करना होगा और जल्द ही विकेट के व्यवहार को समझना होगा। इससे हमारे लिए काम आसान हो जाएगा।'' दक्षिण अफ्रीका को इससे पहले वनडे श्रृंखला और एकमात्र टेस्ट मैच में हार का सामना करना पड़ा था और उसकी स्टार बल्लेबाज तज़मिन ब्रिट्स ने कहा कि उनकी टीम को इस जीत की सख्त जरूरत थी जिससे उनका अगले साल बांग्लादेश में होने वाले टी20 विश्व कप के लिए आत्मविश्वास बढ़ेगा।

ब्रिट्स ने कहा,''हमें इस तरह की जीत और टीम में आत्मविश्वास बढ़ाने की सख्त जरूरत है। इस तरह के आत्मविश्वास से हम न केवल सेमीफाइनल में जगह बना सकते हैं बल्कि विश्व कप भी जीत सकते हैं। इस मैच में जीत दर्ज करना शानदार रहा लेकिन अगले दो मैच जीतना और बेहतर होगा।

ओलंपिक की तैयारी के लिए पेरिस डायमंड लीग में विश्व स्तरीय खिलाड़ियों के सामने होंगे साबले, जेना

नई दिल्ली, 6 जुलाई। भारत के शीर्ष स्टीपलचेस एथलीट अविनाश साबले और भाला फेंक खिलाड़ी किशोर जेना रविवार को एक दिवसीय डायमंड लीग के पेरिस चरण में अपनी ओलंपिक तैयारियों को बेहतर करने की उम्मीद करेंगे। मौजूदा ओलंपिक और विश्व चैंपियन भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने पिछले कुछ समय से परेशान कर रही जांघ की समस्या के कारण इसमें हिस्सा नहीं लेने का फैसला किया है।

साबले और जेना दोनों ही फॉर्म में नहीं हैं और उन्होंने ओलंपिक से पहले ज्यादा प्रतियोगिताओं में हिस्सा नहीं लिया है। पर अब वे पेरिस की परिस्थितियों के अनुकूल ढलने की

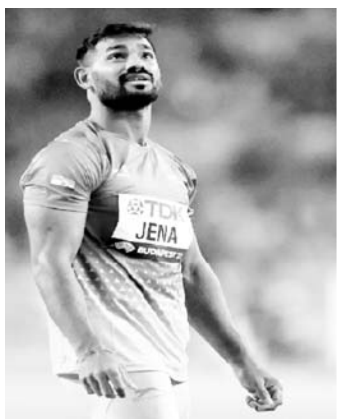

कोशिश करेंगे। ओलंपिक में एथलेटिक्स स्पर्धायें एक अगस्त से शुरू होंगी। 29 वर्षीय साबले ने अभी तक दो 3000 मीटर स्टीपलचेस स्पर्धाओं में हिस्सा लिया है। उन्होंने पोर्टलैंड में 8:21.85 और पंचकुला में 8:31.75 का समय निकाला था जबकि उनका व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ समय 8:11.20 है।

एशियाई खेलों के मौजूदा स्वर्ण पदक विजेता ने कहा, ''मैंने पिछले दो साल में गलतियां की हैं। मैं दो विश्व चैंपियनशिप (2022 और 2023) में पूरी तरह फिट था। लेकिन दोनों में अच्छा नहीं कर सका। मैं सुधार करना चाहता हूं और उम्मीद करता हूं कि यह मेरा सर्वश्रेष्ठ ओलंपिकहोगा।''

अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की संगीत सेरेमनी में इन क्रिकेटर्स ने की शिरकत

मुंबई, 6 जुलाई। अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट 12 जुलाई को शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं, लेकिन उनकी शादी से पहले की रस्में मार्च से ही चल रही हैं। अंबानी परिवार ने शुक्रवार को नीता मुकेश अंबानी कल्चरल सेंटर में इस कपल के लिए एक भव्य संगीत समारोह का आयोजन किया। जिसमें बॉलीवुड सेलिब्रिटी के साथ क्रिकेटर्स ने भी शिरकत की। अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के संगीत समारोह में टी20 वर्ल्ड कप का खिताब जीतने वाले सूर्युकमार यादव और हार्दिक पंड्या भी नजर आए। हालांकि, हार्दिक इस दौरान अपनी भाभी पंखुड़ी भाई क्रुणाल और सहयोगी खिलाड़ी ईशान किशन के साथ नजर आए।

म्यांमा के खिलाफ मैत्री मैचों के लिए भारत की 23 सदस्यीय महिला टीम की घोषणा

नई दिल्ली, 6 जुलाई। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ ने शनिवार को म्यांमा के खिलाफ यांगून में नौ और 12 जुलाई को होने वाले दो मैत्री मैचों के लिए 23 सदस्यीय सीनियर महिला टीम की घोषणा की।

मुख्य कोच चाओबा देवी ने एआईएफएफ की विज्ञप्ति में कहा, ''टीम में सीनियर और जूनियर खिलाड़ियों का मिश्रण है। मैं टीम के संयोजन से संतुष्ट हूं। पिछले महीने उज्बेकिस्तान के साथ खेलने के बाद हमने 10 दिन अंदर अपना राष्ट्रीय शिविर शुरू कर दिया। ''

उन्होंने कहा, ''सभी खिलाड़ी फिट हैं जो अच्छी बात है। खिलाड़ी अपने क्लबों में ट्रेनिंग ले रही थीं। भारतीय महिला फुटबॉल टीम का पिछला दौरा उज्बेकिस्तान का जिसमें वह मेजबान टीम से एक मैच में 0-3 से हार गयी थी और दूसरे मैच में 0-0 से ड्रा खेला था।

भारतीय टीम : गोलकीपर: श्रेया हुड्डा, एलंगबाम पंथोई चानू, मैबाम लिनथोइंगम्बी देवी। डिफेंडर: लोइटोंगबाम आशालता देवी, हेमम शिल्की देवी, संजू, वांगखेम लिनथोइंगम्बी देवी, अरुणा बाग।

प्रज्ञाननंदा और गुकेश टाईब्रेकर में हारे, कारुआना ने जीता खिताब

बुखारेस्ट, 6 जुलाई। भारत के आर प्रज्ञाननंदा और डी गुकेश को चार खिलाड़ियों के बीच खेले गए टाइब्रेकर में हार का सामना करना पड़ा जिसमें दुनिया के दूसरे नंबर के खिलाड़ी फैबियानो कारुआना ने तीनों रैपिड गेम जीतकर सुपरबेट क्लासिक में अपने खिताब का सफलतापूर्वक बचाव किया। कारुआना क्लासिकल प्रारूप में नीदरलैंड के अनीश गिरी से हार गए, जिससे मुकाबला रोचक बन गया क्योंकि गुकेश, प्रज्ञाननंदा और फ्रांस के अलीरेजा फिरोजा सभी उनकी बराबरी पर पहुंच गए।

प्रज्ञाननंदा मुख्य बाजी में अलीरेजा के सामने एक समय बेहद मुश्किल स्थिति में फंसे हुए थे। यदि फ्रांसीसी खिलाड़ी क्लासिकल दौर की इस बाजी को जीत जाता तो फिर वह कारुआना से आगे निकल जाते और विजेता का

फैसला करने के लिए टाइब्रेकर की जरूरत नहीं पड़ती। लेकिन कारुआना हार गए, जबकि गुकेश और प्रज्ञाननंदा ने अपनी अपनी बाजियां ड्रॉ खेली जिससे विजेता का फैसला करने के लिए चार खिलाड़ियों के बीच टाइब्रेकर की स्थिति बन गई। कारुआना ने दिखाया कि आखिर उन्हें क्यों टाइब्रेकर का मास्टर कहा जाता है।

उन्होंने साबित कर दिया कि वे युवा पीढ़ी से बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। अमेरिका के इस खिलाड़ी ने टाइब्रेकर में अपने तीनों प्रतिद्वंदियों गुकेश, प्रज्ञाननंदा और अलीरेजा को हराकर 68500 अमेरिकी डॉलर का पहला पुरस्कार जीता।

इससे पहले प्रज्ञाननंदा टूर्नामेंट में अपनी पहली हार की तरफ बढ़ रहे थे लेकिन अलीरेजा की एक गलती का फायदा उठाकर वह बाजी ड्रा करने में सफल रहे। गुकेश ने वेस्ली सो के साथ अंक बांटकर टाइब्रेकर में खेलने का हक पाया था।

माही के बर्थडे पर बनाया 100 फीट ऊंचा कट आउट

नई दिल्ली, 6 जुलाई। पूर्व भारतीय कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के 43वें जन्मदिन के मौके पर फैंस की दिवानगी देखते ही बन रही है। अपने थला के जन्मदिन के मौके पर

तेलुगु फैंस ने माही का 100 फीट कट आउट बनाया है। रांची में 7 जुलाई 1981को जन्में एमएस धोनी की फैन फॉलोइंग पूरी दुनिया भर में है। आईपीएल के समय हर मैदान धोनी के फैंस से भरे होते हैं। पहले अपनी कप्तानी में टी20 वर्ल्ड कप के अलावा वनडे वर्ल्ड कप और आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी देश के नाम की। इसके बाद आईपीएल में भी धोनी का जलवा आज भी बरकरार है। अपनी टीम चेन्नई सुपर किंग्स को पांच बार चैंपियन बनाया है।

घरेलू क्रिकेट सत्र की तैयारियों के लिए आरसीए एडहॉक कमेटी की हुई बैठक

जयपुर 6 जुलाई। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक विधायक जयदीप बिहाणी की अध्यक्षता मे आज जयपुर मे राजस्थान क्रिकेट संघ एडहॉक कमेटी कि मीटिंग आयोजित हुई जिसमे सभी सदस्यो ने बीसीसीआई के आगामी घरेलू क्रिकेट सत्र से पुर्व राजस्थान के खिलाडियो को उचित तैयारियो व विभिन्न आयु वर्ग कि टीमो के सभावितो हेतु राज्य कि क्रिकेट प्रतियोगिताओ व अन्य गतिविधियो को जल्द से जल्द शुरू करने का निर्णय किया गया। जयदीप बिहाणी जी ने बताया की कमेटी ने आगामी दिनो मे क्रिकेट पिच व मैदान के रखरखाव की अहमियत को देखते हुए 3 दिवसीय मैदान व पिच क्युरेटर सेमीनार के आयोजन सहित राज्य स्तरीय अंडर 19 क्रिकेट प्रतियोगिता के आयोजन किये जाने पर सहमती प्रदान की। कमेटी ने आरसीए स्टाफ को आगामी क्रिकेट गतिविधियो की तैयारीयो हेतू निर्देश भी दिए। इस अवसर पर आरसीए एडहॉक कमेटी सयोजक जयदीप बिहाणी व सदस्य विमल शर्मा, रतन सिंह व धर्मवीर सिंह शेखावत मौजुद थे।

वर्ल्ड जूनियर स्क्वैश में भारतीय टीम की कोच होंगी जयपुर की सुरभि मिश्रा

अच्छी तैयारी, इस बार करेंगे पहले से अच्छा प्रदर्शन

जयपुर, 6 जुलाई। पूर्व अंतरराष्ट्रीय स्क्वैश खिलाड़ी और भारतीय स्क्वैश टीम की कोच सुरभि मिश्रा का कहना है कि भारतीय टीम अच्छी तैयारी के साथ वर्ल्ड चैंपियनशिप के लिए जा रही है। हम हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हैं और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। गुलाबी नगर की सुरभि मिश्रा को ह्यूस्टन में 12 से 23 जुलाई तक आयोजित होने वाली डब्ल्यूएसएफ वर्ल्ड जूनियर स्क्वैश चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम का कोच नियुक्त किया है। सुरभि 8 जुलाई को भारतीय दल के साथ दिल्ली से ह्यूस्टन के लिए उड़ान भरेंगी।

पिछले दस साल से लगातार भारतीय टीम के साथ जुड़ी सुरभि ने मीडिया से बातचीत में कहा कि फेडरेशन की ओर से बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई है। उन्होंने कहा कि भारतीय खिलाड़ी अच्छी तैयारी और पूरे फॉर्म में हैं। टीम की प्रैक्टिस और परफॉरमेंस को देखते हुए कह सकते हैं कि वर्ल्ड चैंपियनशिप में हम पहले के मुकाबले इस बार कई पदक जीतकर लौटेंगे। सुरभि ने कहा कि वर्ल्ड चैंपियनशिप में दुनिया की शीर्ष टीमें हिस्सा ले रही हैं।

वहां हर मुकाबला चुनौतीपूर्ण होगा। लेकिन हमें पदक जीतने के लिए इजिप्ट, मलेशिया, इंग्लैंड, पाकिस्तान और मेजबान अमेरिका जैसी मजबूती टीमों से टक्कर लेनी होगी। सुरभि की अगुवाई में ही भारतीय दल ने पिछले वर्ष चीन में हुए एशियाई खेलों में दो स्वर्ण, एक रजत और दो कांस्य सहित पांच पदक अपने नाम किए थे। एशियाई खेलों के इतिहास में भारत का स्क्वैश में यह अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।

40 देशों की टीमें खेलेंगी

सुरभि ने बताया कि जूनियर वर्ल्ड कप में 40 देशों की टीमें हिस्सा लेंगी। इसमें 12 से 17 जुलाई तक व्यक्तिगत चैंपियनशिप के मुकाबले आयोजित किए जाएंगे, वहीं 18 से 23 जुलाई तक टीम चैंपियनशिप के मुकाबले होंगे। चैंपियनशिप में भारत

का 12 सदस्यीय दल हिस्सा लेगा। इसमें बॉयज और गर्ल्स कैटेगरी में छह-छह खिलाड़ी शामिल हैं।

जयपुर का अवलोकित भी टीम में

वर्ल्ड चैंपियनशिप के लिए भारतीय दल में जयपुर के अवलोकित सिंह को भी शामिल किया गया है। सुरभि ने बताया कि अवलोकित को पिछले माह चेन्नई में हुई ट्रॉयल के आधार पर टीम में चुना गया है। अवलोकित वर्तमान में जूनियर रैंकिंग में नम्बर सात के खिलाड़ी हैं। अवलोकित ने स्क्वैश खेल की शुरुआत जयपुर में सवाई मानसिंह स्टेडियम स्थित राजस्थान स्क्वैश एकेडमी से की। वे पिछले कई साल से सुरभि मिश्रा से ही प्रशिक्षण ले रहे हैं। इस दौरान अवलोकित ने राष्ट्रीय स्तर पर कई खिताब अपने नाम किए हैं।

सुरभि खुद जीत चुकी हैं वर्ल्ड जूनियर में पदक

सुरभि मिश्रा खुद वर्ल्ड जूनियर चैंपियनशिप में देश के लिए पदक जीत चुकी हैं। उन्होंने बताया कि 2009 में चेन्नई में हुई वर्ल्ड चैंपियनशिप में उन्होंने गर्ल्स टीम चैंपियनशिप में कांस्य पदक हासिल किया। यह इस टूर्नामेंट में देश का पहला पदक था। इसी चैंपियनशिप में दीपिका पल्लीकल ने व्यक्तिगत स्पर्धा में भी कांस्य पदक हासिल किया था। उन्होंने बताया कि भारत ने 2012 में कतर में बॉयज टीम चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता था। पिछले वर्ष आस्ट्रेलिया के मेलबोर्न में हुई जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप में भारत की गर्ल्स टीम शीर्ष आठ में रही, वहीं 2023 में हुई बॉयज जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप में भारत ने पांचवां स्थान हासिल किया था।

भारतीय टीम

बॉयज- शौर्य बावा (दिल्ली), युवराज वाधवानी (मुम्बई), अयान वजीरअली (मुम्बई), अरिहन्त के. एस. (तमिलनाडु), अवलोकित सिंह (जयपुर), तवनीत सिंह मूंदड़ा (मध्य प्रदेश)।

गर्ल्स- अनाहत सिंह (दिल्ली), उन्नित त्रिपाठी (उत्तर प्रदेश), निरुपमा दुबे (महाराष्ट्र), शमीना रियाज (तमिलनाडु), टियाना परसरामपुरिया (महाराष्ट्र), सहर नैयर (चंडीगढ़)।

कोच- सुरभि मिश्रा और हरिंदर पाल सिंह संधू।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के दूसरी बार लोकसभा अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार कोटा आगमन पर शहर भर में जगह-जगह उनका भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। बिड़ला के स्वागत के लिए शहर भर में स्वागत द्वार बनाए गये तथा स्वागत मंचों के जरिये पुष्प वर्षा भी की गई।

वन रक्षक भर्ती परीक्षा पेपर लीक केस में 11 आरोपी गिरफ्तार

पुलिस ने 2022 में हुई इस परीक्षा के फर्जीवाड़े का खुलासा कर दिया है

- आरोपियों ने हरेक अभ्यर्थी से 8 लाख रू. लिये थे।
- आरोपी मोबाइल में प्रश्न पत्र लाए थे तथा अभ्यर्थियों को बोल-बोलकर जवाब लिखवाए गए थे।
- इन सभी अभ्यर्थियों का वन रक्षक पद पर चयन हो गया था।

बांसवाड़ा, 6 जुलाई (निसं)। पुलिस ने वनरक्षक भर्ती परीक्षा-2022 में पेपर लीक मामले का खुलासा करते हुए 11 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। महानिरीक्षक पुलिस एस. परिमला, जिला पुलिस अधीक्षक हर्षवर्धन अग्रवाल के निर्देशन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. राजेश भारद्वाज, एसओजी के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लाखन सिंह मीना एवं पुलिस उप अधीक्षक एसओजी बाबूलाल मुरारिया के नेतृत्व में टीम गठित की गयी थी।

जिला पुलिस अधीक्षक हर्षवर्धन अग्रवाल ने बताया कि डमी कैंडिडेट बिठाकर परीक्षा दिलाने के मामले की जाँच अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लीव रिजर्व रेंज धनफूल मीना कर रहे थे। जांच के दौरान प्रवीण पुत्र हीरालाल मालवीया, निवासी तिलक नगर प्रतापगढ़, हाल शास्त्री नगर हाऊसिंग बोर्ड, बांसवाड़ा व सविता डोडियार पत्नी प्रवीण मालवीया निवासी तिलक नगर प्रतापगढ़, हाल शास्त्री नगर हाऊसिंग बोर्ड, बांसवाड़ा, को 28 जून को गिरफ्तार किया गया था। अनुसंधान के दौरान प्रवीण मालवीया व उसकी पत्नी सविता डोडियार ने बताया कि वनरक्षक भर्ती सूचना 2020 में निकली थी, जिसकी परीक्षा 13 नवंबर 2022 को दो पारियों में हो रही थी। सकन सिंह खड़िया ने परीक्षा के एक दिन पहले फोन कर बताया कि वनरक्षक भर्ती परीक्षा में बैठने वाले अभ्यर्थियों से बात कर 8 लाख रुपये प्रति कैंडिडेट की व्यवस्था कर सकते हो तो उनको बुला लो, कल की परीक्षा के पेपर लेकर आयेंगे।

इस पर मालवीया ने भीलकुआ निवासी छगन पारगी के माध्यम से सुक्राम पुत्र रमेश डामोर निवासी बगायचा थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक नाका बड़ोदिया, सुभाष पुत्र रमेश डिंडोर निवासी कोठारिया थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक नाका टिमेड़ा, वीरसिंह पुत्र कन्हैयालाल कटारा निवासी नवागांव थाना कुशलगढ़, हाल अध्यापक राउमावि उलटन धरियावाद, शीला पत्नी ईश्वरलाल पणदा निवासी मगरदा थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक नाका कुशलगढ़, निरमा पत्नी सुक्राम डामोर निवासी बकायचा थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक नाका कुशलगढ़, शिल्पा पत्नी भावचंद मईड़ा निवासी नागदा बड़ी थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक रेंज डूंगरा, संगीता पुत्री पवन कुमार गरासिया निवासी रोहनिया रामसिंह थाना सज्जनगढ़, हाल वनरक्षक नाका कुशलगढ़, ईश्वरलाल पुत्र नाथु पणदा निवासी मगरदा थाना कुशलगढ़ को शास्त्री नगर किराये के मकान में बुलाया। तेरह नवंबर की सुबह हरीश उर्फ हीराराम पुत्र सरतनाराम सारण निवासी अरटवाव गुड़ामलानी बाड़मेर व अभिमन्यु सिंह पुत्र हिम्मत सिंह चौहान निवासी चिखला थाना कुआ जिला डूंगरपुर, हाल कनिष्ठ अभियंता शिक्षा विभाग मुख्य खंड शिक्षाधिकारी चिखली जिला डूंगरपुर दोनों घर आये और अपने मोबाइल में लाये परीक्षा का पेपर सभी अभ्यर्थियों को बोलकर हल करवाया जिससे सभी अभ्यर्थियों का वनरक्षक भर्ती 2022 में चयन हो गया। पुलिस ने सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है।

पुलिस टीम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. राजेश भारद्वाज, एसओजी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लाखन सिंह मीना, एसओजी पुलिस उप अधीक्षक बाबूलाल मुरारिया, सहायक उपनिरीक्षक अमरसिंह व चन्द्रवीर सिंह, एसओजी हैड कांस्टेबल संतोष कुमार, एसओजी कांस्टेबल लक्ष्मणलाल, एसओजी चालक कांस्टेबल अरविन्द कुमार, कांस्टेबल कैलाशचंद्र शामिल थे।

दूसरी बार लोकसभा अध्यक्ष बनने के बाद कोटा पहुँचे ओम बिड़ला का भव्य स्वागत

हिंडोली से कोटा तक भव्य रोड शो, स्वागतद्वार बनाकर जगह-जगह शानदार स्वागत हुआ

- रोड शो में शामिल लोगों ने ओम बिड़ला की तस्वीर वाली टी शर्ट पहन रखी थीं।
- भाजपा के स्थानीय नेताओं व कार्यकर्ताओं ने स्पीकर बिड़ला को 51 किलो का पुष्पहार पहनाया तथा साफा पहनाकर शाल ओढ़ाया।
- बिड़ला के साथ, प्रदेश सरकार के मंत्री मदन दिलावर, हीरालाल नागर तथा क्षेत्र में भाजपा विधायकों ने भी रोड शो में शिरकत की।

जयपुर, 6 जुलाई (का.सं.)। लोकसभा में दूसरी बार अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार अपने लोकसभा क्षेत्र कोटा-बूंदी पहुंचने पर ओम बिड़ला का भाजपा कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया। हैलिकॉप्टर से बूंदी के हिंडोली विधानसभा क्षेत्र पहुंचने के बाद हिंडोली से बूंदी तक पहले चरण का रोड शो हुआ।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला खुली जीप में भाजपा के स्थानीय नेताओं के आम जनता का अभिवादन करते हुए हिंडोली से बूंदी की तरफ रवाना हुए। उनके स्वागत में बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ताओं और आमजन की भीड़ उमड़ी, साथ में गाड़ियों का भी लंबा काफिला था। जगह-जगह उनका फूल बरसाकर और मालाएं पहनाकर स्वागत किया गया। बिड़ला के रोड शो का दूसरा चरण कोटा में हुआ। ओम बिड़ला लोकसभा में दूसरी बार अध्यक्ष बनने वाले राजस्थान के दूसरे नेता हैं। इससे पहले कांग्रेस के बलराम जाखड़ कांग्रेस की सरकार के वक्त लोकसभा के दो बार अध्यक्ष बने थे। दूसरी बार इस पद पर काबिज होने से ओम बिरला राजस्थान में भाजपा का बड़ा चेहरा बन कर उभरे हैं।

कोटा संवाददाता के अनुसार, कोटा शहर में बिड़ला के स्वागत के लिए प्रवेश द्वार लगाए गए। प्रवेश द्वार के दोनों तरफ़ से पन्नियों की बरसात और नगाड़ों से लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला का भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में उपस्थित महिलाओं, पुरूषों ने सिर पर साफे बांधे हुए थे और कई लोगों ने ओम बिड़ला की तस्वीर छपी टीशर्ट पहन रखी थी। लोगों ने इस अवसर को एक भव्य उत्सव के रूप में मनाया। कोटा शहर में विभिन्न संस्थाओं, व्यापारियों, जनप्रतिनिधियों, भाजपा पदाधिकारियों ने लोकसभा अध्यक्ष का जोश के साथ स्वागत किया। जगह-जगह पर स्वागत द्वार व मंच बनाए गए और आतिशबाजी भी की गई।

कोटा प्रभारी मंत्री गौतम कुमार दक, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष मोतीलाल मीणा, प्रदेश मंत्री अनुसुइया, शिक्षामंत्री मदन दिलावर, ऊर्जामंत्री हीरालाल नागर, कोटा दक्षिण विधायक संदीप शर्मा, लाडपुरा विधायक कल्पना देवी, पूर्व कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी, रामगोपाल बैरवा सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने लोकसभाध्यक्ष को साफा, शॉल, 51 किलो का पुष्पहार एवं श्रीराम मंदिर का चिन्ह देकर उनका भव्य स्वागत किया।

कश्मीर में दो...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मुठभेड़ कुलगाम के मोदरगाम गांव में उस समय शुरू हुई जब सुरक्षा बलों की संयुक्त टीमें आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद इलाके में घेराबंदी और तलाश अभियान (कासो) चला रही थीं।

एक सुरक्षा अधिकारी ने कहा, जब सेना की संयुक्त टीम पर गोलीबारी शुरू हुई तो अभियान एक मुठभेड़ में बदल गया। शुरुआती गोलीबारी में सेना की एलीट यूनिट का एक जवान गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल जवान को एक चिकित्सा सुविधा में ले जाया गया जहाँ उसकी मौत हो गई।

केन्द्रीय बजट...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विशेष सत्र आयोजित किया गया था। नए सांसदों ने शपथ ली और 27 जून को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित किया।

मु.मंत्री भजनलाल ने जयपुर शहर के विभिन्न प्रोजैक्ट्स का निरीक्षण किया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शनिवार को हीरापुरा बस टर्मिनल (अजमेर रोड) पर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। मु.मंत्री ने, मानसरोवर से अजमेर रोड तक मैट्रो विस्तार के निर्माण कार्यों का भी अवलोकन कर अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये।

- मुख्यमंत्री ने हीरापुरा बस टर्मिनल तथा जयपुर मैट्रो फेज़ प्रथम-डी के निर्माण कार्यों का निरीक्षण किया।
- सांगानेर में, मु.मंत्री ने 300 बेड की क्षमता वाले अस्पताल का निर्माण कार्य शीर्घ करने का निर्देश दिया।
- मु.मंत्री आर.यू.एच.एस. भी गए तथा स्वास्थ्य सुविधाओं का जायजा लिया और वहाँ भर्ती मरीजों से भी बात की।

जयपुर, 6 जुलाई (का.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने आमजन के आवागमन एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का धरातल पर जायजा लेने के लिए शनिवार को जयपुर शहर के विभिन्न प्रोजेक्ट्स का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने निर्माण कार्यों एवं व्यवस्थाओं के संबंध में अधिकारियों से चर्चा की तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने सबसे पहले अजमेर रोड स्थित हीरापुरा बस टर्मिनल पहुंचकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने अधिकारियों से प्रोजेक्ट के संबंध में विस्तृत जानकारी ली। इस दौरान मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि यात्रियों के लिए पेयजल की उचित व्यवस्था, बैठने हेतु छायादार स्थान, सफाई व्यवस्था सहित विभिन्न मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए ताकि अगस्त माह से बसों का संचालन प्रारम्भ किया जा सके।

मुख्यमंत्री शर्मा ने जयपुर विकास प्राधिकरण एवं नगर निगम के अधिकारियों को मानसून में भारी बारिश से होने वाली समस्याओं से बचाव के लिए पूर्व में ही माकूल व्यवस्था करने के निर्देश दिए, जिससे आमजन को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। शर्मा ने मानसरोवर में जयपुर मेट्रो फेज 1-डी के तहत मानसरोवर से अजमेर रोड चौराहा तक मेट्रो विस्तार के प्रगतिरत निर्माण कार्य का अवलोकन किया।

इस दौरान उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि विकास कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए शीघ्र इस प्रोजेक्ट को पूर्ण किया जाए। उन्होंने नवनिर्मित हीरापुरा बस टर्मिनल तक मेट्रो सुविधा के विस्तार के संबंध में चर्चा की। साथ ही, मेट्रो के फेज-2 के लिए रूट निर्धारित करने तथा डीपीआर बनाने के लिए टेण्डर शीघ्र किए जाने के संबंध में निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने सांगानेर में खुली जेल का निरीक्षण किया। इसके बाद उन्होंने 300 बेडेड अस्पताल बनाने के लिए जयपुर विकास प्राधिकरण के अधिकारियों को एक सप्ताह में भूमि आवंटन की कार्यवाही पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि इस कार्य की शीघ्र डीपीआर तैयार करें, जिससे दीपावली से पहले निर्माण कार्य का शिलान्यास किया जा सके।

शर्मा इसके बाद राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ साइंस (आरयूएचएस) पहुंचे। यहां उन्होंने मॉडर्न डायग्नोस्टिक सेंटर, आईसीयू कॉम्प्लेक्स, आई ओटी यूनिट का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों को आरयूएचएस में चिकित्सा सुविधाओं को बेहतर बनाने, चिकित्सकों की नियुक्ति करने, मरीजों के परिजनों के ठहरने की उचित व्यवस्था करने के संबंध में निर्देश दिए।

राज्यपाल व विधानसभा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मीडिया हैण्डिल "एक्स" पर डाली गई एक पोस्ट में संविधान के एक प्रावधान का हवाला दिया, जिसमें कहा गया है कि कोई विधायक, सदन का विधिवत सदस्य बनने से पूर्व शपथ अथवा प्रक्रियानुसार पुष्टि के लिए राज्यपाल या उनकी तरफ से इस कार्य के लिए नियुक्त किए गए किसी व्यक्ति के समक्ष अपनी सहमति प्रकट करता है। उन्होंने स्पीकर द्वारा दिए अन्य नियमों के हवाले भी खारिज करते हुए लिखा कि "क्या कोई भी नियम संविधान से ऊपर हो सकता है?" लेकिन राज्यपाल ने जब शपथ दिलाने अथवा यह जिम्मेदारी किसी और को देने से इंकार कर दिया था, तब पिछले हफ्ते बनर्जी और सरकार विधानसभा भवन के बाहर धरने पर बैठ गए थे।

किन्तु, राज्यपाल ने आज सुबह ही एक फरमान जारी कर डेपुटी स्पीकर को शपथ दिलाने के लिए अधिकृत किया था। हालांकि, स्पीकर ने तब तक विधानसभा का एक विशेष सत्र आयोजित करने का आदेश दे चुके थे। जिसमें यह घोषणा की गई कि सदन की कार्यवाही का संचालन सिर्फ राज्यपाल की सहमति पर ही निर्भर नहीं हो सकता। स्पीकर बिमान बनर्जी ने राष्ट्रपति की मदद भी मांगी और राज्यपाल पर अहंकारपूर्ण बर्ताव का आरोप लगाया। गतिरोध तब और गहरा गया जब राज्यपाल ने उक्त दोनों विधायकों को शपथ ग्रहण के लिए अपने आवास पर आमंत्रित किया। स्पीकर व तृणमूल ने इस बात पर जोर दिया कि बोस को विधानसभा में आना चाहिए। बनर्जी ने कहा, "हम उनका व संविधान का सम्मान करते हैं, परन्तु वे हमें आदर नहीं दे रहे हैं। उन्हें विधानसभा में आना चाहिए और शपथ ग्रहण करना चाहिए अथवा प्राधिकार अध्यक्ष को प्रदान किया जाना चाहिए। हम यहाँ संवैधानिक तौर पर बैठे हुए हैं- हम निर्वाचित हैं, आपकी तरह मनोनीत पद पर नहीं है।" शुभेन्दु अधिकारी ने कहा, इस बीच भाजपा ने भी शपथ ग्रहण समारोह की आलोचना की है उसने दावा किया कि उन्हें विशेष सत्र के बारे में नहीं कहा गया था। "मेरे पास इस संबंध में सूचना नहीं थी और कोई नोटिस भी प्राप्त नहीं हुआ था। प्रत्येक राज्य में शिष्टाचार के तौर पर विपक्ष के नेता को बुलाया जाता है परन्तु यहाँ हमसे कोई चर्चा नहीं की गई।" अधिकारी, जो पूर्व में मु.मंत्री ममता बनर्जी के खास सहयोगी रह चुके हैं वो विसं. चुनावों से ठीक कुछ सप्ताह पूर्व भाजपा में शामिल हुए थे वो अब विपक्ष के नेता हैं।

संवैधानिक कानून के जानकार विशेषज्ञों का मत है कि बंगाल के राज्यपाल संवैधानिक रूप से गलत कदम उठा रहे हैं क्योंकि वे अनावश्यक रूप से सिर्फ संकट उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे हैं। पहली बात यह है कि उन्होंने शपथ ग्रहण कराने में विलम्ब किया जबकि दोनों विधायक 5 जून को ही चुनावों में जीत चुके थे और उसके बाद यह है कि वे विधायकों को उनके निवास पर शपथ ग्रहण करने के लिए बुला रहे थे जो कि नियमानुसार नहीं है। यह बहुत ही अजीब बात है कि राज्यपाल नवनिर्वाचित विधायकों को शपथ दिलवाने के लिए उपाध्यक्ष की नियुक्ति करते हैं और अध्यक्ष को नज़रअंदाज करते हैं विशेषज्ञों ने यह भी कहा कि यह सब झमेला समस्या का संकट उत्पन्न करने के लिए किया जा रहा है।

तेलंगाना में रैवन्त रेड्डी ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उपस्थिति में कांग्रेस में शामिल होने के बाद, अब पार्टी के नेता व कार्यकर्ता धीरे ही सही परन्तु कांग्रेस में आ रहे हैं। बी.आर.एस. को जोर का झटका उस समय लगा जब शुक्रवार को विधान परिषद के छः एम.एल.सी. नेताओं ने एक प्रायवेट होटल में बैठक की और कांग्रेस में सम्मिलित होने का निर्णय किया। कांग्रेसी सूत्रों के हवाले से खबर है कि "मध्य रात्रि को लगभग 1 बजे ये नेतागण तेलंगाना कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष व मुख्यमंत्री ए.रेवन्त रेड्डी के आवास पर पहुंचे थे जो कुछ देर पूर्व ही नई दिल्ली से वापस आए थे, उनसे मिलकर इन नेताओं ने पार्टी में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की।"

रेवन्त रेड्डी ने उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया और सभी छः नेताओं को तेलंगाना की ए.आई.सी.सी. प्रभारी दीपा दास मुंशी, राज्य के राजस्व मंत्री पोंगुलेटी श्रीनिवास रेड्डी एवं पार्टी के अन्य नेताओं की उपस्थिति में पार्टी में शामिल कर लिया। बी.आर.एस. के छः विधायकों द्वारा दलबदल कर कांग्रेस में शामिल होने के बाद 40 सदस्यीय विधान परिषद में सत्ताधारी पार्टी की सदस्य संख्या बढ़कर अब 10 हो गई है जबकि इस विपरीत बी.आर.एस. के विधायकों की संख्या 25 से ङ्टकर 19 रह गई है। इसके अत्तिरिक्त, इसमें चार मनोनीत एम.एल.सी. हैं जिसमें से दो सदस्य ए.आई.एम.आई.एम. से हैं तथा भाजपा एवं पी.आर.टी.यू. दोनों से एक-एक सदस्य हैं और एक निर्दलीय है जबकि दो सीट रिक्त चल रही है।

राज्य विधानसभा में, कांग्रेस पहले ही बी.आर.एस के छः एम.एल.ए. को तोड़ चुकी है। पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री के.टी. रामाराव ने दलबदल करवाने को लेकर कांग्रेस की आलोचना की। सोशल मीडिया एक्स पर डाली गई एक पोस्ट में के.टी.आर. ने कहा "दलबदल करना कांग्रेस के घोषणा पत्र के खिलाफ जिसने इस मामले को लेकर संविधान की दसवीं अनुसूची में संशोधन करने का वादा किया था, जिसमें निर्वाचित सदस्यों के दलबदल कर एक पार्टी से दूसरी पार्टी में जाने पर स्वतः अयोग्य करने की मांग की गई है। के. केशव राव ने कांग्रेस में शामिल होने के बाद राज्यसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। रामराव ने कहा कि वे इस निर्णय का स्वागत करते हैं परन्तु बी.आर.आस. के उन विधायकों का क्या होगा जिन्होंने दलबदल किया और कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ा था तथा उन आधा दर्जन अन्य विधायकों का क्या होगा जो दलबदल करके कांग्रेस में सम्मिलित हुए हैं?" के.टी.आर. ने यह भी पूछा और राहुल गांधी पर निशाना साधा कि क्या उन्होंने इसी तरह से संविधान को सही ठहराया है।

के.टी.आर. ने अपने एक्स पोस्ट पर पूछा "यदि आप बी.आ.एस. के विधायकों से इस्तीफा नहीं ले सकते तो आप पर देश कैसे भरोसा करेगा कि कांग्रेस के घोषणा पत्र अनुसार दसवीं अनुसूची में संशोधन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं? यह कैसा न्याय पत्र हैं?" बी.आर.एस. ने पिछले साल हुए विधानसभा चुनावों में 39 सीटे जीती थी और सत्ता से बाहर हो गई। परन्तु उनकी संख्या छः विधायकों को कांग्रेस में दलबदल कर जाने के बाद कम हो गई और एक एम.एल.ए. की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई। 119 सदस्यों वाली विधानसभा में जिस समय विधानसभा का गठन हुआ था कांग्रेस के सदस्यों की संख्या 65 थी जो अब बढ़कर 71 हो गई है।

अमेरिका में...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गई। फिलाडेल्फिया, बोस्टन और कनेक्टिकट में गोलीबारी की घटनाओं में तीन लोग मारे गए। क्वींस सेक्शन में एक अपार्टमेंट में आठ साल के एक लड़के की चाकू मारकर हत्या कर दी गई। पिछले साल भी स्वतंत्रता दिवस के मौके पर छुट्टी के दिन गोलीबारी में एक दर्जन से ज्यादा लोग मारे गए थे।

गहलोत राज में राज्य भंडारण निगम द्वारा अरबों...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रकम मिलेगी। श्री शुभम लॉजिस्टिक ने बीकानेर में 29 गोदाम किराये पर लिए और उन्हें ए.एल.पी. के अधीन मानते हुए किराया राशि मात्र 15 प्रतिशत ही भंडारण निगम को दी, इससे विभाग को करीब 6 करोड़ रुपये की हानि हुई।

एम.ओ.यू. में एक शर्त यह भी थी कि, गोदामों में जमा स्टॉक का बीमा श्री शुभम लॉजिस्टिक कंपनी को ही करवाना था, लेकिन कंपनी ने इंश्योरेंस नहीं कराया, इस कारण करीब 3000 करोड़ रु. स्टॉक बिना किसी बीमा के रखा हुआ था। इस गंभीर लापरवाही के बावजूद कंपनी पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। कंपनी द्वारा गोदामों पर स्टाफ तैनात नहीं करने के कारण सरकारी कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई थी, इनके वेतन के 4 करोड़ रु. कंपनी से वसूले जाने चाहिए थे। मंत्री का आरोप है कि, वेयर हाऊस मैनेजमेंट सिस्टम के लिए डब्ल्यू.ई. एक्सेल सॉफ्टवेयर कंपनी चंडीगढ़ से 3.7 करोड़ रुपये का सॉफ्टवेयर एकल निविदा में खरीदा गया, अगर यह टैंडर खुली शर्तों में होता तो करीब 2.5 करोड़ रु. की बचत होती।

डॉ. किरोडीलाल का कहना है कि गहलोत राज में हुआ यह टैंडर शुरू से ही विवादों में रहा, क्योंकि इसकी शर्तें कुछ इस प्रकार तय की गई थी कि इन दोनों कंपनियों के अलावा कोई इस निविदा में भाग ही नहीं ले सके। हैरानी की बात यह थी कि इस टैंडर के खिलाफ राजस्थान हाईकोर्ट में भी एक याचिका दायर हुई थी, जिस पर अदालत ने टैंडर पर रोक लगा दी थी। इसके बाद तत्कालीन गहलोत सरकार व राज्य भंडारण निगम ने श्री शुभम लॉजिस्टिक कंपनी को टैंडर देने के लिए राजस्थान उच्च न्यायालय के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी और अदालत ने कुछ समय के लिए हाईकोर्ट के आदेश पर अस्थाई रोक हटायी थी, इसी बीच विभाग ने कंपनियों के साथ अनुबंध कर लिया। आज भी इस प्रकरण पर अंतिम फैसला आना शेष है।

राज्य सरकार को भेजी गई सी.ए.जी. रिपोर्ट :- सी.ए.जी. की रिपोर्ट में कहा गया है कि, एम.ओ.यू. की शर्तों के क्लॉज 15 में लिखा है कि अनुबंधित कंपनी को सरकार द्वारा निर्धारित गोदामों की 70 प्रतिशत की उपयोगिता सुनिश्चित करनी थी। इस रिपोर्ट में भी माना गया कि इस शर्त की पालना नहीं करने पर, जुलाई 2023 तक राज्य सरकार को इस कंपनी से 64.08 करोड़ रुपये की पेनल्टी वसूलनी जानी थी, लेकिन इस रकम में से मात्र 46.54 करोड़ रु. ही वसूले गए, जबकि 17.64 करोड़ रु. अभी भी बकाया है। खास बात यह है कि दोनों कंपनियों को भंडारण निगम को 24.34 करोड़ रु. की बैंक गारंटी देनी थी, लेकिन इन कंपनियों ने मात्र 22.20 करोड़ रु. ही जमा करवाए। जब लेखाकारों ने भंडारण निगम अधिकारियों से इस बारे में जवाब मांगा तो उन्होंने कहा कि, यह प्रकरण अदालत में आर्बिट्रेशन में है, इसका फैसला लंबित है। लेखाकारों ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि, भंडारण निगम का यह जवाब स्वीकार योग्य नहीं है। उन्होंने आगे यह भी टिप्पणी की है कि, जब वर्ष 2021-22 में ही पता चल गया था कि दोनों कंपनियां गोदामों की 70 फीसदी उपयोगिता सुनिश्चित करने में फेल साबित हो ही रही तो फिर वर्ष 2022 से 2024 तक इन कंपनियों के साथ राजस्व साझा का अनुबंध जारी क्यों रखा गया?

ऑडिट रिपोर्ट की शर्त 15 में यह भी तय था कि, भंडारण निगम और श्री शुभम लॉजिस्टिक के बीच राजस्व साझेदारी क्रमशः 71:29 फीसदी की रहेगी, परन्तु यह राजस्व 15:85 के क्रम में मिला। ऑडिट रिपोर्ट में कहा गया है कि भंडारण निगम ने, श्री शुभम लॉजिस्टिक को 'एग्री लॉजिस्टिकल पार्क' (ए.एल.पी.) में 75.96 करोड़ रु. का बिजनेस दिया, इस कारण कंपनी के राजस्व का प्रतिशत 29 प्रतिशत के बजाय 85 पहुंच गया। इससे पता चलता है कि भंडारण निगम ने इन कंपनियों को जुलाई 2020 से मार्च 2023 के बीच 26.22 करोड़ का अतिरिक्त बिजनेस दिया। उल्लेखनीय है कि ऑडिट रिपोर्ट के अनुसार कि गोदाम किराया, संधारण व स्टाफ वेतन का 32 प्रतिशत निगम ने दोनों कंपनियों को वसूलने दिया, जो कि करीब 49.74 करोड़ रु. की रकम थी।

जब निगम प्रशासन से लेखाकारों ने इस संदर्भ में पूछताछ की तो उन्होंने जवाब दिया कि, ए.एल.पी. में 85 प्रतिशत बिजनेस देने का फैसला बोर्ड ऑफ डायरैक्टर्स की मीटिंग में लिया गया था और ऐसा वर्ष 2010 से हो रहा है। लेखाकारों ने इस जवाब को भी संतुष्टिपूर्ण नहीं माना है।

ऑडिट रिपोर्ट में कहा गया कि, इन दोनों कंपनियों ने गोदामों में रखी गई कृषि उपज की एवज में 2430 करोड़ रु. का अपर्याप्त बीमा कराया, जिससे किसानों को फसल खराबे की स्थिति में भारी नुकसान झेलना पड़ सकता है। जब इस मुद्दे पर लेखाकारों ने भंडारण निगम से सवाल किया तो जवाब मिला कि प्रशासन ने दोनों कंपनियों को ई-मेल लिखा है और जवाब आने पर ऑडिटर्स को बता दिया जायेगा। लेखाकारों की टिप्पणी है कि निगम प्रशासन का यह जवाब, इंश्योरेंस लागू करवाने का फैलियर साफ जाहिर करता है।

ऑडिट रिपोर्ट में सामने आया है कि, दोनों कंपनियों ने अनुबंध के मुताबिक अतिरिक्त भंडारण क्षमता को बनवाने और उपयोग की एवज में 9.41 करोड़ रु. की अतिरिक्त परफॉरमेंस सिक्यूरिटी राशि जमा नहीं करायी। लेखाकारों को इस मुद्दे पर विभाग ने जवाब दिया है कि, हमने दोनों कंपनियों को कई बार बैंक गारंटी जमा करवाने के लिए पत्र लिखे हैं, लेकिन अभी तक भी यह लंबित है और प्रक्रिया जारी है। ऑडिटर्स ने इस जवाब को भी उपयुक्त नहीं पाया है। ऑडिट रिपोर्ट में टिप्पणी की गई कि एक वर्ष बीतने के बाद भी बैंक गारंटी वसूली नहीं होना भंडारण निगम का एक बड़ा फेलियर है। ऑडिट रिपोर्ट में लिखा गया है कि, गोदामों पर सरकारी कर्मचारियों की ड्यूटी लगाने की एवज में कंपनियों से 4.17 करोड़ रु. का वेतन राशि वसूलने में भी भंडारण निगम फेल साबित हुआ है। इसके अलावा भी अन्य कई मदों में करीब 6 करोड़ रु. की वसूली नहीं की गई है।

दोनों कंपनियों की बैंक गारंटी उपलब्ध नहीं कराने और कृषि उपज के स्टॉक का इंश्योरेंस नहीं करवाने और टैंडर की अन्य शर्तों की पालना नहीं करने पर उठे विवाद पर राज्य भंडारण निगम ने इन कंपनियों का भुगतान रोक दिया था। इसके बाद 3 अगस्त 2023 को इन कंपनियों ने भंडारण निगम की सहमति से राजस्थान हाईकोर्ट पहुंचकर आर्बिट्रेटर की नियुक्ति करवाई।

बताया जा रहा है कि आर्बिर्टेटर ने फैसला दिया है कि, भंडारण निगम इन कंपनियों को भुगतान कर दे, इसके बाद कंपनियां भी अपनी शेष बैंक गारंटी विभाग को जमा करवा दें। हैरानी की बात है कि ऑडिटर्स की कड़ी टिप्पणियों के बावजूद भी राज्य भंडारण निगम ने आर्बिट्रेशन" के माध्यम से इस मामले का निपटारा क्यों करना उचित समझा। इससे भी बड़ी ताज्जुब की बात है कि, सी.ए.जी. व अन्य वार्षिक ऑडिट रिपोर्ट्स में कंपनियों व भंडारण निगम की कार्यशैली पर कई सवाल खड़े किए जाने के बावजूद भी आर्बिट्रेटर द्वारा इस तरह का अवॉर्ड दिया गया, जिससे प्रतीत होता है कि कंपनियों को बहाल किया जा रहा है। वर्तमान में यह प्रकरण सुप्रीम कोर्ट के समक्ष भी लंबित है। इस प्रकरण में आर्बिट्रेटर द्वारा दिए गए अवॉर्ड को भी राज्य सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है।

काफी रोचक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कश्मीर भू-भाग में आती हैं। भाजपा किसी को भी मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में पेश नहीं करेगी, चुनावों में प्रचार व वोट के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के चेहरे का इस्तेमाल किया जाएगा।

संभावना है कि भाजपा, पूर्ववर्ती रियासत के डोगरा राजा महाराजा हरिसिंह की विरासत को मुद्दा बनाकर चुनाव लड़ना चाहेगी जिन्होंने भारत संघ में शामिल होने का फैसला किया था। भजपा पार्टी के प्रचार मुद्दों की रणनीति में पी.डी.पी. की महबूबा मुफ्ती को अनन्तनाग-राजौरी के चुनावों में हुए नुकसान को तथा अभी कुछ समय पूर्व समाप्त हुए लोकसभा चुनावों में हार के मुद्दे को भुनाना चाहती है।

भाजपा के करीबी सूत्रों का कहना है कि भाजपा चुनावों में जम्मू व कश्मीर बैंक घोटाला तथा प्रचार में रोशनी घोटाला कांड को भी उठाएगी।

अल्पसंख्यक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिये अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा आर्थिक रूप से पिछड़े विद्यार्थियों को 20 लाख रुपये की छात्रवृति देती है।

राष्ट्रदूत हिन्दु संयुक्त परिवार की ओर से सोमेश शर्मा द्वारा ज्वाईन्ट मीडिया, आजाद मार्ग, मैन रोड, आयड, उदयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 57928/93 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513 कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371 अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908